UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180597

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82 V31 7L Accession No. G.H.1934

Author वर्मा वृंदावनदास.

Title झांसी रानी.

This book should be returned on or before the date last marked below.

झांसी की रानी

(ऐतिहासिक नाटक)

वृन्दावनलाल वर्मा, एडवोकेट

(लेखक—झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, प्रेम की भेंट, मुसाहिबजू, गढ़-कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, अचल मेरा कोई, लगन, राखी की लाज, कुण्डली-चक्र आदि)

प्रथम संस्करण

'मयूर-प्रकाशन'
स्वाधीन प्रेस, झांसी।

मूल्य २)

प्रकाशक—
सत्यदेव वर्मा बी. ए., एल-एल. बी.
मयूर-प्रकाशन, झाँसी ।

प्रथमावृत्ति—१९४८

अनुवाद और चित्रपट निर्माण आदि के सर्वाधिकार लेखक के अधीन हैं ।

मूल्य—दो रुपया

मुद्रक—
द्वारिकाप्रसाद मिश्र 'द्वारिकेश'
स्वाधीन प्रेस, झांसी ।

भूमिका

मेरा 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' उपन्यास पाठक पाठिकाओं को रुचा। अनेक स्नेही पाठकों ने लक्ष्मीबाई पर नाटक लिखने का आग्रह किया। 'झांसी की रानी नाटक' उसी आग्रह का फल है।

वृन्दावनलाल वर्मा

मंगलाचरण

अमर रहे झांसी की रानी,
जिए सदा वह अजर कहानी;
चमत्कार से पूर्ण हमारा
अमर रहे भारत का पानी। ❀

❀ माल कौस राग में अच्छा रहेगा। ताल तिताला।

नाटक के पात्र

स्त्री—

रानी लक्ष्मीबाई
मुन्दर
सुन्दर
काशीबाई
राधारानी
मोतीबाई
जूँही
झलकारी
अन्य स्त्रियां

पुरुष—

राजा गङ्गाधरराव
बाजीराव द्वितीय (अन्तिम पेशवा)
नाना धोंडूपन्त
रावसाहब
तात्या टोपी
नाना भोपटकर
लाला भाऊ
दीवान जवाहरसिंह
दीवान रघुनाथसिंह

दीवान दूल्हाजू
रामचन्द्र देशमुख
खुदाबख्श
गुलमुहम्मद
नवाब अलीबहादुर
पीरअली
गुलाम गौसखां
बाबा गङ्गादास
जनरल रोज़
ब्रिगेडियर स्टुअर्ट
पूरन
सागरसिंह
राजा, नवाब, सैनिक, पारिषद्, पहरेवाले, किसान
मज़दूर इत्यादि ।

झांसी की रानी

नाटक

पहला अंक

पहला दृश्य

[गंगा के किनारे, बिठूर से बाहर, एक झाड़ी के बीच में रेतीला टीला। टीले के आगे, समानान्तर गड़े हुये दो बांसों के बीच में टगी हुई एक चौकोनी तख्ता है जिसमें वृत्तों के भीतर वृत्त हैं। बिलकुल भीतरी वृत्त काले रङ्ग का, जिसका व्यास एक इञ्च है। ये सब वृत्त बन्दूक से निशाना लगाने की बुलजरी* और विविध रङ्ग के हैं। नेपथ्य में घोड़ों की टापों की आवाज़ होती है और घोड़ों पर से उतरने का शब्द। दो लड़के नाना धोंडूपन्त १९ साल और राव १४ साल घुड़सवारों के वेश में आते हैं।

* Bull's eye.

साथ ही एक लड़की, मनूबाई आयु १३ वर्ष से कुछ कम, घुड़सवार के वेश में आती है। नाना और राव भाई भाई हैं। दोनों सुन्दर आकृति वाले। नाना बाजीराव द्वितीय का गोद लिया हुआ लड़का है जो अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कम्पनी से पेन्शन पाकर बिठूर में रहते हैं। मनूबाई का रङ्ग गोरा चेहरा कुछ लम्बा, परन्तु बहुत सुन्दर, आंखें बड़ी, शरीर छरेरा। यह मोरोपन्त ताम्बे की पुत्री है जो बाजीराव द्वितीय का एक कर्मचारी है। वे तीनों कन्धे के पीछे टोपीदार बन्दूक बांधे हैं। मनू और नाना बुलजरी के कुछ निकट पहुंचते हैं। राव थोड़ा पीछे रह जाता है। समय सन्ध्या के पूर्व।)

राव—(बुलजरी पर ध्यान जमाते हुए) मेरे लिए निशाना ज़रा दूर पड़ता है।

नाना—कुछ मेरे लिए भी।

मनू—तो बन्दूकों को बुलजरी पर ही क्यों नहीं जा टिकाते ?

नाना—अच्छा यहीं से सही। मनू, पहले तुम।

मनू—कदापि नहीं। पहले नाना साहब, बड़े भैया, फिर राव साहब, छोटे भैया। सबसे पीछे उनकी छोटी बहिन, मनू।

नाना—अच्छा तो लो।

(नाना बन्दूक़ चलाता है निशाना चूक जाता है)

चूक गया। फिर देखूंगा। राव तुम चलाओ। (राव बन्दूक़ चलाता है। चूकता है। नाना की भी अपेक्षा राव की गोली, बुलजरी से दूर लगती है।)

मनू—ह ! ह !! ह !!! क्या लक्ष्य बेधा है ! वाह राव भैया !!

नाना—अब की तुम्हारी बारी है। जाओ नहीं लगेगी, किसी भी चक्कर में नहीं लगेगी।

(मनू साधकर बन्दूक़ चलाती है। ठीक बीच वाले चक्र में जो काला है, गोली छेद कर देती है।)

नाना—रहा तो, पर मनू, यह तो अन्धे के हाथ बटेर लगी है !

मनू—हु............

नाना—अच्छा, अबकी बार लाल रङ्ग वाले चक्कर में, दाहिनी तरफ़, बीचों बीच निशाना लगाओ तब जानूं।

मनू—हु।.........देखती हूँ।

(मनू बन्दूक़ भर निशाना साधती है)

राव—लाल वाले चक्कर में नहीं, हरे वाले में लगाओ। केन्द्र से ठीक नीचे।

नाना—नहीं, दाई बगल।

मनू—(ओठों की दाहिनी कोर को जरा सा दबाकर) हरे रङ्ग वाले चक्कर में, केन्द्र से दाई ओर! और कुछ?............

राव—यही सही।

(मनू बन्दूक को सँभालती है)

नाना—न, न। हरे रङ्ग वाले में नहीं, लाल वाले में, बाईं ओर।

मनू—(बन्दूक़ को निशाने से हटाकर) अरे! यह क्या?

राव—मैं जो कहूं वह करो। न हरा, न लाल। नीले रङ्ग वाले चक्कर में। केन्द्र से दाईं ओर। हां।

मनू—(बन्दूक़ के कुन्दे को अपने पैर पर टिकाकर) पहले एक बार आपस में तै कर लो।

राव—अच्छा, अच्छा, नाना ने जो कहा वही पक्का रहा।

(मनू नाना के बतलाये हुये वृत्त में निशाना लगा देती है)

मनू—यह भी अटकल पच्चू था? क्यों?

नाना—ओहो, बड़ा नाहर मार दिया न!

मनू—नाहर दिखलाई तो पड़े। उसका मारना कौन सा कठिन काम है? पर यहां नाहर हैं कहां? नाहर तो दक्षिण और विन्ध्यखण्ड के जङ्गलों में सुनते हैं।

राव—तुम नाहर से डरोगी नहीं मनू ? वह हाथी को पछाड़ देता है।

मनू—असम्भव।

राव—तुमने देखा है ?

मनू—और तुमने नाहर को हाथी पछाड़ते देखा है ?

नाना—न तुमने देखा है और न राव ने। इतनी जल्दी क्रोध नहीं करना चाहिए। (नेपथ्य में घोड़ों की टापों और हिनहिनाहट का शब्द होता है) चलो अब घुड़दौड़ करें। सन्ध्या के पहले घर पहुंचना है।

मनू—कितनी देर लगती है घर पहुंचने में ? घोड़े को एड़ लगाई और घर पर।

राव—कोस भर है घर यहां से। समय थोड़ा ही रह गया है सूर्यास्त के लिए।

मनू—निशाने का थोड़ा सा अभ्यास और सही।

नाना—कल देखा जायगा। आज घुड़दौड़ होने दो। चलो।

मनू—अच्छा·········चलो। देखो किसका घोड़ा आगे जाता है।

(वे तीनों जाते हैं। नेपथ्यमें घोड़ों के दौड़नेका शब्द होता है। फिर किसी के गिरने और कराहने का।)

(राव आता है)

राव—मनू, ओ मनू। नाना का घोड़ा तो कहीं भाग गया है। पता नहीं लगता।

(नेपथ्य से मनू)—चले आओ। मैंने नाना को संभालकर अपने घोड़े पर बिठला लिया है।

राव—अच्छा किया। मैं आता हूं।

(जाता है)

दूसरा दृश्य

[स्थान—बिठूर में बाजीराव की कोठी के आगे का बगीचा। बाजीराव और मोरोपन्त आते हैं। बाजीराव उतरती अवस्था का और मोरोपन्त अधेड़ अवस्था का है। वे दोनों बगीचे में टहलते हैं।]

मोरोपन्त—अब, महाराज, चिन्ता की कोई बात नहीं। रक्त अवश्य बहुत बह गया है, परन्तु चोट संघातक नहीं है। वैद्य नाड़ी को बहुत अच्छी बतलाता है।

बाजीराव—घोड़ों को क्या इतना तेज़ भगाना चाहिये, मोरोपन्त? परन्तु यह लड़की इतनी हटीली है कि ठिकाना नहीं।

मोरोपन्त—वे तीनों अभी बच्चे ही तो हैं, महाराज।

बाजीराव—परन्तु मनू के हठ पकड़ने पर ही तो नाना और राव उत्पात पर आ जाते हैं। मनू ने हठ के साथ घोड़े को इतना गरम न किया होता तो नाना भी शान्त रहता और गिरने की नौबत न आती। चोट गहरी है और बड़ी है।

(मनू का प्रवेश)

मनू—छोटी है, दादा, छोटी।

बाजीराव—(प्यार के साथ कहने का प्रयास करते हुये) छोटी है वह चोट मनू! (कुछ रूखेपन के साथ) पर तू तो विकट है।

मोरोपन्त—महाराज,.........

मनू—ज़रा सी चोट पर इतनी घबराहट!

मोरोपन्त—तेरी जीभ को क्या करूँ!

मनू—हूं...ऊँ...आप...हम लोगों को जो पुराना इतिहास सुनाया करते हैं, उसमें युद्ध, क्या रेशम की डोरियों और कपास की पोनियोंसे हुआ करते थे?

बाजीराव—(भोगे से स्वर में) नहीं मनू। पर नाना तो अभी बालक है।

मनू—बालक है! मुझसे बड़ा, मलखंभ कुश्ती करने वाला!! अच्छा दादा, अर्जुन का बेटा अभिमन्यु क्या इससे बड़ा था?

मोरोपन्त— अब यह समय नहीं रहा, बेटी।

मनू—क्यों नहीं रहा काका? वही आकाश है, वही पृथ्वी है, वे ही सूर्य, चन्द्रमा और तारे। सब वे ही हैं। अब क्या हो गया है?

बाजीराव—(प्राचीन गौरव की स्मृति में अपनी वर्तमान चिन्ता को दबा कर) अब इस देश का भाग्य लौट गया है।

मनू—कैसे? क्यों? ग्वालियर, इन्दौर, बरोदा, नागपूर, सतारा, भरतपूर और इतने बड़े राजस्थान के होते हुए भी अंग्रेज़ों ने आप सबको दाब लिया!

मोरोपन्त—जा यहां से। आ गई बकबक करने को।

बाजीराव—(ढलकर) अंग्रेज चालाक हैं। हथियार उनके पास अच्छे हैं। वे शूर वीर भी हैं। भाग्य उनके साथ है और हम लोगों में फूट है।

मनू—दादा, क्या भाग्य में शूर वीर होना भी लिखा रहता है? यदि ऐसा है तो अनेक सिंह स्यार होते होंगे और बहुत से स्यार सिंह।

मोरोपन्त—अब नाना का जी कैसा है?

मनू—अच्छा है। दादा, जब स्यार पागल हो जाता है, तब क्या वह भाग्य से ही पागल होता है?

बाजीराव—(हँसकर) यह लड़की किसी दिन पागल न हो जाय।

मनू—हूं...ऊं (बाजीराव से एक ओर लिपट कर) दादा, आप कहते हैं जीजाबाई ऐसी थीं, ताराबाई वैसी थीं और सीता बहुत बड़ी थीं। तो क्या वे सब पागल थीं?

मोरोपन्त—(क्षुब्ध होकर) कितना चबड़ चबड़ करती है यह ! एक बार इसकी जीभ खुली नहीं कि फिर रुकना तो जानती ही नहीं !!

(तात्याटोपी का प्रवेश। तात्या हृष्ट पुष्ट युवा है। फ्रांसीसी सैनिक की जैसी टोपी लगाने का उसे अभ्यास है, उसकी शेष वेश भूषा हिन्दुस्थानी है—अंगरखे के नीचे पैजामा पहिने है।)

बाजीराव—क्या है तात्या ? नाना ठीक है न ?

तात्या—श्रीमन्त सरकार, नाना साहब बिलकुल स्वस्थ हैं। झांसी से दीक्षित नाम के एक ज्योतिषी आए हैं। सेवा में आना चाहते हैं। क्या आज्ञा है ?

मनू—झांसी में तो अपना ही राज्य है न दादा ? कितना बड़ा नगर होगा वह ? उसमें कितनी तोपें होंगी ? कितने घोड़े होंगे ? कितने सिपाही ?

मोरोपन्त—उँह ! फिर वही ?

बाजीराव—उनको ठहराओ तात्या। सत्कार करो, मैं मिलूंगा। किस प्रयोजन से आए हैं ये दीक्षित ज्योतिषी ?

तात्या—ठीक ठीक तो नहीं मालूम श्रीमन्त, परन्तु सुना है कि वे विवाह सम्बन्धों के लिए प्रायः यात्रा किया करते हैं।

बाजीराव—नाना तो अभी छोटा है।

मोरोपन्त—मुझको एक जन्मपत्री की आवश्यकता है, श्रीमन्त।

बाजीराव—हाँ—आँ।.. ...

तात्या—श्रीमन्त वे झांसी के महाराजा गङ्गाधरराव के लिए उपयुक्त वधू की खोज में हैं।

मोरोपन्त—झांसी के महाराजा ! महाराजा गङ्गाधरराव !! हूँ।...

बाजीराव—उनका सत्कार करो। मैं उनसे मिलूंगा।

तात्या—जो आज्ञा।

(तात्या जाता है)

मनू—ये झांसी के राजा भी अंग्रेज़ों के नीचे होंगे ?

बाजीराव—हां हैं। परन्तु राज्य उनका बड़ा है। और स्वभाव तीखा।

मनू—फिर वे अंग्रेज़ों से लड़ क्यों नहीं जाते ?

मोरोपन्त—लड़ क्यों नहीं जाते ! यह लड़ाई की ही उपासी बनी रहती है !! पढ़ना न लिखना, सिवाय झगड़े टंटे के इसके माथे के भीतर और कुछ है ही नहीं।

मनू—हूँ...क्यों नहीं है। मराठी मैंने पढ़ी है, हिन्दी मैं जानती हूँ। युद्धते, युद्धेते, युद्धयन्ते संस्कृत का भी। (**हँसती है और वे दोनों भी हँस पड़ते हैं**) रामायण पढ़ लेती हूँ। गीता भी—

'संभवामि युगे युगे'—ह ! ह !! ह !!! ह !!!! धर्म संस्थापन कार्यार्था—अरे आगे भूल गई ! फिर पढूंगी। रटूंगी, घोटूंगी।—

मोरोपन्त—बके जा ! बके जा !! भगवन् इसको नमालूम किस घड़ी में संवार कर तुमने रचा था !!! (**मुस्कराता है**)

मनू—तो बतलाइए ये झांसी के राजा कैसे हैं ? उनमें स्वराज्य की कोई भावना है या नहीं ? वे समर्थ रामदास स्वामी के मानने वाले हैं या नहीं ?

मोरोपन्त—(**हँसते हुये**) ओफ़ ! श्रीमन्त, मैं तो थक गया !! ये सिर खा गई !!!

बाजीराव—(**मुस्कराकर**) अरी काली, यह तो बतला तू यहां आई काहे के लिए है ?

मनू—हूँ...ऊं। मैं काली हूँ ? देखिए मैं काली हूँ ?

बाजीराव—अरी नहीं है, नहीं है। अब तो बतला तू आई किस प्रयोजन से यहां ?

मनू—आपने पूछा था, नाना साहब को कैसे उठा लाई थी ? मैं कहती हूँ—कैसे भी नहीं। वे घोड़े पर बैठ गए। मैं पीछे से सवार हो गई। एक हाथ से लगाम पकड़ ली, दूसरे से नाना को थाम लिया। बस।

बाजीराव—सुन लिया था। फिर से सुन लिया। नहीं भूलूंगा। अब जा नाना के पास। वहीं बैठ।

मनू—जाती हूं। पर दादा मुझको आगे काली मत कहना। ऐं…

(जाती है)

मोरोपन्त—श्रीमन्त, इसकी समझदारी इसकी आयु के आगे निकल गई है। वर की खोज के लिए मैं बहुत चिन्तित हूं।

बाजीराव—अभी तो अल्हड़ है, परन्तु मैं भी चाहता हूं कि इसका विवाह सम्बन्ध हो जाना चाहिये। गङ्गाधरराव विधुर हैं; उनकी पहली पत्नी को मरे बहुत दिन हो गये, यदि जन्मपत्री मिल जाय तो कैसा?

मोरोपन्त—सरकार, मैं राजा की बराबरी कैसे कर सकता हूं? फिर उनका स्वभाव बड़ा टेढ़ा सुना गया है।

बाजीराव—हुं। जाति में कोई बड़ा छोटा नहीं होता। गङ्गाधरराव नेवालकर हैं और तुम ताम्बे। कोई किसी से कम नहीं। रह गई टेढे स्वभाव की बात सो बावले हाथी तक एक छोटे से अंकुश के वश में कर लिए जाते हैं। फिर हमारी मनू तो अंकुश से कहीं बढ़कर है—तेज में परशुराम का अवतार। पढ़ी लिखी। मराठी, हिन्दी, संस्कृत तक जानने वाली। बड़ी होने पर वह घर गृहस्थी तो क्या बड़े राज्य तक को संभालने की योग्यता रखती है। और, फिर वयस्क होने पर ऐसी ही अल्हड़ थोड़ी ही बनी रहेगी। झांसी के इस सम्बन्ध से अपने सम्पर्क का भी विस्तार बढ़ जायगा।

मोरोपन्त—महाराज, मैं—

बाजीराव—तुम झांसी में सरदार पद पर रहोगे, फिर भी पेशवा के ही कहलाओगे। (**सोचकर**) पर अभी यह तर्क वितर्क असमय है। सब कुछ जन्म पत्री के मिलने पर निर्भर है।

मोरोपन्त—जैसा कुछ मनू का भाग्य हो श्रीमन्त।

बाजीराव—हां—उसका भाग्य। अवश्य ही है भाग्य की बात। मुझको तो उसका भाग्य बहुत बड़ा दिखता है।

मोरोपन्त—श्रीमान की कृपा पर सब कुछ आश्रित है। मेरी गांठ में तो कुछ है नहीं, चाहे सम्बन्ध यहां हो चाहे कहीं दूसरी ठौर।

बाजीराव—चिन्ता न करो, मोरोपन्त। सब ठीक हो जायगा। अब चलो। मैं नाना को देखकर दीक्षित से जल्दी मिलना चाहता हूं।

मोरोपन्त—जो आज्ञा।

(दोनों जाते हैं)

तीसरा दृश्य

[स्थान—झांसी। क़िले के भीतर वाले महल का दीवान आम। राजा गद्दी पर है। चवर दुलाने वाला चँवर दुला रहा है। इत्रदान, पानदान, हुक्का इधर उधर। राजा गङ्गाधरराव अधेड़ अवस्था के हैं। चेहरा गोल, फूला हुआ सा, आंखे बड़ी और लाल मूंछें इटी और चढ़ी हुई। गले में मोतियों के कण्ठे, हाथ में सोने के रत्न जटित चूड़े, कानों में मोती जड़े हुए बाले। दाहिनी भुजा पर जड़ाऊ भुजबन्द। उंगलियों में अंगूठियाँ। तनीदार अंगरखी और पैजामा पहिने हैं। कमर में फेंटा, जिसके बांधने से तोंद कुछ और भी बड़ी दिखलाई पड़ती है। नीचे मन्त्री बैठा है। समय दिन।]

मन्त्री—श्रीमन्त सरकार, जन्मपत्री तो मिल ही गई है। आज्ञा हो जाय। बिठूर से पन्त प्रधान का भेजा हुआ तात्या उत्तर के लिए ठहरा हुआ है।

राजा—वह जो टोपी या टोपे कहलाता है? उसने अपनी क्या वेश भूषा बना रक्खी है! परन्तु देह उसकी पुष्ट है।

मन्त्री—महाराज।

राजा—जनेऊ पहिनने वाले उत्पातियों का मुक़द्दमा है आज?

मन्त्री—श्रीमन्त सरकार।

राजा—(**गम्भीर और क्रुद्ध होकर**) जिन लोगों की जाति में पहले कभी जनेऊ नहीं पहिने गए उन्होंने जनेऊ का पहिनना कैसे आरम्भ कर दिया ? मैं कठोर दण्ड दूंगा।

मन्त्री—मुक़द्दमे के सुनने के लिए झांसी के बहुत से पञ्च मुखिया और सेठ आ रहे हैं।

राजा—आना ही चाहिये। धर्म की रक्षा में सभी की रुचि होनी चाहिये।

मन्त्री—महाराज, बिठूर का तात्या टोपा भी आवेगा। उसको श्रीमंत सरकार की आज्ञा आज ही मिल जायगी न ?

राजा—तुम लोगों का और झांसी की जनता का हठ है कि मैं विवाह कर लूं। स्वीकृति दे दूँगा—देता हूं। तुम उसको सूचना दे देना वैसे मेरी कोई विशेष इच्छा विवाह करने की न थी।

मन्त्री—महाराज, झांसी को अपने लिए युवराज चाहिये।

राजा—यह सब भगवान के हाथ में है (**उमङ्ग के साथ**) मैंने स्वीकृति दे दी है। मोतीबाई के गायन के बाद कचहरी करूंगा।

मन्त्री—(**नीचा सिर करके**) जैसी महाराज की आज्ञा हो।

राजा—(**कुछ सोचकर**) कुछ समय से नाटक-शाला का क्रम मन्द है। कभी कोई पात्र बीमार, कभी मैं अस्वस्थ - कभी कुछ, कभी कुछ। आज मोतीबाई का नृत्यगान नहीं होगा। अच्छा, कचहरी के उपरान्त। उसके पास खबर भेज दो।

मन्त्री—(**सिर ऊँचा करके**) जो आज्ञा।

राजा—और, देखो, वह परदे में आयगी, परदे का अच्छा प्रबन्ध कर देना। जूही को भी बुलवा लेना। वह भी परदे में आयगी।

मन्त्री—जो आज्ञा श्रीमन्त सरकार।

राजा—मुकद्दमे वाले आ गये हों तो उनको बुलवा लो।

(मन्त्री जाता है और लौट आता है)

मन्त्री—सरकार बिठूर वाले टोपी सरदार भी आए हैं। मुकद्दमें की सुनवाई के समय उनको यहां बैठने दिया जाय ?

राजा—हां, हां, बिठलाओ उनको। विवाह सम्बंध के लिए जो मैंने स्वीकृति दे दी है वह भी उनको सुना देना। वे तात्या टोपे कहलाते हैं। फिरंगी टोप लगाए रहते हैं न, इसलिए।

मन्त्री—(प्रसन्न होकर) जो आज्ञा। हमारी झांसी आनन्द के मारे छलक उठेगी।

(मन्त्री जाता है और लौट आता है। जब वह बैठ जाता है तब सिपाहियों से घिरा हुआ एक बन्दी आता है। कुछ नगर-निवासियों के बीच में तात्याटोपी भी। तात्याटोपी को राजा के निकट एक अच्छा स्थान बैठने को दिया जाता है। नगर निवासी भी यथास्थान बिठला दिए जाते हैं।)

राजा—(बन्दी से) क्यों जी, तुम्हारी जाति में जनेऊ पहिनने की रीति तो है नहीं, फिर तुमने क्यों पहिना ? और, क्यों दूसरों को पहिनने के लिए बहकाया ?

बन्दी—(नीचा सिर किए हुए) सरकार, अपना आचरण सुधारने के लिए यदि कोई कुछ अनोय करे तो शास्त्रों में उसकी मनाई तो है नहीं।

राजा—अच्छा ! तुम लोग अब शास्त्र भी पढ़ने लगे हो !! सुनता हूँ तुम लोग क्षत्रिय बनने जा रहे हो !!!

बन्दी—(जरा सिर ऊँचा करके) क्षत्रिय तो हम लोग हैं ही। हथियार चलाना छोड़कर यदि हम लोग हथियार बनाने का काम करने लगे हैं तो, सरकार, हमारे क्षत्रित्व में कमी नहीं आ सकती।

राजा—तो अब तुम लोगों के सिवाय असली क्षत्रिय और कोई हैं ही नहीं। राम और कृष्ण के वंश के तुम्हीं लोग हो न !!!

बन्दी—श्रीमन्त सरकार, मैं क्षमा किया जाऊं यदि राम और कृष्ण के वन्श के क्षत्रिय हमारे देश में होते तो यहां परदेशियों का पैर कभी न रुप पाता।

राजा—(क्षुब्ध स्वर में) गुस्ताखी करता है! उतार जनेऊ! तोड़ उसको !!!

बन्दी—(सिर ऊँचा करके) मेरे जीते जी तो, सरकार, जनेऊ मेरे अंग से अलग हो नहीं सकता।

राजा—(अधिकक्षुब्ध स्वर में) लोहे का तार गरम करके लाओ रे कोई, लाल करके और जनेऊ बनाकर पहिनाओ इसको। तुरन्त लाओ तुरन्त पहिनाओ !!!

(कुछ पहरेदार दौड़कर जाते हैं। राजा क्रोध के मारे कांपने लगते हैं। बन्दी निश्चल खड़ा है। तात्या अपनी चौकी पर थोड़ा सा हिलता है, मानो कुछ कहना चाहता हो। राजा देखते हैं। वे निश्चय नहीं कर पाते कि उससे क्या कहें। दरबार में सन्नाटा छा जाता है। एक सिपाही लाल गरम लोहे के तार को, जिसका आकार जनेऊ का है, चिमटे से पकड़े हुए लाता है और बन्दी के पास खड़ा हो जाता है। बन्दी उसको देखकर, ऊपर की ओर आंखें उठाता है और तन जाता है। राजा तात्या की ओर फिर देखते है। वह कुछ कहने के लिए उतावला जान पड़ता है।)

राजा—सरदार तात्या टोपी, ऐसी अवस्था में पन्त-प्रधान श्रीमन्त क्या यही न्याय न करते जो मैं कर रहा हूँ।

तात्या—(खड़े होकर) नहीं सरकार, वे ऐसा न करते। छत्रपति शिवाजी के प्रसिद्ध अमात्य बालाजी आवजी के उदाहरण को ही श्रीमन्त पेशवा मानते। बालाजी आवजी के पक्ष में महापण्डित विश्वेश्वर भट्ट की दी हुई व्यवस्था देश भर में मान्य है। उस का उपयोग इस बन्दी के मामले में होना चाहिये। पन्त प्रधान भी ऐसा ही करते।

राजा—(शिथिल होकर) अच्छा।......मै भी वही करूंगा। बन्दी! जाओ, तुमको छोड़ दिया। मौज के साथ जनेऊ पहिनो। परन्तु हेकड़ी मत करना।

बन्दी—(प्रणाम करके) जय हो।

(जाता है

(राजा तात्या की ओर देखता है। वह खड़ा हो जाता है।)

राजा—झासी में पड़े पड़े उकता तो नहीं उठे हो, सरदार साहब?

तात्या—श्रीमन्त की कृपा प्राप्त है फिर उकताहट तो कभी किसी को हो ही नहीं सकती। हम सब बहुत कृतज्ञ हैं।

राजा—ब्याह यहीं होकर होगा, सरदार साहब। मोरोपन्त तांबे झासी के जागीरदार बनाए जायेंगे।

तात्या—बहुत, बहुत धन्यवाद श्रीमन्त।

राजा—(मन्त्री से) मुहूर्त शोध कर इनको बतलादो और इनकी बिदाई कर दो।

(मन्त्री तात्या का पान और इत्र से सत्कार करता है। उसको लेकर जाता है। अन्य लोग भी जाते हैं। केवल चंवर वाला रह जाता है। मोतीबाई और जूही आती हैं। दोनों बहुत सुन्दर हैं और पूरी सजधज में हैं। मोतीबाई की आयु लगभग २२, २३ वर्ष की है और जूही की १४, १५ की। दोनों कुमारी हैं और राजा गङ्गाधरराव की नाटकशाला में अभिनय किया करती हैं। वे प्रणाम करके चुप खड़ी रह जाती हैं।)

राजा—तुम लोगों को स्वस्थ देख कर मुझको बड़ी प्रसन्नता होती है। नाटकशाला का काम आजकल बन्द सा ही है। सोचा यहीं बुलाकर कुछ आनन्द मनाऊं।

मोतीबाई—सेवा में हाज़िरी बजाने के लिए सदा तैयार हैं सरकार।

जूही—आज्ञा पालन के लिए......

राजा—अब तो मञ्च पर जूही भी अच्छा काम करने लगी है। यह बिलकुल नहीं हिचकती।

(दोनों मुस्कराती हैं।)

राजा—आरम्भ करो।

दोनों—जो आज्ञा।

(वे दोनों गाती हैं और नाचती हैं)

गीत

मलय समीर मत्तपरिमल जब मचल मचल बिखराती है,
कोयल कू कू कू कू कर के स्वर में ताल मिलाती है;
कू कू कू ऊ कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ
स्वर में ताल मिलाती है।

पश्चिम की लाली के पहले श्यामा चहक लगाती है,
नई नवेली तानें ले ले अपने निकट बुलाती है;
कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ—
स्वर में ताल मिलाती है।

राजा—तुम्हारा काम मुझको बहुत रुचा। मोतीबाई, तुम्हारी झांसी को रानी मिलने वाली है।

दोनों—हम लोगों का सौभाग्य सरकार। सुना है।

मोतीबाई—झांसी फूली न समाएगी।

जूही—हम लोगों की नाटकशाला—

राजा—(हँसकर) वह और अधिक रंगीन हो जायगी। और, तुम लोगों को और भी अधिक पुरस्कार मिलेंगे।

जूही—मैं यही निवेदन करना चाहती थी, सरकार।

मोतीबाई—हम लोगों के लिए और क्या आज्ञा है, श्रीमन्त ?

राजा—तुम लोग जाओ। दरबार का कुछ काम करने को और रह गया है।

(वे दोनों प्रणाम करके जाती हैं। मन्त्री आता है।)

मन्त्री—महल के उस टहलुए का मामला और रह गया है। वैसे कोई बड़ा अपराध तो नहीं है। पहरे पर असावधान भर हो गया था, सरकार वह।

राजा—(उत्तेजित होकर) इसको छोटा अपराध समझते हो! यदि उसकी असावधानी के कारण किसी ने मेरे भोजन में विष मिला दिया होता तो? कोई चोर घुस आता? कुछ और हो जाता? तो क्या होता? टहलुए को बिच्छुओं से कटवाओ। (क्रुद्ध स्वर में) अभी, इसी समय बिच्छुओं से कटवाओ।

मन्त्री—जो आज्ञा। (जाता है)

चौथा दृश्य

[स्थान—झांसी की एक चौड़ी सड़क। दक्षिण में ऊंचाई पर क़िला है और बाक़ी दिशाओं में झांसी का शहर। नेपथ्य में शहनाई बज रही है और चहल पहल हो रही है। कुछ नगर निवासियों का प्रवेश। सड़क किनारे एक बड़ा मकान है। उसमें खिड़कियां और गोख हैं। खिड़कियां बन्द हैं। समय प्रातःकाल के उपरान्त।]

एक नगर निवासी—(नेपथ्य की चहल पहल और शहनाई पर कान देकर) वह देखो महाराज की सवारी आ रही है।

दूसरा—घोड़े पर बैठकर आ रहे हैं।

तीसरा—गणेश मन्दिर के पास ताम-झाम में बैठकर जायँगे।

पहला—चलो वहां जहां वे घोड़े पर बैठे दिखलाई पड़ेंगे।

(वे तीनों और कुछ नगर निवासी दौड़ते हुए चले जाते हैं। स्त्री पुरुषों का एक दूसरा समूह आता है।)

एक—वह देखो, महाराज तामझाम में आ रहे हैं।

(आगे आगे बजते हुए बाजे, पीछे पीछे तामझाम में बैठे हुए राजा गङ्गाधरराव का दूल्हा वेश में प्रवेश। नगर निवासी हुल्लड़ सा मचाते हुए भीड़ करते हैं। सिपाही उनको, मार्ग के लिए, इधर उधर हटाते हैं। मकान के ऊपर की खिड़कियां खुलती हैं। एक खिड़की पर दुलहिन वेश में, मनू जरा पीछे हट कर खड़ी है। अन्य खिड़कियों पर कुछ स्त्रियां अधिक पीछे हटी हुई खड़ी हैं जो अस्पष्ट दिखलाई पड़ती हैं। राजा की सवारी दूसरी दिशा में चली जाती है। नगर निवासियों की भीड़ शोर-गुल करती हुई पीछे पीछे जाती है। सड़क पर लगभग सुनसान हो जाता है। मनू खिड़कीके पास आतीहै। मनू के निकट सुन्दर, उसके पीछे मुन्दर और काशीबाई आती है। उन सबके पीछे लाला भाऊ बख्शी की पत्नी राधारानी आधा घूंघट डाले ठम ठमा कर खड़ी है। सुदन्र मुन्दर और काशीबाई चौदह चौदह पन्द्रह २ वर्ष की सुन्दर लड़कियां हैं। राधारानी बख्शिन लगभग २२,२३ वर्ष की है। वह भी सुन्दर है। वे सब फूलों से अपने केश सजाए हुए हैं)

मनू—(सुन्दरबाई से) तुम कौन हो ?

सुन्दर—आपकी दासी। सुन्दर मेरा नाम है।

मनू—मेरी दासी ! कैसे ?

सुन्दर—(मुस्कराकर) आप हम लोगों की महारानी हैं। मैं भी आपकी सेवा के लिए रक्खी गई हूँ।

मनू—मेरी दासी कोई न हो सकेगी। मेरी सहेली होकर रहोगी।

(मनू उसका हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचती है। सुन्दर झिझकती है।)

मनू—(सुन्दर का हाथ ढीला करके) तुम क्या सचमुच सदा मेरे पास रहोगी ?

सुन्दर—सरकार, सदा। हम सोलह दासियां आपकी सेवा के लिए नियुक्त की गई हैं।

मनू—फिर दासी कहा! मैं इस शब्द को नहीं सुनना चाहती। तुम घोड़े पर चढ़ना जानती हो?

सुन्दर—(थोड़े से संकोच के साथ) थोड़ा सा सरकार।

मनू—तुम हथियार चलाना जानती हो?

सुन्दर—(संकोच के साथ) कभी सीखा नहीं।

(मनू सुन्दर और काशीबाई की ओर देखती है। वे दोनों उसके निकट आती हैं)

सुन्दर—सरकार, इसका नाम मुन्दर है, और इसका काशीबाई।

मनू—तुम लोग कौन हो?

मुन्दर—हम लोग कुणभी हैं, सरकार।

मनू - घोड़े की सवारी, हथियार चलाना जानती हो?

काशीबाई— (हँसकर) नहीं सरकार, हम लोगों ने थोड़ा सा बन्दूक़ चलाना सीखा है।

मनू—मै सिखलाऊंगी। मलखंब जानती हो?

(वे तीनों हँसकर सिर झुका लेती हैं और नाहीं का सिर हिलाती हैं)

मनू—(सूक्ष्म मुस्कराहट के साथ) गाना बजाना जानती हो? नाचना भी?

मुन्दर—हां सरकार। जब आज्ञा होगी तभी कर दिखलावेंगी।

मनू—अपनी रक्षा करने का उपाय नहीं सीखा! कुश्ती लड़ना जानती हो?

तीनों— (एक साथ) कुश्ती!

मनू—क्यों, कुश्ती लड़ने से क्या नाचने गाने में कोई बाधा आ जाती है? यदि तुम लोग इसी समय अखाड़े में उतर पड़ो तो क्या हो?

सुन्दर—तो इन फूलों से सारा अखाड़ा भर जायगा।

मनू—और तुम्हारे बालों में अखाड़े की मिट्टी चिपक जायगी!

(वे सब हंसती हैं)

मनू—परन्तु वह मिट्टी तुम्हारे केशों पर इन फूलों से कहीं अधिक सुहावनी लगेगी।

सुन्दर—सरकार बालों की शोभा मिट्टी से!

मनू—(सुन्दर का कन्धा हिलाकर) ये फूल कहां से आए? कहां जायंगे?

(राधारानी बख्शिन जरा सा आगे बढ़कर अपने केशों के कुछ फूल हटाती है)

मनू—तुम कौन हो? यहां कोई पुरुष नहीं, फिर भी इतना बड़ा घूंघट!

राधारानी—(संकोच के साथ घूंघट उठाकर) सरकार मैं कायस्थ हूं। सरकार की सेना में बख्शीपद मिला हुआ है।

मनू—तब तुमको तो तोप बन्दूक चलाना, घोड़े पर चढ़ना, यह सब, आना चाहिए। (बख्शिन मुंह फेर लेती है)

राधारानी—सरकार, पुरुषों का काम स्त्रियां करें।

मनू—तुम अपने केशों के फूल और अधिक मत नोचो।

(राधारानी फूलों का हटाना बन्द कर देती है)

मनू—मुझको तुम्हारे फूल अच्छे लगते हैं। परन्तु वे हरी भरी देह पर ही सजते हैं। स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा एक बात में बड़ी हैं। वे फूलों से अधिक कोमल और वज्र से अधिक कठोर हैं। हर एक स्त्री में ये दोनों गुण होने चाहिए। पुरुष में नहीं हो सकते। स्त्रियां पुरुषों का सब काम कर सकती हैं और कुछ उनसे बढ़कर भी।

राधारानी—सरकार तो ऐसी बातें करती हैं जैसी हमारी बड़ी बूढ़ी भी नहीं कर सकतीं।

मनू—(जरा सा सहमकर) अभी तो पुस्तकों में पढ़ा ही है। (मुस्कराती है फिर तुरन्त गम्भीर होकर) परन्तु इसको करके भी दिखलाऊंगी। और, तुम सब भी कर सकोगी।

सुन्दर—सरकार की बात मैं अब समझी।

मुन्दर—अवश्य हो सकेगा।
काशीबाई—सरकार की कृपा से.........
राधारानी—हो जायगा।
} तीनों एक साथ

(नेपथ्य में सीमंती के लिए महराज की सवारी गणेश-मन्दिर में पहुंच गई है।)

(वे सब जाती हैं खिड़कियां बन्द होजाती हैं)।

पांचवाँ दृश्य

[स्थान—झाँसी के एक बड़े भवन का खुला हुआ स्थान। वितानों और वन्दनवारों की सजावट है। मनू और गंगाधरराव का विवाह हो रहा है। पुरोहित इत्यादि अपना अपना काम कर रहे हैं। एक ओर तात्या टोपे और नाना हैं। दूसरी ओर तार-वाद्य बज रहे हैं और बीच बीच में मीठे धीरे स्वरों में शहनाई बज रही है। पुरोहित बहुत बूढ़ा है। लक्ष्मीबाई की साड़ी से गंगाधरराव की चादर की गांठ बांधने के समय उसका हाथ काँपता है। वह गांठ बांधने का प्रयन्त करता है परन्तु सफल नहीं होता। समय-दिन]

मनू—(पुरोहित के विफल प्रयन्त के कारण अकुलाकर) उंह—ऐसी बांधिए कि कभी छूटे नहीं।

(पुरोहित हंस पड़ता है। अन्य लोग भी। मनू नीचा सिर करके मुस्काने लगती है। गङ्गाधरराव सङ्कोचके मारे सिकुड़से जाते हैं।)

नाना—(तात्या से) अब मिली इस उद्दण्ड राजा को प्रचण्ड रानी।

तात्या—शायद झांसी को असली राजा तो अब मिला, नानासाहब।

नाना—एक ही बात है। जी चाहता है मनू से कह दूं कि यह ससुराल है, सब कर चलना।

तात्या—अधिक उचित तो यह होगा, नाना साहब, कि राजा को संभल कर चलने के लिए कहा जाय। परन्तु क्या ऐसी बात कोई किसी की मानने के लिए तैयार होगा?

नाना—झांसी हमारा अधिकृत राज्य था।

तात्या—अब तो, नाना साहब, वह अंग्रेज़ों के नीचे है।

नाना—(भौंह तान कर और दांत पीस कर) हां।········जाने दो। नहीं कहूँगा। दो एक दिन में बिठूर पहुंचने पर काका से कहूँगा। वे चिठ्ठी में आग्रह के साथ लिख भेजेंगे।

तात्या—ऐसी बात, शायद, कोई किसी को लिख भी नहीं सकता।

नाना—अरे! न लिख सकता है, न कह सकता है!!

(स्त्रियों में शोर होता है।)

कुछ स्त्री कण्ठ—नाम लक्ष्मीबाई रक्खा गया! महारानी लक्ष्मीबाई!!

सब स्त्रियां—महारानी लक्ष्मीबाई की जय! (मनू सिर ऊँचा उठाती है और मुस्कराकर फिर नीचा कर लेती है।)

सब पुरुष और स्त्रियाँ—महाराजा गङ्गाधरराव की जय! महारानी लक्ष्मीबाई की जय!!

छठवां दृश्य

[स्थान—झाँसी के बाहर एक बगीचा। नवाब अलीबहादुर और पोलिटिकल अफ़सर आते हैं। अलीबहादुर की आयु लगभग चालीस साल के ऊपर है। पोलिटिकल एजेंट अधेड़ अवस्था का एक योग्य, काइयां अंग्रेज है। समय सूर्योदय के उपरान्त।]

पो० अफ़सर—नवाब साहब, आपके दावे में कुछ सबलता है। कह नहीं सकता लाट साहब आपके दावे को मञ्जूर करेंगे या नहीं।

अलीबहादुर—हुज़ूर इस बात को ज़ोर देकर लाट साहब को समझावें कि मैं राजा रघुनाथराव की औलाद हूँ। उन्होंने मुझको पचासी गांव जागीर में लगाए थे, महल रहने के लिए दिया था, हाथी चढ़ने के लिए, नौकर चाकर,—

पो० अफसर—नवाब साहब, इन बातों को दुहराने तिहराने की ज़रूरत नहीं है। मुझको याद है। आपको एक बात ध्यान में रखनी चाहिये। कम्पनी सरकार ने राज्य का बन्दोबस्त अपने हाथ में रख छोड़ा है, परन्तु उसको राजा का लिहाज़ करना पड़ता है। राजा की माफ़त अपनी दरख्वास्त भिजवा दीजिए।

अलीबहादुर—ब्याह के बाद जो दरबार हुआ था उसमें मैंने अपनी फ़रियाद को बहुत आरज़ू मिन्नत से साधने की कोशिश की, मगर उन्होंने एक नहीं सुनी। भांड़ भगतियों और गाने नाचने वालों को खज़ाना लुटाने चले जा रहे हैं, पर हक़ वालों को हक़ देने में बिलकुल नहीं लरजते। पहले जितना अन्याय करते थे, अब उससे दुगना करने लगे हैं। ज़रा ज़रा से अपराध पर लोगों को बिच्छुओं से कटवाना, हाथ कटवा डालना, देश निकाला दे देना मामूली सी बातें हो गई हैं!

पो० अफ़सर— हम लोगोंको जब यह सब सुनाई पड़ता है रञ्ज होता है। केवल शहर का इन्तज़ाम राजा के हाथ में है, उसका यह हाल है। बाक़ी रियासत का बन्दोबस्त कम्पनी सरकार कर रही है। कोई शिकायत नहीं। मिडिल तक के मदरसे खुल रहे हैं! सड़कें बन रही हैं!! अस्पताल बनेंगे!!! रोज़गार बढ़ेगा!!!!

अलीबहादुर—बन्दा नवाज़, सारी प्रजा अंग्रेज़ी हुकूमत चाहती है। अगर शहर भी कम्पनी सरकार के बन्दोबस्त में आ जाय तो लोग दुआ देंगे।

पो० अफ़सर—(सतर्कता के साथ) जो कुछ हो—फ़िलहाल कोई राय नहीं दी जा सकती। बड़े लाट साहब बहादुर जो कुछ तै करें।

है राजा साहब की चाल ढाल के ऊपर निर्भर। अगर उन्होंने हुकूमत को ठीक तौर से चलाया तो शहर से बाहर के इलाकों का बन्दोबस्त भी उनको वापिस किया जा सकता है।

अलीबहादुर—शहर से बाहर के इलाके का भी बन्दोबस्त वापिस कर दिया जावेगा! तब तो आई मुसीबत!! अन्धेर का राज हो जावेगा!!!

पो० अफ़सर—पर कम्पनी सरकार इतनी प्रबल है कि अन्धेर होने ही न देगी। ज़रा गड़बड़ हुई कि उसने एक झटके में होश ठिकाने लगा दिया। सरकारी फ़ौज यहां हमेशा तैयार रहेगी। राजा साहब ने इस फ़ौज की रक्षा के लिए कम्पनी सरकार को राज्य का पांचवां हिस्सा लगा दिया है।

अली बहादुर—(**इस योजना में अपने लिये कोई स्थान न पाकर**) हुज़ूर, मैं भी कम्पनी सरकार की सेवा करने के लिए हमेशा तैयार हूँ। मौक़ा आने पर कम्पनी सरकार के लिए अपना खून तक बहा सकता हूँ।

पो० अफ़सर—शाबाश! नवाब साहब, आप सरीखे बड़े आदमियों का मुझको बहुत भरोसा है। आप कम्पनी सरकार की जो कुछ सेवा करेंगे वह याद रक्खी जावेगी। आपको खिताब दिया जायगा।

अलीबहादुर—(**उत्साहित होकर**) बन्दा परवर, इस राज्य में जब जो कुछ भला बुरा हुआ करेगा आपको बराबर उसकी सही खबर मिला करेगी। मेरे पास खातिर वाले जासूस हैं। जैसे पीरअली—

पो० अफ़सर—मैं आपका अहसान मानता हूँ। नाम फिर किसी मौक़े पर बतला दीजियेगा। लिख लूंगा।

(टहलते हुए जाना चाहता है)

अलीबहादुर—(**उसके पीछे पीछे जाते हुए**) एक पीरअली क्या बहुत से हैं, हुज़ूर। पर पीरअली बड़ा होशियार है। बड़ा वफ़ादार। जासूसी का इत्र। सारे जग के समाचार इकट्ठे करने वाला। मौक़ा पड़ने पर पेश भी कर दूंगा। रनवास तक की खबर मंगवाई जा सकती है।

पो० अफ़सर—(चौंककर, रुकते हुए) रनवास ! हां, नवाब साहब, रानी की उमर कम है, मगर सुनता हूँ बड़ी तेज़ है।

अलीबहादुर—सरकार, बहुत तेज़। और पूजा पत्री करने वाली। पर राजा साहब ने उसको भी क़िले के एक खण्ड में घेर रक्खा है। रानी होते हुए भी उसको कोई आज़ादी नहीं। क़ैदी की तरह रहती है।

पो० अफ़सर—वैसे मराठों में तो स्त्रियों को आज़ादी अधिक है।

अलीबहादुर—मगर, हुज़ूर, राजा साहब सनकी जो ज़बरदस्त हैं।

पो० अफ़सर—कोई अचरज की बात नहीं, नवाब साहब। वे राजा होने की वजह से परदा बर्तते होंगे। खैर। हमको इससे कोई मतलब नहीं। मैं अब जाऊंगा। सलाम। मिलते रहा करिये।

अलीबहादुर—आदाबअर्ज़ हुज़ूर। मेरे दावे का हुज़ूर ख्याल रक्खें।

पो० अफ़सर—हां, मैंने कहा तो है।

(दोनों जाते हैं)

सातवां दृश्य

[स्थान—झाँसी के क़िले के भीतर महादेव का मन्दिर। मन्दिर के इधर-उधर क़िले की दीवारें हैं। पश्चिम की ओर क़िले की दीवार के सहारे ऊपर की ओर एक बारहदरी है। इसके नीचे एक बड़ा कुआँ है। पूर्व-उत्तर की ओर क़िले के दूसरे भागों में जाने के लिए बन्दनवार मिहराब का बड़ा दरवाज़ा है। मन्दिर इस द्वार से नीचे की ओर है। द्वार से मन्दिर में आने के लिए पत्थर की सीढ़ियां हैं। मन्दिर के खुले परन्तु छायादार बरामदे के सामने आंगन है। मन्दिर में गौर को खूब सजाया गया है। इधर-उधर बत्तियां झिलमिला रही हैं। आंगन में लक्ष्मीबाई, राधारानी, मुन्दर, सुन्दर, काशीबाई इत्यादि स्त्रियां हैं। एक किनारे कुछ मालिनें फूलों की डलियां लिए हैं। लक्ष्मीबाई के

केशों में थोड़े से फूल हैं। गले में किसी स्त्री के फूलमाला नहीं है। स्त्रियां गौर का पूजन करके लक्ष्मीबाई के पास इकट्ठी हो रही हैं। झलकारी कोरिन बुन्देलखण्डी वस्त्र और आभूषण, जो चांदी के ही हैं, पहिने आती है। वह लक्ष्मीबाई की आयु की है। वैसी ही आकृति और सुन्दरता वाली है। केवल रङ्ग का अन्तर है। झलकारी का रङ्ग सावला है, लक्ष्मीबाई का खरा गोरा। स्त्रियां हरदो कूँ कूँ उत्सव मना रही हैं। समय—सन्ध्या के उपरांत।]

लक्ष्मीबाई—तुम लोग फूलमाला पहिनकर क्यों नहीं आईं? क्या गौर माता को अधूरे शृङ्गार से प्रसन्न करोगी?

राधारानी—जब सरकार के ही गले में माला नहीं है तब हमलोग कैसे पहिनें?

लक्ष्मीबाई—(राधारानी के कन्धे को हिलाकर) मालिनों के पास नाना प्रकार के हार हैं। लाओ एक मेरे लिए। मै पहिनूँगी। तुमलोग भी पहिनो।

(स्त्रियां दौड़कर मालिनों से हार ले आती हैं। बख्शिन (राधारानी) लक्ष्मीबाई को हार पहिनाती है। इसके बाद सब स्त्रियां एक एक करके उनको हार पहिनाती हैं। जब वे हारों से ढक जाती हैं, तब उतार कर रख देती हैं, केवल एक पहिने रहती हैं। इस समय घूँघट डाले हुए झलकारी संकोच के साथ उनके पास आती है। हाथ में एक फूलमाला लिए हुए है।)

लक्ष्मीबाई—तुम कौन हो?

झलकारी—सरकार, हों तौ कोरिन।

लक्ष्मीबाई—नाम?

झलकारी—सरकार, झलकारी दुलैया।

लक्ष्मीबाई—(हँसकर) जैसा नाम है वैसा ही लक्षण है। पर यह इतना लम्बा घूँघट काहे के लिए डाल रक्खा है? पहिनादे अपनी माला।

(झलकारी घूँघट खोलकर माला डाल देती है। रानी की आकृति से उसकी आकृति मिलती पाकर सब स्त्रियों को आश्चर्य होता है। वह रानी के पेर पकड़ लेती है)

लक्ष्मीबाई—झलकारी, तुम निर्भय रहो। तुम कुछ कहना चाहती हो कहो।

झलकारी—महाराज, मोरे घर में पुरिया पूरबे को और कपड़ा बुनबे को काम होत आओ है। पै बे अब मलखम कुश्ती करन लगे! सो सरकार, घर को काम कैसें चल है?

लक्ष्मीबाई—तुम्हारी जाति में मलखम कुश्ती का काम कितने लोग करने लगे हैं?

झलकारी—एलो! मैं का घर घर देखत फिरत?

लक्ष्मीबाई—(हंसकर) खुतेमन की स्त्री है। झलकारी, तुम भी मलखम कुश्ती सीखो। घोड़े की सवारी भी। तुमको इनाम दूँगी।

(झलकारी संकोच के मारे नव जाती है। हंसती है)

झलकारी—मैं चकिया पीसत हों, दो-दो तीन-तीन मटकन में कुआ सें पानी भर लेआउत रहँटा कातत, अब और का करों?

लक्ष्मीबाई—तुम्हारे पति का नाम?

राधारानी—(आगे बढ़कर) कुंकुम रोरी लगाते समय झलकारी को अपने पति का नाम बतलाना ही पड़ेगा, परन्तु······

लक्ष्मीबाई—परन्तु क्या बखिशनजू? (मुस्कराती हैं)

राधारानी—(हंसकर) सरकार, सब बड़े काम पहले बड़ोंसे आरम्भ होते हैं। कौन प्रारम्भ करेगा क्या हमीं लोगों को यह बतलाना पड़ेगा?

(स्त्रियां हंस पड़ती हैं। कुछ ताली पीटकर थिरक जाती हैं)

लक्ष्मीबाई—तुम मुझसे बड़ी हो अखिशनजू। हमारे जनरल की पत्नी।

राधारानी—सरकार हमारी महारानी हैं। पहले सरकार बतलावेंगी। पीछे हमलोग आज्ञा का पालन करेंगी।

लक्ष्मीबाई—अखिशनजू, याद रखना। मैं बहुत हैरान करूँगी।

राधारानी—(हंसकर) अभी तो मेरी बारी है सरकार पूछने की। महादेवजी के नाम गिनाइए।

लक्ष्मीबाई—(थोड़े से संकोच के साथ) शिव, शंकर, भोला-नाथ, शम्भु, (गिरजापति)

राधारानी—सरकार को तो पूरा कोष याद है। अब बतलाइए महादेव जी के जटाजूट में क्या है ?

लक्ष्मीबाई—सर्प, रुद्राक्ष—

राधारानी—जी नहीं सरकार—महादेव बाबा के जटाजूट में से निकल कर, हिमाचल से चलकर, कौन इस देश को पवित्र करने के लिए आया ? बिठूर के नीचे किसका महान् सुहावनापन है ?

लक्ष्मीबाई—(यकायक) गङ्गा का··(सहमकर) अरे!·····

(अखिशन हंसती हुई थिरक कर नाच उठती है। लक्ष्मीबाई को माला पहनाती है। लक्ष्मीबाई राधारानी का हाथ पकड़ती है।)

राधारानी—अरे रे। आपने तो मेरी कलाही तोड़ दी !

लक्ष्मीबाई—तुम्हारी कलाही प्रबल बनाऊंगी। बात न बनाओ। मेरे सवाल का जवाब दो। बोलो, मेरे पुरखों के नाम याद हैं ?

राधारानी—हां सरकार, जिनकी सेवा में युग बीत गए उनके नाम कैसे भूल जाऊंगी ?

लक्ष्मीबाई—बतलाओ मेरे ससुर का नाम !

राधारानी—राजा शिवराव भाऊ। भाऊ साहब—अरे: —

लक्ष्मीबाई—यहां सब स्त्रियों में सबसे अधिक नटखट तुम हो! पहले ही अरसट्टे फिसल गईं !! लाला भाऊ !!! लाला भाऊ !!!!

(लक्ष्मीबाई उसका हाथ छोड़ देती हैं)

सुन्दर—यही तो इनके पति का नाम है। कैसी जल्दी निकल गया मुँह से।

(राधारानी को रानी माला पहनाती हैं)

राधारानी—(लक्ष्मीबाई के कान में) झलकारी कोरिन के पति का नाम पूरन है, सरकार।

लक्ष्मीबाई—झलकारी, चन्दा किस दिन पूरा दिखलाई पड़ता है।

झलकारी—पूरनमासी के दिना, सरकार। ए, य!

लक्ष्मीबाई—(हंसकर) हां, हां, पूरन है नाम तुम्हारे पति का। ठीक तो है।

(लक्ष्मीबाई उसको माला पहिनाती है)

राधारानी—अब सरकार, हम लोग अपने नाच गान से गौर माता को रिझायें? जैसी आज्ञा हो?

लक्ष्मीबाई—अवश्य।

(सब स्त्रियां नृत्य गान करती हैं। झलकारी का बुंदेलखंडीनृत्य होता है)

गान

पंछी बोल गया रे, पंछी बोल गया।
झिलमिल झिलमिल किरनें फूटीं,
अन्धकार की कसनें टूटीं,
गङ्गाधर की अलकें छूटीं,
धारें पुलकित हुई अनूठीं,
गजरा डोल गया रे,
सौरभ घोल गया रे,
पंछी बोल गया रे; गाकर बोल नया,
पंछी बोल गया।

लक्ष्मीबाई—तुम लोगों को हर्ष मग्न देखकर मुझको भी बहुत हर्ष है। आज तुमसे मैं एक भीख मांगती हूँ। दोगी?

(सब स्त्रियां स्थिर हो जाती हैं और आश्चर्य में पड़ जाती हैं)

लक्ष्मीबाई—फूल जब खिलते हैं, तब उनमें महक होती है; वे अच्छे लगते हैं। उनका आधार क्या है? वे कहां शोभा पाते हैं?

राधारानी—(**आगे आकर**) सरकार ही बतलावें।

लक्ष्मीबाई—देह। पुष्ट, बलिष्ट देह पर ही वे शोभा देते हैं। वहां उनकी महक अच्छी लगती है। उनकी स्मृति वहां से बल पाती है। मुझको वचन दो कि देह को पुष्ट बनाओगी, व्यायाम करोगी, हथियार चलाना सीखोगी। दोगी मुझको यह भीख?

स्त्रियां—हम लोग अपनी देह को सबल बनावेंगी।

लक्ष्मीबाई—और मन को निडर। मन को भगवान का भक्त बनाने से वह निडर हो जाता है।

स्त्रियां—मनको निडर बनावेंगी।

लक्ष्मीबाई—तब—तभी—तुम देवी कहलाने योग्य बनोगी। देवी फूल मालाएँ पहिनती हैं और अपने प्रबल हाथ में तलवार भी लिए रहती हैं। समझ गईं?

स्त्रियां—समझ गईं।

लक्ष्मीबाई—हल्दी कूंकूं का आशीर्वाद तभी सफल समझना जब शरीर और मन को एक पात में बिठला सको।

स्त्रियां—ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई—मैं स्त्रियों की एक सेना बनाऊंगी।

स्त्रियां—हम लोग उसमें काम करेंगी।

लक्ष्मीबाई—कुछ दिनों यहां, महल के भीतर, काम सीखना।

स्त्रियां—अवश्य।

(एक पहरे वाली आती है)

पहरेवाली सरकार, श्रीमन्त सरकार पधारना चाहते हैं।

(रानी स्त्रियों को संकेत करती हैं। वे सब चली जाती है। पहरेवाली भी जाती है। गङ्गाधरराव आते हैं। लक्ष्मीबाई उनका अभिवादन करती है।)

गङ्गाधरराव इस उत्सव के प्रमोद की धुनें सुनकर मैंने सोचा चलूं और एक आनन्द समाचार आपको सुना आऊं।

लक्ष्मीबाई—महाराज ?

गङ्गाधरराव—हमको अपने सारे राज्य का अधिकार मिल गया है।

लक्ष्मीबाई—(प्रफुल्लता के साथ) यह सचमुच अच्छा समाचार है। अब व्यवस्था के साथ जनता को आगे बढ़ाने का अवसर मिलेगा। सेना बढ़ाई जा सके और स्वराज्य—

गङ्गाधरराव—उसमें एक छोटा सा खोट लग गया है।

लक्ष्मीबाई—(व्यग्रता के साथ) वह क्या ? महाराज वह क्या ?

गङ्गाधरराव—झांसी में एक अंग्रेज़ी फ़ौज रक्खी जावेगी। उसका खर्चा चलाने के लिए राज्य का पाचवां हिस्सा अंग्रेज़ों के हाथ देना पड़ा है। नक़द रुपया देने से अच्छा है। है न ?

लक्ष्मीबाई—(निश्वास लेकर) हूं

गङ्गाधरराव—नहीं, कुछ ऐसा बुरा नहीं हुआ। सब रियासतों को करना पड़ा है। जो कुछ हुआ, अच्छा हुआ। खुशी मनानी चाहिये।

लक्ष्मीबाई—क्यों नहीं ? अपने घर की सेना रखने की भी अटक न रहेगी। आपकी नाटकशाला भी चेतेगी न अब ?

गङ्गाधरराव—हां, हां, अवश्य। क्यों ?

लक्ष्मीबाई—कौन सा नाटक खेला जायगा ?

गङ्गाधरराव—मृच्छकटिक। शूद्रक कवि ने संस्कृत में लिखा है। चारुदत्त ब्राह्मण और बसन्तसेना के प्रेम की अद्भुत कहानी है। मैंने हिन्दी में उल्था करवाया है। आप देखेंगी।

लक्ष्मीबाई - न। झांसी का पांचवां भाग दे देने से भी बढ़कर क्या यह नाटक मनोरंजक है?

गङ्गाधरराव– आप यह नहीं देखतीं कि पांचवां भाग दे देने से बाकी चार भागों की बागडोर तो हाथ में आ गई।

लक्ष्मीबाई—मैं तो यह देखती हूँ कि झांसी में अंग्रेज़ी सेना के आने से आपके हाथ में एक भाग भी नहीं रहेगा।

गङ्गाधरराव—आप राजनीति नहीं समझ सकतीं। (**ज़रा क्षुब्ध स्वर में**) आपको तो कसरत, कुश्ती, घोड़े की सवारी अवारी के बाहर और सूझ भी क्या सकता है!

लक्ष्मीबाई—वह भी क़िले के ही भीतर!!

गङ्गाधरराव—तो क्या यह इच्छा है कि इन स्त्रियों को लिए लिए नगर बाहर घोड़े कुदाती फिरें! आखिर इन स्त्रियों को आप मोटा तगड़ा बनाकर आप क्या करने जा रही हैं?

लक्ष्मीबाई--करने को अब रहा ही क्या है? राज्य का काम चलाने के लिए दीवान है। डाकुओं, बटमारों का दमन करने और प्रजा को ठीक पथ पर चालू रखने के लिए अंग्रेजी सेना है ही—

गङ्गाधरराव—मैं आपके अभिप्राय को समझता हूँ। परन्तु हमारे गांव गांव में फूट और उपद्रव भरे हुए हैं। कोई किसी की न सुनता है और न मानता है। अंग्रेजों के पास हथियार अच्छे हैं—।

लक्ष्मीबाई—आपकी नाटकशाला में जो हथियार बनते रहते हैं उन से क्या अंग्रेज नहीं हराए जा सकते!

गङ्गाधरराव—हुँ · (**क्षोभ को दमन करके**) आप कभी-कभी बहुत कड़ी चोट कर बैठती हैं।

लक्ष्मीबाई--आपके यहां के कवि और भाट क्या केवल प्रशंसा और यशगान ही करते हैं या कभी कड़खे भी सुनाते हैं!

गङ्गाधरराव—तो स्त्रियों की सेना रचकर आप अंग्रेजों को परास्त करने जारही हैं? स्वराज्य स्थापित करने न? हू! इस युग में स्वराज्य!!

लक्ष्मीबाई—महाराज, स्वराज्य के लिए कोई विशेष युग नियत नहीं है। छत्रपति शिवाजी ने यदि ऐसा सोचा होता तो हम और आप आज कहां होते?

गङ्गाधरराव—आप बातों में बहुत बढ़ जाती हैं।

लक्ष्मीबाई—मर्दों को चूड़ियां पहिना दीजिए और हम स्त्रियों के हाथ में दीजिए तलवार, फिर देखिए हम स्त्रियां अंग्रेज़ी सेना को झांसी में कितने दिन टिकने देती हैं।

(क्षोभ के मारे गङ्गाधरराव का गला रुद्ध हो जाता है। वे टहलने लगते हैं। फिर वे अपना घोर संयम करते हैं)

गङ्गाधरराव—मैं आपके प्रमोद में सहयोग देने आया था, परन्तु क्या बतलाऊं—न जाने आपको कभी-कभी क्या होजाता है! आप मौज में स्त्रियों की पल्टन बनाइए, उन्हें मोटा तगड़ा कीजिए। मेरा क्या जाता है?

लक्ष्मीबाई—अभी कुछ नहीं कह सकती हूं। (**आत्म नियन्त्रण करके थोड़ी देर पीछे**) आप गौर का पूजन देखने के लिये आए थे? कदाचित गौर को नमस्कार करनेके लिए भी?

गङ्गाधरराव—(**ठंड पड़ कर**) हां—अवश्य।

लक्ष्मीबाई—तो नमस्कार कर लीजिए।

(गंगाधरराव आंख मूंदकर करबद्ध खड़े हो जाते हैं। लक्ष्मीबाई भी हाथ जोड़ लेती हैं, परन्तु उनकी आंखें खुली हैं)
गौर नारी जाति की हैं, और तलवार का पकड़ना और चलाना भी जानती हैं।

गङ्गाधरराव—(**आंखें खोलकर और मुस्कराकर**) हां।

आठवाँ दृश्य

स्थान—[झाँसी में पोलिटिकल अफ़सर का बगीचा। पोलीटिकल अफ़सर टहलता हुआ आता है। उसके साथ एक अंग्रेज फ़ौजी अफ़सर है। समय—संध्या।]

पो० अफ़सर—यहीं की जनता देखलो न, जितना बार अंग्रेज़ी शासन हुआ, लूटमार और अव्यवस्था बन्द होगई।

फ़ौजी अफ़सर—गङ्गाधरराव का दो महीने का बच्चा तो मरगया, वे शायद किसी को गोद लेंगे। झाँसी के अच्छे दिन दूर फिर जायंगे।

पो० अफ़सर- राजा का ब्याह हुए पांच साल हुए हैं। इन पाँच वर्षों में बहुत कुछ स्वस्थ रहे, परन्तु अब बहुत बीमार हैं। गोद लेने योग्य हालत में नहीं जान पड़ते। लेंगे भी तो मन्ज़ूर नहीं होगी। अपनी सरकार की नीति स्पष्ट है। इस देश को दृढ़ शासन, टिकाऊ व्यवस्था और निष्पक्ष न्याय की सख्त ज़रूरत है। वह रियासतों में नहीं मिल सकता है।

फ़ौजी अफ़सर सब रियासतें खतम होजायं तो अच्छा।

पो० अफ़सर कह नहीं सकते। कम्पनी के डाइरेक्टरों का बोर्ड सारी की सारी रियासतो के खतम करने का निरोध करता है। कुछ रियासतें बनी भी रहनी चाहिए। ये हमारे राज्य की सहायक हैं और रहेंगी।

फ़ौजी अफ़सर—कम्पनी का बोर्ड अपने नफ़े की रक़मों की ओर पहले ध्यान देता है। यहां की वास्तविक स्थिति तो गवर्नर जनरल ही जानते हैं।

पो० अफ़सर—फिरभी इङ्गलेंड के राजनीतिज्ञ काफ़ी होशियार हैं। गवर्नर जनरल को भी अपनी काउन्सिल के बहुमत को रद करने का पूरा अधिकार मिल गया है। हिन्दुस्थान का अभिजात वर्ग चैन पागया है। वह यहां के हितों का भण्डारी है। जनता को भी शांति मिल गई है। वह अभिजातों के प्रभाव में है और ये सब अपने आतंक में।

फौजी अफ़सर- इसी आतंक को गहरा और मज़बूत बनाने की ज़रूरत है।

पो० अफ़सर—बिलकुल ठीक कहते हो। अपने छोकरों को जो आॅक्सफ़र्ड और केम्ब्रिज से निकल कर यहा आते रहेंगे पराक्रम विकास के लिए बहुत लम्बा चौड़ा मैदान मिलता रहेगा। हिन्दुस्थानियों की सहायता से वे उस आतंक को गहरा और मज़बूत बनाते चले जायंगे। यहा के अन्ध विश्वासों को दूर करेंगे, विज्ञान के उजाले को फैलायेंगे और व्यवस्था को सदा के लिये रोप देंगे। इसके लिये आतंक की सख्त ज़रूरत रहेगी, क्यों कि हमारी संख्या हमेशा कम रहेगी।

फौजी अफ़सर—हिन्दुस्थानी किसी दिन अपने देश को वापिस भी चाहेंगे। हूँ—।

पो० अफ़सर—उसके लिए युगों की ज़रूरत पड़ेगी। परन्तु जब वह दिन आयगा हमारी सन्तान सोच समझ कर काम करेगी, लेकिन वह दिन अभी बहुत बहुत दूर है। और, तब तक हिन्दुस्थान हमारा इतना प्रबल भक्त हो जायगा कि हमको छोड़ेगा ही नहीं। दृढ़ता, निर्भीकता, न्यायनिष्ठा और क़ानून की परम्पराओं के क़ायम रखने से ही तो सफलता मिलेगी।...

फौजी अफ़सर—परन्तु हम लोगों को हिन्दुस्थानी समाजसे फ़ासले पर रहना चाहिए, क्यों कि वह गन्दा बहुत है। और, इङ्गलैंड के माली फ़ायदे को भी ध्यानमें रक्खे रहना है। उन छोकरों के लाभ को भी।

(एक हिन्दुस्थानी फ़ौजी-का प्रवेश)

हिन्दुस्थानी फौजी—हुज़ूर, महल से खबर आई है कि महाराज बहुत बीमार हैं। बुलावा आया है।

पो० अफ़सर—अच्छा, जवाब दो—हम अभी आते हैं।

(हिन्दुस्थानी फौजी जाता है)

फ़ौजी अफ़सर—मालूम होता है कि राजा मर जायगा; उसको विलायती दवा खाने के लिए कहा गया तो वह राज़ी ही नहीं हुआ।

पो० अफ़सर—परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे।

फ़ौजी अफ़सर—(हंसकर, परन्तु वह अभी मरा नहीं है।

पो० अफ़सर—(हसकर) लक्षणों से जान पड़ता है कि वह बचेगा नहीं। झासी अंग्रेज़ी इलाक़े में मिलाई जायगी।

फ़ौजी अफ़सर—शायद कोई विप्लव हो उठे, क्यों कि राजा के अत्याचारी होते हुए भी जनता रानी को प्यार करती है और उसका राज्य चाहेगी; सेना को सावधान रहना चाहिए।

पो० अफ़सर—रानी योग्य है केवल इतना ही यहा की परिस्थिति के अनुकूल है बाक़ी सब प्रतिकूल है। मै राजा के पास जाता हूँ। तुम अपनी छावनी को देखो।

(दोनों भिन्न भिन्न दिशाओं में जाते हैं)

नवां दृश्य

[स्थान -गंगाधरराव का महल। गंगाधरराव मरणासन्न है, शय्या पर पड़े हैं। आस पास मोरोपन्त, उनके दीवान और वैद्य है। एक पर्दे के पीछे लक्ष्मीबाई है। समय—दिन।]

गंगाधरराव—(शिथिल स्वर में) मुझको अभी जीने की आशा है। परन्तु मै प्रबन्ध कर रहा हूँ। कहीं कुछ हो गया तो झांसी अनाथ नहीं रहेगी।

वैद्य—महाराज चिन्ता न करें। चंगे हो जायंगे!

गंगाधरराव—हा तुम्हारे रस से मुझको कुछ चैन तो मिला है—साहब को बुलाया था आए नहीं?

(पहरेदार आता है)

पहरेदार—श्रीमन्त सरकार, साहब आगए हैं। ड्योढ़ी पर हाज़िर हैं

मोरोपन्त—उनको भेज दो।

(पहरेदार जाता है और पोलिटिकल अफ़सर आता है। अभिवादन के बाद उसको कुर्सी दी जाती है।)

गंगाधरराव—मैं अच्छा हो रहा हूँ। जीने की आशा है। परन्तु यदि कोई अनदेखी अनचाही हो जाय तो उसके लिए मैंने बन्दोबस्त करने का निश्चय कर लिया है। मेरे कुटुम्ब का एक लड़का आनन्दराव है। मैं उसको गोद ले रहा हूँ। मोरोपन्त जी, आनन्दराव को ले आइए।

(मोरोपन्त जाता है और आनन्दराव को लेआता है। आनन्दराव पांच वर्ष का एक सुन्दर बालक है।)

गंगाधरराव—देखो मेजर साहब, यह कितना सुन्दर और होनहार है। मेरी रानी सी माता को पाकर झांसी को चमका देगा। मेरी झाँसी को ये दोनों बड़ा भारी नाम देंगे......

(पर्दे के पीछे रानी की सिसकी सुनाई देती है।)

गंगाधरराव—(पर्दे की ओर मुँह फेरकर) यह क्या है? रोती हो? मैं अच्छा हो रहा हूँ। मैं आनन्दराव को गोद ले रहा हूँ। तुम्हारी अनुमति है?

लक्ष्मीबाई—(पर्दे के भीतर से) जी हां।

गंगाधरराव—मेजर साहब, हमारी रानी स्त्री ज़रूर है, परन्तु इसमें ऐसे गुण हैं कि संसार के बड़े बड़े मर्द इसके पैरों की धूल अपने माथे पर चढ़ावेंगे।

(राजा के आंसू आजाते हैं)

पो० अफ़सर—मैंने महारानी साहब की बहुत तारीफ़ सुनी है। वे बहुत योग्य हैं। आप चिन्ता न करें। अच्छी तरह से दवा करें। आप स्वस्थ हो जायंगे।

गंगाधरराव—मेरे हृदय में पीड़ा हो रही है। मैं सब काम जल्दी निबटाना चाहता हूँ। आनन्दराव का नाम दामोदरराव रक्खूंगा। अच्छा नाम है न मेजर साहब?

पो० अफ़सर—जी हां सरकार।

गंगाधरराव—आप गोदी को लाट साहबसे कबूल करवा दीजिएगा मेजर साहब। इसकी नाबालगी के ज़माने तक रानी राज्य चलावेंगी, उसके उपरान्त दोनों राज्य का काम करेंगे।

पो० अफ़सर—मै कोशिश करूंगा, महाराज।

गंगाधरराव—हमारे घराने ने अंग्रेज़ सरकार की सदा सहायता की है। यहा तक कि जब बुन्देलखण्ड का कोई रजवाड़ा आपकी सरकार के साथ न था, बल्कि सब के सब विरुद्ध थे, तब झांसी ने आप लोगों के साथ मित्रता का गठबन्धन किया था। सन् १८०४ की बात है न मोरोपन्त? मैं उस समय बहुत छोटा था।

मोरोपन्त—हां श्रीमन्त सरकार, और फिर १८१८ में पुनः वही सन्धि दुहराई गई थी।

पो० अफ़सर—आपको पीड़ा हो रही है महाराज, अब आप अधिक बातचीत न करें। मै लाट साहब को लिखूंगा।

गंगाधरराव—तो आप मेरा हाथ पकड़ कर वचन दीजिए, मेजर साहब। यह हमारे यहां का क़ायदा है।

पो० अफ़सर—(गंगाधरराव का हाथ पकड़कर) वर्तमान लाठ साहब गोद के क़ानून को नहीं मानना चाहते, परन्तु मैं अपनी कोशिश में कोई कसर नहीं लगाऊंगा। आप जानते हैं, सरकार, कि मैं लाठ साहब का मातहत हूँ।

गंगाधरराव—(पो०अफ़सर का हाथ छोड़ कर धीमें स्वर में) मुझ को आपका भरोसा है। मैं चाहता हूं मेरी बपौती मेरे वंश में बनी रहे—मेरे घर में मेरे पुरखोंका दीपक जगमगाता रहे। आओ बेटा आनन्दराव इधर।

(आनन्दराव गंगाधरराव के पास जाता है)

गंगाधरराव—देखिए मेजर साहब, मैं आपके सामने इसको गोद लेता हूँ। इसका नाम दामोदरराव होगा। शास्त्र की रीति थोड़ी देर में बर्ती जायगी।

पो० अफ़सर--मुझको आज्ञा हो तो मैं जाऊं ?

गंगाधरराव—हां, आप जाइए। मेरे मन में शान्ति है।......... शान्ति है। ओम शान्ति, शान्ति, शान्ति।

(पो० अफ़सर प्रणाम करके जाता है)

यवनिका

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—झाँसी के क़िले वाले महल का दरबार-भवन। एक ऊँचे मन्च पर रक्खी हुई कुर्सी पर दामोदरराव बैठा है। नीचे इधर उधर कुर्सियों पर नाना भोपटकर, बख़्शी लाला भाऊ, दीवान जवाहरसिंह, दीवान रघुनाथसिंह, तोपची गुलाम ग़ौसखाँ मोरोपन्त, खुदाबख्श यथा-स्थान। नाना भोपटकर लगभग ७० वर्ष का वृद्ध परन्तु स्वस्थ व्यक्ति है। अन्य सरदार अधेड़ अवस्था के पुष्ट-देह व्यक्ति हैं। सिवाय नाना भोपटकर के सब के सब दाढ़ियाँ रक्खे हैं जिन के सिरे कानों पर चढ़े हैं और नाना भोपटकर के सिवाय सब के सब तलवार बांधे हैं। दरबार-भवन से लगे हुए एक कमरे में रानी लक्ष्मीबाई और उनकी सखी मुन्दर बैठी है। कमरे के द्वार पर महीन जाली की झरप पड़ी है। लक्ष्मीबाई सफ़ेद साड़ी पहिने हैं। गले में हीरे मोतियों के कंठे डाले हैं। कुछ कुर्सियाँ खाली पड़ी हैं। बीच में एक मेज लगी हुई है, उस पर सोने के वर्कों से लिपटे हुए पान चांदी के थाल में सजाए हुए रक्खे हैं। थाल के पास गुलाब पाश और इत्रदान हैं। भवन से लगे हुए दूसरे कमरे में मोतीबाई और जूही सजधज के साथ बैठी हुई हैं-मानो किसी आनन्द समाचार की घोषणा के बाद रानी को अपना नृत्य—गान दिखलाने के लिए उद्यत हों। दरबार भवन में सजावट है। समय—दिन।]

नाना भोपटकर—नगर में भी बड़ी सजावट है।

गुलाम गौसखाँ --(जिस कमरे में रानी बैठी हुई हैं उसकी ओर मुंह फेर कर और फौजी प्रणाम करके) जैसे ही एजेन्ट साहब ने गोदी की मञ्जूरी का हुकुम सुनाया कि मैंने तोपों की सलामी दागी? मेरी 'घन गरज' और 'कड़क बिजली' तैयार हैं।

(अन्य सरदार खड़े हो कर उसी प्रकार प्रणाम करते हैं)

सब एक साथ – अवश्य।

मुन्दर--(रानी से) और मैं हंसूं खेलूंगी, गाऊंगी नाचूंगी सरकार।

मोतीबाई और जूही—(अपने कमरे से) हम लोग अपने अरमान निकालेंगी।

रानी (मुस्करा कर मुन्दर से) और लाट साहब का निर्धार यदि अपने मन का न हुआ तो क्या जान छोड़ देगी?

मुन्दर- (रानी से) हूं ········सरकार!

रानी—(मुन्दर से) धीरज से काम लेना चाहिए।

(चोबदार का प्रवेश)

चोबदार—सरकार, पोलिटिकल एजेन्ट मेजर साहब आए हैं। उनके साथ कुछ अंग्रेज़ फ़ौजी अफ़सर भी हैं।

भोपटकर - उनको आदर के साथ भेजो।

(चोबदार जाता है। पोलिटिकल अफ़सर कुछ अंग्रेज फौजियों के साथ आता है। दरबार में बैठे हुए सब लोग सत्कार देने के लिए खड़े हो जाते हैं, केवल दामोदरराव बैठा रहता है। भोपट-कर उन लोगों को अभिवादन के बाद, यथा स्थान बिठलाता है। दरबार में उत्सुकता का सन्नाटा छा जाता है।)

मोरोपन्त– साहब, आपको यहां तक आने में बड़ा कष्ट हुआ।

(नाना भोपटकर और मोरोपन्त पान का थाल और इत्रदान लेकर अंग्रेज अफ़सरों के सामने जाते हैं। पोलिटिकल अफ़सर

(तथा अन्य अफ़सर एक दूसरे का मुँह देख कर चुप रहते हैं। नमस्कार को बिना स्वीकार किए हुए पोलिटिकल अफसर खड़ा हो जाता है और जेब में से एक खरीता निकाल कर खोलता है।

पो० अफ़सर—मेरी ड्यूटी है- कर्तव्य, दुःखदायक कर्तव्य। महारानी साहब कहां हैं?

(झोपटकर और मोरोपन्त रानी वाले कमरे की ओर संकेत करते हैं।

पो० अफ़सर—(रानी वाले कमरे की ओर मुंह फेरकर नमस्कार करके, कुछ कांपते हुए गले के साथ) जो कुछ मेरे सामर्थ्य में था मैंने किया, परन्तु गवर्नर जनरल साहब ने गोद को नामंजूर कर दिया है। झांसी का राज्य अंग्रेज़ी इलाके में मिलाया जाता है। महारानी साहब को किला खाली करना होगा। उनको रहने के लिए शहर वाला महल, और गुज़र के लिए पांच हज़ार रुपया मासिक मिलेगा। दीवान साहब, आपको खज़ाना और कुंजी ताले मेरे सुपुर्द करने होंगे। झांसीकी फ़ौज बरखास्त की जाती है। उसको छः छः महीने का वेतन दे दिया जायगा। खज़ाने में जो कुछ बाक़ी रहेगा वह श्रीमन्त दामोदरराव को बालिग़ होने पर दे दिया जायगा।

झोपटकर हाय!
जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह—ओफ़!!
गुलामग़ौस खुदाबख्श - आह!!!
मोरोपन्त—हे भगवन!!!!
मोतीबाई और जूही—अनहोनी हुई!!!!!
(जल्दी जल्दी)

लक्ष्मीबाई—मै अपनी झांसी नहीं दूँगी।

पो० अफ़सर - मै समझता हूँ असन्तोष का कोई कारण नहीं है। जैतपूर, नागपूर, और बिठूर—कहीं की भी गोद को तो लाठ साहब ने नहीं माना।

लक्ष्मीबाई— मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।

पो० अफ़सर—आपको सरकार, निजी सम्पत्ति दे दी गई है, गुज़र के लिए पांच हज़ार रुपया काफ़ी है। (दरबार में उपस्थित लोगों से) जो कुछ मैंने कहा है उसका शीघ्र पालन होना चाहिए। अब हम लोग जाते है।

भोपटकर—(क्षीण स्वर में) पान······

पो० अफ़सर—नहीं, क्षमा कीजिए।

(वे सब लक्ष्मीबाई को फ़ौजी शिष्ठाचार के लिए प्रणाम देकर शीघ्रता के साथ चले जाते है।)

लाला भाऊ—मुझको आज्ञा हो। अभी अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए जायंगे।

गुलामगौस—केवल गोले भरने की ज़रूरत है तोपों में सरकार।

जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह—सवार और पैदल सब तैयार हैं।

लक्ष्मीबाई - (पर्दे के पीछे से) नहीं। झांसी नगर और राज्य की जनता से भी पूछना है। अवसर नहीं है। आतुरता मत करो।

भोपटकर—बहुत बुरा हुआ, परन्तु धीरज धरना पड़ेगा। क्या आज्ञा है, श्रीमन्त।

लक्ष्मीबाई - (धीमें, संयत स्वर में)अभी तो पीकर रहजाना पड़ेगा। नानासाहब और तात्या से भी पूछना पड़ेगा।

जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह—(क्षुब्ध स्वर में) तब तक क्या किया जाय, सरकार?

लक्ष्मीबाई—तब तक, मेरे सरदारो, धीरज के साथ अवसर की प्रतीक्षा करो। हम लोग सस्त-के लिए परदेसियों का शासन अंगीकार नहीं करेंगे। अभी चुपचाप जाओ। नाना भोपटकर जी, इस प्रकार बर्ताव करो कि अंग्रेजों को सन्देह न हो। मेरी ओर से राज्य वापिस पाने की लिखा पढ़ी करो।

भोपटकर—(हताश स्वर में) जो आज्ञा।

खुदाबख़्श—सरकार हम लोगों के जी की जी में ही रही जाती है।

गुलाम ग़ौस—श्रीमन्त, हम लोग परदेसियों के सामने कैसे सिर झुकावेंगे ?

भोपटकर—उतावली करने से काम नही चलेगा। बुद्धि और विवेक से काम लेना होगा। राजनीति उपायों और परिणामों की कला का नाम है।

लक्ष्मीबाई आज्ञा का पालन करो।

सब लोग जाते हैं। कोई सिर लटकाए, कोई दांत पीसते हुए और सांसें भरते हुए। उनके चले जाने पर रानी दरबार-भवन में आती है। उनके पीछे मुन्दर, मोतीबाई, जूही इत्यादि।)

दामोदरराव—गोरे क्या कहते थे, माता जी ?

लक्ष्मीबाई—(निश्वास को दबा कर) क़िला छोड़ कर हम लोगों को महल में रहना होगा।

दामोदरराव—तो क्या यह राज्य चला जावेगा ?

लक्ष्मीबाई—यह राज्य चला जावेगा तो जाने दो।··· ···नहीं जावेगा। स्वराज्य आवेगा।

दामोदर राव—स्वराज्य क्या ?

लक्ष्मीबाई—अपने सब लोगों का राज्य। बड़े होने पर जानोगे।

मुन्दर—(सिसकते हुए) बाई साहब !

(सब स्त्रियां सिसकने लगती हैं)

लक्ष्मीबाई—(रुद्ध कंठ से) आंसू ! नहीं। यह बल का क्षय करते हैं। (गला साफ़ करके) सोचो, जब छत्रपति शिवाजी के उपरान्त शम्भू जी मारे गए, साहू समाप्त, राजाराम चले गए तब ताराबाई की गांठ में क्या रह गया था ? इतने बड़े मुग़ल सम्राट को ताराबाई कैसे परास्त कर सकीं ! उन्होंने स्वराज्य की बागडोर को कैसे बढ़ाया ! क्या रो रो कर !

(रानी गला बिलकुल साफ़ कर लेती हैं)

मुन्दर (कंठ को संयत करके) इन धूर्त अंग्रेजों ने हमारा राज्य निगल लिया ! हमको बे ठिकाने कर दिया !! निर्बल होगए हम !!!

लक्ष्मीबाई—राज्य मिल जाता तो क्या हम लोग चुप होकर बैठ जातीं ! झांसी का राज्य स्वराज्य-साधना का एक उपाय ही तो था। उपाय अब भी हमारा जारी रहेगा। भगवान कृष्ण की आज्ञा को यदि करो—हमको केवल कर्म करने का अधिकार है, फल का नहीं। छत्रपति के पीछे जिन लोगों ने स्वराज्य के आदर्श को आगे बढ़ाया वे विघ्न-बाधाओं का डटकर सामना करते रहे, उन्होंने उसकी जड़ें प्रबल बनाईं। जिन लोगों की लालसा अपने लिए फलों की ओर गई, वे गिर गए।

मोतीबाई—हम लोगों को सुनसान सा दिख रहा है सब तरफ़।

लक्ष्मीबाई—ऐसा मत सोचो। हिन्दुस्थान किसी के भी नीचे अधिक काल के लिए नहीं दबता। स्वतन्त्रता की लड़ाई का क्रम बनाए रखने वाले लोग पैदा हुए हैं और होते रहेंगे। यदि इस युग में कोई और इस क्रम को आगे नहीं बढ़ायगा तो मैंने अपने कृष्ण के सामने, अपनी आत्मा के भीतर उसका बीड़ा उठाया है। करूँगी और फिर करूँगी। चाहे मेरे पास खड़े होने के लिए हाथ भर भूमि ही क्यों न रह जाय !

मुन्दर—आप की सेवा में हम सब मर मिटेंगी।

लक्ष्मीबाई—मेरी सेवा में नहीं, देश की सेवा में स्वराज्य के लिए।

मोतीबाई—हम स्त्रियों को इस योग्य बना दीजिए, सरकार।

लक्ष्मीबाई—इसीलिए मैंने स्त्रियों की सेना बनानी आरम्भ की। स्त्रियां पुष्ट और बलिष्ठ बनें, अपनी रक्षा करना सीख लें, तभी पुरुष पुरुष बन सकते हैं और तभी स्वराज्य मिल सकता है और बना रह सकता है।

जूही—मुझको कुछ काम सौंपा जाय, सरकार।

मोतीबाई—हम दोनों ने नाचना गाना और अभिनय करना सीखा है। हमलोग सिपाही बनना चाहती हैं। हमलोग वेश्यायें नहीं हैं।

लक्ष्मीबाई—चाहे कोई भी हो। देश के उद्धार में मेरी सहायता करो और मेरी बात को, मेरी आन को रक्खो। तुम लोगों को मैं अपना जासूसी विभाग सौपूँगी! परन्तु हाल में जितना चुपचाप काम कर सकोगी उतना ही अच्छा होगा।

मोतीबाई और जूही—(प्रसन्नता के साथ) ऐसा ही होगा, सरकार।

लक्ष्मीबाई—(सोचकर) काम में कुछ विलम्ब होगा, परन्तु कोई चिन्ता नहीं। दृढ़ हो, पुष्ट हो, बलिष्ठ हो। चलो, हमलोग कार्यसाधन और बल प्राप्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करें।

(वे सब जाती हैं)

दूसरा दृश्य

[स्थान झांसी की एक बड़ी सड़क। डुग्गी पीटने वाला आता है। समय–दिन]

डुग्गी पीटने वाला—खलक भगवान का, मुलक विलायत के बादशाह का हुकुम कम्पनी सरकार का। आज से झांसी अँग्रेजी इलाके में मिला ली गई। सब लोग कर और लगान कम्पनी सरकार को दें। क़ानून के भीतर चलें और क़ानून बर्तें।

(कईबार घूमघाम कर कहता है। भीड़ इकट्ठी हो जाती है।)

एक—हाय! हाय!! हमारी झांसी गई!!! अब परदेसियों का राज हो जायगा!!!!

दूसरा—हमारी आज़ादी छिन गई!

तीसरा—साहब के बंगले पर अर्जी–पुजी के लिए भटकना पड़ेगा!

चौथा—और नाक रगड़ना पड़ेगी।

एक—अब कारीगरी, कलाकारी, पहलवानी सब देश से उठ जायंगी!!!

(पीरअली आता है वह अधेड़ अवस्था का मझोला छरेरा पुरुष है। काइयां और साहसी है। नवाब अलीबहादुर का नौकर है।)

पीरअली – क्यों हाय तोबा मचा रहे हो? अंग्रेज़ी हुकूमत में अन्धेर नहीं होगा। सबको रोज़गार मिलेगा। मनमानी नहीं चलेगी। एक सा बर्ताव सब लोग पायंगे। सब अपना अपना धरम करम पाल सकेंगे। भरोसा न हो तो नवाब अलीबहादुर से पूछ लो। सब बड़े आदमी यही कहेंगे।

(झलकारी आती है)

झलकारी – जो आओ बड़ौ बकील अंग्रेजन कौ। काए खां लगाई जे बड़ी बड़ी पूछें? सरम नईं आउत ऐसी ओछी बात कतन!

पीरअली—कौन है यह?

(डुग्गी वाला फिर डुग्गी पीटता है। झलकारी चली जाती है।)

एक भीड़वाला – वह कोरिन थी। झलकारी। कड़ी बात कहने वाली औरत है वह!

पीरअली—गंवार है। बात करने की तमीज़ नहीं। यहां की औरतें बहुत सिर उठाने लगीं हैं। पर अब अच्छा ज़माना आ रहा है।

दूसरा भीड़वाला—अच्छा ज़माना! क्यों साहब?

भीड़ में से एक—जो झांसी की लटी तकै तिहि खायँ कालिका माई।

(चला जाता है)

पीरअली – यह कौन बेअदब था?

(भीड़ में गुलगपाड़ा बढ़ता है)

भीड़ में से एक – आप कोई परदेशी हैं खां साहब?

पीरअली—जानते नहीं मैं नवाब अलीबहादुर का कारिन्दा हूं? पीरअली मेरा नाम है। दुनियां जानती है!

भीड़ वाला—तभी। तभी।

(भीड़ शोर करती है)

सत्यानास जाय देश-द्रोहियों का !!!!

(डुग्गी पीटने वाला फिर डुग्गी पीटता है। पीरअली आंखे दिखलाता हुआ चला जाता है।)

एक भीड़वाला - इसके मनमें अपनी भूमि के लिए कोई पीर नहीं।

दूसरा—स्वार्थी और नीच है। परदेसियों का तरफ़दार।

तीसरा—नवाब साहब को लगा देंगे अंग्रेज़ जागीर !

एक—उसी के लोभ में और मोह में तो ये देश-द्रोही फंसे हुए हैं।

दूसरा (डुग्गी पीटने वाले से) जारे टुकड़खोर, किसी दूसरे मुहल्ले में डुग्गी पीट। यहां हमारे कान मत फोड़।

(डुग्गी पीटनेवाला सहमता हुआ जाता है।)

तीसरा दृश्य

[स्थान—झाँसी में सड़क पर जूही का घर। एक ओर से तात्या आता है। जूही किवाड़ खोलती है। तात्या को अभिवादन करके उसको भीतर लिवा जाती है। जूही केशजूट में फूल लगाए है समय -रात्रि।]

तात्या—मैं यहां की स्त्रियों का काम देखकर चकरा रहा हूँ। कुछ बातें रानी साहब से मालूम हुईं। कुछ मोतीबाई ने बतलाईं। कुछ तुमसे पूछने आया हूँ। पल्टनों में तुम क्या कर रही हो, जूही ?

जूही—नाचती गाती हूँ और सिपाहियों को समझाती रहती हूँ कि देश के लिए अपनी जान तक दे देना सिपाही का पहला और अन्तिम कर्तव्य है। छावनी में क्या हो रहा है इस बात के जानने की भी कोशिश करती हूँ।

तात्या—कैसा भला लगता मुझको यदि ऐसे अवसरों पर मैं भी छावनी में छिप-लुक कर तुम्हारा काम देखता।

जूही—(सिर हिलाकर) तब तो अभिनय पर से मेरा ध्यान बार २ उचट जाता और शायद मैं पकड़ी जाती और आप भी।

तात्या—(हंसकर) मेरा पकड़ा जाना इतना सहज नहीं है। (गम्भीर होकर) परन्तु जूही, मैं सचमुच मैसूर की यात्रा में एक जगह ज़रा सी असावधानी के कारण पकड़ लिया गया होता। बाल बाल बचा। और, दिल्ली में तो अंग्रेज़ों के एक खानबहादुर नौकर ने पकड़वा ही दिया था, परन्तु राम सीधे थे, इसलिए पहरे वाले एक जाट सिपाही ने अपनी जान पर खेल कर मुझको निकल भागने दिया।

जूही—(घबराहट से सिर हिलाकर) ओह! सरदार साहब, कितना बुरा होता!! हम लोगों का काम चौपट हो जाता!!!

तात्या—एक मनुष्य के समाप्त हो जाने से काम करने वाला का नाता नहीं टूटता।

जूही—आप तो सारे देश को जगाते फिर रहे हैं।

तात्या—बहुत फिरता रहा हूं। और लोग भी घूमे हैं जैसे नानासाहब अजीमुल्ला और अन्य लोग। जनता सामन्तों सरदारों से पीड़ित होने के कारण दुखी है और सामन्त सरदार अपनी आपापन्थी के कारण परस्पर मेल जोल नहीं कर सकते। फिर भी हम लोग अपने काम में जुटे हुए हैं। सेना का भरोसा है। जिस भूमि की जनता है उसी के फूल सिपाही हैं। यहां की छावनी में क्या हो रहा है।

जूही—(उसी प्रकार सिर हिलाते हुए) अंग्रेज़ तरह तरह के लोभ देकर सिपाहियों को बेधरम करना चाहते हैं। सिपाही अपना धरम नहीं छोड़ेंगे। उनमें बहुत गुस्सा छाया हुआ है।

तात्या—यही हाल उत्तर की ओर पूर्व की छावनियों का भी है।

जूही—सिपाहियों को अंग्रेज़ सीख देते हैं कि नमक की भँजाते रहना।

तात्या—सिपाही जिस भूमि के हैं नमक तो उसी भूमि का है। और, उसी भूमि की भँजायँगे।

जूही—मैंने सिपाहियों से यही कहा है।

तात्या - तुम्हारी बुद्धि पर मुझको आश्चर्य है।

जूही—आश्चर्य करिए महारानी साहब की बुद्धि पर जिन्होंने हम स्त्रियों को यह सब समझाया है और जिन्होंने कवायद परेड करा के स्त्रियों की ऐसी पल्टन बनाई है (सिर को अधिक हिला कर) ऐसी पल्टन तैयार कर रही हैं जो कि अंग्रेज़ों के छक्के छुटा देगी। (सिर हिलाने के कारण जूही के केश जूट से कुछ फूल खिसक कर गिर पड़ते हैं। तात्या फूलों को उठाकर उसके केशों में खोंसता है।)

तात्या—तुम सब स्त्रियां स्वतन्त्रता, स्वराज्य और समाज को देवियां हो। ईश्वर से मनाता हूँ कि एक दिन आए, जब इस देश की मुक्ति और तुम्हारे फूलों की महक का सम्मेलन हो।

जूही—(ज़रा दूर हटकर) यदि इस काम के करने में मै या मेरी तरह और स्त्रियां मर जायं तो टूटे हुए फूलों की महक और देश की मुक्ति के मेल को न भूलिएगा आप लोग।

तात्या—(नमस्कार करके) पुरुष यदि पुरुष है, मनुष्य है, तो कभी नहीं भूलेगा, जूही।

जूही—धन्यवाद!

तात्या—मै अब जा रहा हूँ, जूही।

जूही- वह दिन कब आवेगा, सरदार साहब? वह दिन जब हम सब स्वतन्त्र होंगे?

तात्या— हम सब कब स्वतन्त्र होंगे यह अपने मिले हुए प्रयत्न पर टिका है। प्रयत्न का आरम्भ कब होगा यह थोड़े दिन बाद बतला दिया जावेगा। एक ही तारीख और एक ही समय पर होगा वह। अच्छा, मैं अब जाता हूँ।

जूही—(गमनोद्यत तात्या को लालसा के साथ देखती हुई) परमात्मा हम सबको सफल करें।

नात्या— (मुस्कराता हुआ) फूलों की महक अनन्त रहे।

(अभिवादन के बाद तात्या जाता है)

पांचवां दृश्य

[स्थान—झांसी के बाहर छावनी। कुछ सिपाही आते हैं। वे वर्दी में नहीं हैं। समय-दिन]

एक—चर्बी वाले कारतूस फिर जारी किए गए हैं। सुना है कलकत्ते के कारखाने में लाखों करोड़ों की तादाद में बनाए जा रहे हैं!

दूसरा—जीते जी तो इन कार्तूसों को छुएंगे नहीं।

एक—अब तो सहा नहीं जाता।

दूसरा—ज़रा ठहरो। समय आरहा है। फ़िलहाल मनाई है। मुखिया लोग इलाज सोच रहे हैं!

एक—खाक सोच रहे हैं! जब धर्म ही न रहेगा तब आवेंगे हकीम जी इलाज करने!!

दूसरा—उतावली करने से काम बिगड़ जावेगा। बङ्गाल पल्टन मे पांडे ने कुछ साहबों को मारमूर दिया, खुद मारा गया, कोई नतीजा नहीं हुआ।

एक—कूड़ा कर्कट हम साफ़ करें और मोटी तनख्वाहें मारें ये अंग्रेज़ इनकी लड़ाइयां हम लड़ें अपने ही देश वालों के खिलाफ़ और मौजें मिलें इनको! शराब गटकी, कलब घर में पहुंचे और नाचे मटके!! छावनी में हम लोगों से कहा डैमफूल!!! ज़रा सा भी अदब तहज़ीब तो नहीं!!!!

दूसरा—तबाह कर दिया, तबाह! ज़रा ठहरो। (**कान लगाता है। नेपथ्य में घुँघरू से नाचने का शब्द सुनाई पड़ता है**) वह कितना अच्छा नाचती गाती है! चलो न वहां?

एक—नाचती गाती है और बातें भी कितनी मीठी और प्यारी कहती है। चलो। (नेपथ्य की ओर देखकर) वह शायद यहीं आरही है।

(जूही नाचती गाती हुई आती है। उसके पीछे पीछे कुछ सिपाही आते हैं)

* गीत *

मन मेरा कहां गया रे ?
कलियों ने पाला, फूलों ने पोसा,
सूखी पखुरियों में समा गयारे;
मन मेरा····
ऊंचे नीचे पर्वत, लम्बे चौड़े खेत
गहरी भरी नदियों को छोड़ गया रे;
मन मेरा······
पेड़ों ने रोका, थपेड़ों ने टोका,
बाहर के बन्धन में सीज गया रे;
सीज गया रे !
कहां गया रे ?
मन मेरा कहां गया रे ?

एक सिपाही—वाह ! वाह !! खूब !!! मन सीज गया रे, कहां गया रे ? बहुत अच्छा।

जूही—कुछ पैसे मिल जायँ।

एक सिपाही—ज़रूर तुम्हारे नाच गान से बड़ा चैन मिलता है।

जूही—जब सबको चैन मिले तब तो ?

एक—कैसे, बतलाओ न ?

जूही—कमल के फूल को देखा है।

सब—देखा है। फिर ?

जूही—वह क्या कहता है ?

एक—क्या कहता है ?

जूही—वह कहता है मेरे रंग में मिलजाओ। बैरियों को मारो फिर भी मेरे जैसे सुन्दर, सदय और कोमल बने रहो।

कुछ सिपाही—हुँ !!!

जूही—कमल आयगा। एक दिन छावनी में घूमेगा। रोटी भी आयगी। कमल क्रांति का इशारा है। रोटी देश के पेट का सवाल है, पेट का संकेत है। जिसको बाहर वालों ने धर दबाया है, उसका उद्धार करो। कमल कहता है मेरी तरह के होकर, मेरे रङ्ग में रङ्गकर, मेरी प्रकृति में घुलकर। (नेपथ्य की ओर देखकर और कांप कर, फिर तुरन्त स्थिर होकर) अरे वह आ रहा है !!!

(जूही नृत्यगान कर उठती है) मेरा मन कहा गया रे ?

(एक अंग्रेज फ़ौजी अफ़सर आता है। सिपाही घबरा उठते है। जूही रुक जाती है)

अफ़सर—हां, हां, नाचे जाओ।

(जूही फिर नाचने गाने लगती है परन्तु उतने उत्साह से नहीं।)

अफ़सर - (थोड़ी ही देर बाद) बहुत हो गया।

(जूही नृत्यगान बंद कर देती है) तुम छावनी से कितना पैसा कमा ले जाती हो ?

जूही- जब जो मिल जाय हुजूर।

अफ़सर—नाचने गाने के सिवाय कोई और पेशा करती हो ? तुम वेश्या हो ?

जूही—नहीं तो। मै अविवाहित हूं। कुमारी।

अफ़सर—तुम लोगों में विवाह भी होते हैं ?

जूही—अवश्य।

अफ़सर – तुम रानी साहब के महल में भी नाचने गाने जाती हो ?

जूही –(आश्चर्य के साथ)रानी साहब ! नहीं तो । मैं तो कभी नहीं गई । वे तो भजन पूजन करती रहती हैं !

अफ़सर—रानी साहब ने तुमको घोड़े की सवारी नहीं सिखलाई ?

जूही—मैं उनके पास ही नहीं जाती । घोड़े की सवारी क्यों सिखलातीं ?

अफ़सर— और औरतों को तो सिखलाती हैं ?

जूही– सुना है – मुझको क्या मालूम ?

अफ़सर – हां ! हां !! मोतीबाई नाम की वेश्या को जानती हो ?

जूही—वह वेश्या नहीं है । आपसे किसने कहा ?

अफ़सर— मुझसे सवाल करती है ! जानती है कि धक्के देकर निकलवा दूँगा !!

जूही--मैंने आपका क्या बिगाड़ा है ?

अफ़सर— हमारा कुछ बिगाड़ सकती है ? यहा क्यो आती है ?

जूही—पेट भरने । कुछ पैसे मिल जाते हैं ।

अफ़सर—सिपाहियों को बिगाड़ने आती है ।

(सिपाही रुष्ट दृष्टि से एक दूसरे की ओर देखते है)

जूही—मैं तो केवल नाचने गाने का काम करती हूँ ।

अफ़सर—हट यहा से । फिर कभी आई तो कोड़ों से पिटवाऊंगा । कम्बख्त कहीं की । भाग यहा से !!

(जूही उसके सामने बहुत घबराया हुआ चेहरा बनाती है । जब उसकी ओर से मुँह फेर लेती है तब मुस्कराती हुई जल्दी जल्दी चली जाती है ।)

असफ़र—तुम सब लोग बेवक़ूफ़ हो । बिलकुल गधे । लाइन इन ! (क़तार बांध कर खड़े होओ !)

(सिपाही क़तार बांध कर खड़े हो जाते हैं)

अफ़सर—तुम लोगों को शर्म आनी चाहिये। परेड में बड़े बड़े टीके तिलक लगा कर आते हो और बारकों में वेश्याओं को आने देते हो!

(सिपाही सिर नीचा कर लेते हैं)

अफ़सर—तुम लोगों को अभी मामूली सज़ा दी जावेगी। आगे फिर कभी इस तरह की गड़बड़ करते पाए जाओगे तो सख्त सज़ा दी जावेगी। बेत भी लगाए जावेंगे। (सिपाही चुप रहते हैं)

अफ़सर—हमारे धर्म को मानो तो पैसा और मुक्ति दोनों एक साथ मिलेंगे। दुनियां भर के भूत प्रेतों और डाकिनियों पिशाचिनियों से पीछा छूट जावेगा। चारों तरफ़ फ़ायदा ही फ़ायदा है।

सिपाही—हूँ।

अफ़सर—हूँ? अच्छा। राइट एबाउट टर्न। क्विक मार्च!

(सिपाही दायें मुड़कर क़तार बांधे हुए तेज़ी के साथ जाते हैं। उनके पीछे अफ़सर जाता है। वह प्रसन्न है)

छठवां दृश्य

[स्थान—झाँसी का जेल। जेल शहर के बाहर की सड़क पर है। फाटक बन्द है। भीतर चहल पहल है। सन्तरियों के टहलने का शब्द हो रहा है। समय—दिन]

नेपथ्य से—साहब के आनेका समय हो गया है। गुलगपाड़ा बन्दकरो।

(कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर आते हैं। उनके आते ही जेल का फाटक खोलकर जेलर बाहर आता है और प्रणाम करता है। जेलर मुसलमान है, दाढ़ी रखाये हुए हैं जिसके सिरे कानों पर उमेठ कर चढ़ाए हुए हैं।)

कमिश्नर—तुम जेलर है?

जेलर—हुज़ूर। —

कमिश्नर—दाढ़ी को नीचा करो। डाकू बनकर हमारे सामने कभी मत आया करो। बदतमीज़।

(जेलर दाढ़ी छुटकाकर नीची कर लेता है और सिर झुका लेता है।)

कमिश्नर—हम सागरसिंह डाकू को देखना मांगते हैं।

जेलर—हुजूर। (जेलर मार्ग दिखलाता हुआ उन दोनों को जेल के भीतर ले जाता है। भीतर अनेक क़ैदी हैं जो हथकड़ियाँ और बेड़ियां पहिने हैं।)

कमिश्नर—सागरसिंह इनमें से कौन है?

(सागरसिंह सामने आता है। वह हट्टा कट्टा पुरुष है। दाढ़ी रखाए है। आंखों में काइयांपन और क्रूरता है, सटे हुए ओठों पर दृढ़ता और अभिमान।)

कमिश्नर—तुम्हारा क्या नाम है?

सागरसिंह—आपको मालूम नहीं?

कमिश्नर—तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता हूँ।

सागरसिंह—बरवासागर के पास, यहां से चौदह मील एक गांव है। वहां का रहने वाला हूँ।

कमिश्नर—तुमने यह पेशा क्यों अपनाया?

सागरसिंह—क्योंकि इससे बढ़िया और कुछ नहीं मिला।

कमिश्नर—हमारी फ़ौज में नौकरी क्यों नहीं कर ली? अच्छा वेतन मिलता।

सागरसिंह—हमारे घरानेमें अफ़सरी होती आई है। मै कोरी सिपाही गीरी करता!

कमिश्नर—तुम धीरे धीरे सूबेदार तक हो सकते थे।

सागरसिंह—हमारे पुरखों की मातहती में पांच पांच हज़ार सिपाहियों ने काम किया है। सेनापतियों के घराने के होकर हम हवालदारी सूबेदारी करते?

कमिश्नर—ओह! जनरल बनना चाहता था!!

सागरसिंह—क्यों जन्डैल बनना कोई बड़ी बात है ?

कमिश्नर—डाकू से जनरल ! इस प्रदेश में सब अजीब ही अजीब हैं। जनरल डाकू हो जाता है तब डाकू से जनरली की तरक्की मामूली बात है। तुमको मालूम है सागरसिंह...... .....?

सागरसिंह – कुंवर सागरसिंह कहिए। मुझको अकेले नाम से कोई नहीं पुकारता।

कमिश्नर—ओह ! ओह !! अच्छा कुँवर सागरसिंह तुमको मालूम है कि इसी क़ैदखाने में फांसी घर है और मुझको फांसी देने का अधिकार है। परसों तुमको फांसी दी जायगी—कल तुम्हारा मुकद्दमा होगा।

सागरसिंह—मुझ अकेले कुंवर सागरसिंह को ?

कमिश्नर - तुम्हारे साथ और कौन कौन हैं ?

सागरसिंह— बहुत से हैं।

कमिश्नर नाम बतलाओ। बतलाओगे न ?

सागरसिंह—क्यों बतलाऊँ ! क्या पड़ी है ? फांसी तो है, मुकद्दमे का तो ढकोसला है। फांसी की बात पहले मुकद्दमे की बात पीछे !!

कमिश्नर—यदि सच सच बतला दोगे तो फ़ायदा ही फ़ायदा है। तुम्हारे बयान से अगर तुम्हारे साथी पकड़े गए तो तुम छोड़ दिए जाओगे: कुछ इनाम भी मिलेगा।

सागरसिंह—बतला दूंगा, परन्तु इन हथकड़ियों, बेड़ियों के बोझ के मारे और भूखों प्यासों अक़ल बिगड़ गई है। आज ज़रा आराम मिल जाय तो कल सबेरे ही बतला दूंगा। आप अपने वचन पर पक्के रहना।

कमिश्नर - ज़रूर। (कमिश्नर संकेत से जेल दरोग़ा को अपने निकट बुलाता है) कुँवर सागरसिंह का बोझ हल्का कर दो और अच्छा खाने को दो। हम सबेरे फिर आयंगे। अच्छा सागरसिंह कुं० सागरसिंह, सबेरे सब बात बतलाओ।

सागरसिंह बहुत अच्छा हुजूर।

(कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर जाते हैं। उनके चले जाने पर दरोगा सागरसिंह का बोझ हलका कर देता है— हथकड़ी बेड़ियाँ खोल देता है।)

जेलर—कुंवर साहब, मैं आपके लिए ब्राह्मण के हाथ का बनाया हुआ बहुत बढ़िया खाना अभी मगवाता हू ।

(जेलर जाता है। सागरसिंह सीटी बजाता हुआ टहलने लगता है। जेलर एक ब्राह्मण रसोइए के हाथों बढ़िया भोजन लिवा लाता है। सागरसिंह खाता है और पानी पीकर निश्चिन्त होता है।)

जेलर – आपके साथ कितने आदमी थे, कुवर साहब ?

सागरसिंह—कमसे कम सत्तर, पचहत्तर हैं—जैसे हमारे नातेदार मात्र हमारे साथ है। हमारा राज्य फिर किसी दिन होगा दरोगा जी।

जेलर—जहा आपका आसन पड़जाय वहीं आपका राज है कुंवर साहब।

सागरसिंह—अब मुझे चैन से लेट जाने दीजिए। आराम के साथ सब के नाम में दूंगा। कल साहब को सबेरे ही बतलाना है न ?

जेलर—बहुत अच्छा, मैं जाता हू। राम, राम कुंवर साहब। सिपाही मेरे साथ आवें सब कैदियों को लेकर। कुवर साहब को आराम करने दो।

(जेलर सिपाहियों और अन्य कैदियो के साथ जाता है। सागरसिंह लेट जाता है। करवटें ले लेकर कभी गाता है, कभी सीटी बजाता है। फिर खड़े होकर इधर उधर आंख पसारता है। अपने को सुरक्षित समझकर जेल से निकल भागता है। जेल में हड़बड़ हो उठती है। सागरसिंह की खोज की जाती है। वह नहीं मिलता है। जेलर बहुत परेशान होता है।)

सातवां दृश्य

[स्थान महल के सामने रानी का पुस्तकालय और पुस्तकालय के आगे रानी का बगीचा। लक्ष्मीबाई और मुन्दर पुरुष सैनिक के वेश में आती हैं। उनके केश पीछे की ओर साफेके बाहर कुछ निकले हुए है। दोनों कमर में तलवार और पिस्तौल लटकाए हुए हैं। समय--दिन।]

लक्ष्मीबाई मुन्दर, अंग्रेज़ों के समझ मे क्या यह छोटी सी बात भी नहीं आती कि हिन्दू विधर्मी नहीं हो सकते ?

मुन्दर—वे मतान्ध हैं और मदमत्त। देखिए न, जेलर को उस दिन बुरी बुरी गालियां दी और जूतों की ठोल से मारा जब रात में सागर-सिंह डाकू निकल भागा था।

लक्ष्मीबाई—वह किसी समय अपने क़िले के एक फाटक का अफ़-सर था।

मुन्दर—और चढ़ी बरात के दूल्हे को पालकी पर से उतार दिया! जिसको कोई भी हिन्दू राजा स्वप्न में भी नहीं कर सकता।

लक्ष्मीबाई—अब घड़ा भर गया है, मुन्दर।

(नेपथ्य में जनना के एक समूह का फाग-गीत सुनाई पड़ता है। जो लोटे पर बांस की कमचीकी चाट के स्वर और छोटीसी ढोलकी के ताल पर गाया जारहा है। गीत पहले निकट सुनाई पड़ता है और फिर दूरी में हटता हुआ विलीन हो जाता है। लक्ष्मीबाई और मुन्दर ध्यान से सुनती हैं)

मुन्दर—सरकार, कितने सीधे सादे स्वर हैं ये!

लक्ष्मीबाई—विधर्मी होने के बाद फिर ये क्या कभी अपनी फागें गा सकेंगे ? इनके बच्चे किल्ली डण्डा और कबड्डी छोड़कर फिर क्या खेलेंगे ? होली, दिवाली, दशहरा यहांसे सब चल देंगे ? स्त्रियां ऐसी सुन्दर वेशभूषा

छोड़कर कौन सा स्वांग बनावेंगी? गीता, रामायण इत्यादि का क्या होगा? (पुस्तकालय की ओर देखकर) इन पुस्तकों को क्या दीमक खाएगी? अथवा क्या ये भस्म कर दी जायंगी? सुन्दर, अब समय आ गया है। मैं लड़ूँगी अपनी जनता के लिए, उसकी कला और संस्कृति के लिए, उसके धर्म के लिए मरूंगी। सुन्दर, वेद, शास्त्र, पुराण, गीता सब अमर हैं। इनको कोई नहीं मिटा सकेगा! कभी नहीं!! कभी नहीं!!!

सुन्दर—(धीमे स्वर में) सरकार ने इसी के लिए तो आज लक्ष्मी सेना के अफ़सरों को बुलाया है।

लक्ष्मीबाई— (बहुत धीमे स्वर में) हां सुन्दर, मैं भूली नहीं हूँ। अंग्रेज़ों के हाथ से अपने लोगों का अपमान न सह सकने के कारण जी भर भर आता है। (साधारण स्वर में) जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह इत्यादि को भी बुलाया है।

सुन्दर—सरकार, पहले स्त्री अफ़सरों का आपको निरीक्षण करना है।

(नेपथ्य में पैरों की आवाज़ सुनाई पड़ती है। लक्ष्मीबाई उसी ओर देखने लगती हैं। उसी समय पुरुष योधा के वेश में राधारानी बख्शिन, सुन्दर, काशी, मोती और जूही आती हैं। वे क़तार में आती हैं और क़तार में खड़ी हो जाती हैं। उनकी वर्दी अफ़सरों की है, रङ्ग लाल, तलवारें और पिस्तौलें लिए हैं। लक्ष्मीबाई उन सबका निरीक्षण करती हैं। वे फ़ौजी प्रणाम करती हैं। लक्ष्मीबाई प्रति नमस्कार देती हैं।)

लक्ष्मीबाई—समय आ रहा है। इकत्तीस मई ग्यारह बजे दिन। अपनी सेना के साथ तैयार रहना। नियन्त्रण, व्यवस्था और अनुशासन में कमी न आने पावे। जब तक मेरी आज्ञा न मिल जावे हथियार पर हाथ न डालना। इकत्तीस तारीख़ के लिए तैयार रहना।

सब—जो आज्ञा।

लक्ष्मीबाई—तुम लोगों को तोप का चलाना भी शीघ्र सिखलाया जावेगा।

सब—हम सब सीखेंगी।

लक्ष्मीबाई—अपने आदर्श के लिए, अपनी बात के लिए, अपनी आन पर बलिदान होने के लिए तैयार हो? तुम्हारी सेना तैयार है?

सब—तैयार हैं।

लक्ष्मीबाई—तो परमात्मा का नाम लो और प्रण को प्राणों की गांठ में बांधो। हर हर महादेव!

सब—हर हर महादेव! हर हर महादेव!! हर हर महादेव!!!

लक्ष्मीबाई—अब चुपचाप महलों में चलो।

(सब जाती हैं। लक्ष्मीबाई और सुन्दर रह जाती हैं। दूसरी ओर से जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह आते हैं वे लक्ष्मीबाई को फ़ौजी प्रणाम करते हैं।)

लक्ष्मीबाई—समय आ रहा है। नाप तौल के साथ काम करने की आवश्यकता है। जैसे ही मेरा सम्वाद पहुंचे सवारों और पैदलों को लेकर आ जाना।

दोनों—जो आज्ञा।

लक्ष्मीबाई—संयम और अनुशासन से काम लिया जावे।

(वे दोनों मूठ की ओर से लक्ष्मीबाई को अपनी तलवारें नज़र करते हैं।)

लक्ष्मीबाई—(ज़रा सा सिर हिलाकर नमस्कार करके) शपथ लो कि तुम्हारी तलवार प्रजा पीड़न और किसी भी बुरे काम में कभी उपयोग नहीं की जावेगी।

दोनों—हम लोग शपथ लेते हैं।

लक्ष्मीबाई—अब परमात्मा का नाम लो और उस पल की प्रतीक्षा के लिए अपने ठौर पर जाओ। हर हर महादेव!

दोनों—हर हर महादेव! हर हर महादेव!! हर हर महादेव!!!

(वे दोनों जाते हैं)

लक्ष्मीबाई – परदेसियों को हराया गया है और फिर हराया जा सकता है। क्यों मुन्दर ?

मुन्दर—हां सरकार।

लक्ष्मीबाई—अब महल चलो। कुछ लिखापढ़ी का काम करना है।

(दोनों जाती हैं)

आठवाँ दृश्य

[स्थान—झांसी के बाहर अंग्रेजी फ़ौज की छावनी। नेपथ्य में हल्लाचाला मचा हुआ है। 'मारो, मारो' 'भागो, बचो' की पुकारें लग रही हैं। बन्दूकें तलवारें लिए हुए कभी हिन्दुस्थानी सिपाही और कभी अंग्रेज अफ़सर आते और चले जाते हैं। कोई रुष्ट, कोई खीझे हुए और कोई चिन्तित। कुछ देर तक ऐसा होता रहता है। इसके बाद नेपथ्य में बन्दूकों के चलने की आवाज़ होती है। दो अंग्रेज अफ़सर आते हैं। वे घबराये हुए है। समय दिन।]

पहला—बच्चो और औरतों को कहां भेजा जाय ? रानी के महल में ?

दूसरा तारा-गढ़ पास है, बिलकुल छावनी के सिरे पर, पर उसको बाग़ियों ने घेर लिया है। महल दूर है, क़िला पास।

पहला—महल ठीक रहेगा। रानी बहादुर और नेक हैं।

दूसरा—बाग़ी महल को घेर लेंगे। उनके पास तोपें भी हैं। क़िले में ले चलना चाहिए बाल बच्चों को। या ऐसा करो—तुम रानी के पास जाओ। मैं क़िले को संभालने की कोशिश करूंगा। कुछ राजभक्त सिपाही अब भी अपने पास है। उनको क़िले में भेजे देता हूं। फिर जहां मन भरेगा बाल बच्चों को पहुंचा देंगे।

(नेपथ्य में फिर धड़ाके होते हैं)

पहला—अब एक पल की भी देर नहीं करनी चाहिए। चलो······

दूसरा--चलो.....नवाब अलीबहादुर को भी खबर भेजता हूँ। उनका कारिन्दा पीरअली आया था। दतिया और ओर्छा से मदद मँगाने की बात कहता था। शायद वहां से कुछ फ़ौज आजाय।

(नेपथ्य मे फिर शोर होता है)

दोनों—चलो। (नेपथ्य की ओर देखकर।) वे लोग इसी तरफ़ आ रहे हैं।

(वे दोनों तेज़ी के साथ जाते हैं। दूसरी ओर से कुछ हिन्दुस्थानी सिपाही आते है। 'कहां गए वे शैतान ? कहां गए वे शैतान, चिल्लाते हुए वे इधर उधर दौड़ पड़ते हैं।

नवाँ दृश्य

[स्थान—झांसी नगर में चौड़ी सड़क पर रानी लक्ष्मीबाई के महल का ऊपरी भाग। खिड़कियां बन्द हैं महल का फाटक बन्द है। कुछ सिपाही नङ्गी तलवारें लिए हुए आते हैं जो खून से भीगी हुई है] समय—दिन।

कुछ सिपाही—शहर में कही छिपे मिलें तो यहां भी मारो !

कुछ और सिपाही—बनियो को लूट लो।

कुछ और—अनाज की दूकानें हाथ में कर लो।

कुछ और—अब हमारा राज्य हो गया है।

कुछ और—जो हमारी न माने उसको खतम कर दो।

(इन सिपाहियों का रिसालदार आता है। वह मुसलमान है। दाढ़ी नहीं रखे है। मूंछें लम्बी हैं। उसके आते ही सिपाही चुप हो जाते हैं।)

—

रिसालदार—खलक खुदा का, मुलक बादशाह का, राज रानी लक्ष्मीबाई का।

(तलवार को ऊपर उठाकर तीन बार महल के फाटक के सामने कहता है। सिपाही 'महारानी लक्ष्मीबाई की जय' चिल्लाते हैं। और सिपाही आकर इकट्ठे हो जाते हैं। ऊपर की खिड़कियां खुलती हैं। हाथ जोड़कर नमस्कार करती हुई लक्ष्मीबाई दिखलाई पड़ती हैं। पीछे सशस्त्र सखियां। लक्ष्मीबाई हीरों का कण्ठा पहिने हुए हैं। सिपाही फिर 'महारानी लक्ष्मीबाई की जय' का नारा लगाते हैं। रानी फिर नमस्कार करती हैं और चुप रहने के लिए हाथ का संकेत करती हैं। रिसालदार आगे बढ़ता है।)

लक्ष्मीबाई—क्या है ? क्या तुम रिसालदार कालेखां हो ?

रिसालदार—(फ़ौजी प्रणाम करने के बाद) हुज़ूर का ताबेदार कालेखां रिसालदार मैं ही हूँ।

लक्ष्मीबाई—(रिसालदार की आंख में आंख मिलाकर – रिसालदार की आंख नीची पड़ जाती है।) इन तलवारों में रक्त कैसे लगा ?

रिसालदार—हुज़ूर, श्रीमन्त सरकार, अंग्रेज़ों ने हमारे साथ लगातार बुरा सलूक किया। सिपाहियों ने उनको मार डाला।

सिपाही—और उनके बाल बच्चों को भी।

लक्ष्मीबाई—(तीव्र स्वर में) इन्हीं कर्मों से स्वराज्य और बादशाही स्थापित करोगे ? तुमको लाज आनी चाहिए ! तुम लोगों ने घोर दुष्कर्म किया है !! क्या तुम समझते हो कि संसार से सब नियम संयम उठ गए ? ऊंचे आदर्शों की प्राप्ति के लिए नीचे उपाय का प्रयोग, महायज्ञ की साधना के लिए पतित अनुष्ठान का उपयोग, शान्त निद्रा के लिए नशे का काम में लाना, क्या कभी भी उचित कहे जा सकते हैं ?

(सिपाही सहमकर तलवारें और सिर नीचे कर लेते हैं)

रिसालदार—हुज़ूर.........

लक्ष्मीबाई—और, तुम लोगों में से कुछ झांसी नगर को लूटने की भी चर्चा कर रहे थे ! तुम अपने को इतना भूल गए ! क्या तुमको यही सिखलाया गया है ?

रिसालदार—हुज़ूर के हुकुम के खिलाफ़ अगर आगे कुछ भी हो तो हम सब तोप से उड़ा दिए जायं। जो आज्ञा हो हम सब उसका पालन करेंगे।

लक्ष्मीबाई—तो मैं यह कहती हूं कि छावनी को लौट जाओ। सोचकर सन्ध्या तक आज्ञा दूंगी कि आगे तुमको क्या करना है।

रिसालदार—(सिपाहियों से) क्या कहते हो?

कुछ सिपाही—छावनी को चलो।
कुछ और—दिल्ली चलो। वहां मज़ा रहेगा।
कुछ और—कुछ रुपया तो गांठ में करलो।
कुछ और—शहर से रुपया उगाहो।
कुछ और—झांसी को रानी साहब के हवाले करके दिल्ली चलो।

(जल्दी जल्दी)

रिसालदार—(सिपाहियों से) सब चुप रहो! (लक्ष्मीबाई से) सरकार, सिपाही भूखे हैं।

लक्ष्मीबाई—अंग्रेज़ों ने मेरे पास रुपया नहीं छोड़ा। हमारा रुपया आगरे के खज़ाने में जमा है। कहां से रुपया लाऊँ?

रिसालदार—आप मालिक हैं - हमलोग मजबूर हैं। कहां न कहां से हमको गुज़र के लिए रुपया चाहिए।

(लक्ष्मीबाई अपना हीरों का कंठा उतार कर रिसालदार की अंजलि में डाल देती है। वे सब 'महारानी लक्ष्मीबाई की जय' कहके प्रणाम करते हैं।)

लक्ष्मीबाई—इससे तुम्हारी सारी अटकें पूरी हो जायंगीं। मनुष्यों की तरह यहां से जाओ और अदब क़ायदे के साथ दिल्ली पहुचो। कहीं भी लूट मार मत करना। हिन्दुओं को गंगा और मुसलमानों को कुरान की सौगन्ध है।

वे सब—हमलोग सौगन्ध खाते हैं।

(वे सब प्रणाम करके 'महारानी लक्ष्मीबाई की जय' कहते हुए जाते हैं। उनके जाते ही कुछ नगर निवासी आते हैं। वे भी जय जयकार करते हैं।)

लक्ष्मीबाई—(हाथ जोड़कर) झांसी का क्या किया जाय? तुम लोगों की क्या इच्छा है।

वे सब—महारानी साहब हमारी हैं। हम महारानी साहब के हैं। हमारा राज हो गया। महारानी साहब बन्दोबस्त करें।

लक्ष्मीबाई—हां तुम्हारा राज्य, हम सबका राज्य, स्वराज्य। तुम लोगों की मर्ज़ी है मैं राज्य की बागडोर हाथ में लूँ?

वे सब—अवश्य, सरकार, अवश्य।

लक्ष्मीबाई—अच्छा, तो जाओ, अपना अपना काम देखो और बस्ती के मुखियों, पञ्चों और अगुओं से कहदो कि अपने अपने पुरों का प्रबन्ध करें। सांझ सांझ तक मेरी सेना आई जाती है। मैं कल ही नगर भरके प्रमुख लोगों को महल में इकट्ठा करूँगी और उनकी सलाह सम्मति से राज का काज चलाऊंगी।

(वे सब जय जयकार करते हुए जाते हैं)

लक्ष्मीबाई—सुन्दर, तुम रकसा गांव जाकर तुरन्त जवाहरसिंह इत्यादि को सेना सहित ले आओ।

यवनिका

*

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—रानी लक्ष्मीबाई का महल। लक्ष्मीबाई, मुन्दर, सुन्दर और काशीबाई। टहल टहल कर बातें कर रही हैं। समय रात्रि। ऋतु वर्षा को।

काशीबाई—खुदाबख्श को बरवासागर गए बहुत दिन हो गए हैं। जान पड़ता है कि सागरसिंह पकड़ा नहीं जा सका है।

लक्ष्मीबाई—मै इस बरसात के मारे हैरान हूँ। कभी रिमझिम तो कभी मूसलाधार बरसता है। बन्द होने का नाम नहीं लेता।

मुन्दर—कई दिन से सूर्य के दर्शन नहीं हुए। सरकार घुड़ सवारी नहीं कर पाई हैं।

लक्ष्मीबाई—खुले तो थोड़ा सा बाहर चलूं फिरूं।

(मोतीबाई आती है। वह उदास है)

मोतीबाई—सरकार।

लक्ष्मीबाई—तू मुँह क्यों लटकाए है? क्या समाचार है? तुरन्त कह डाल।

मोतीबाई—सरकार, सागरसिंह के साथ युद्ध हुआ। वह निकल भागा। खुदाबख्श—जी घायल होकर बरवासागर के क़िले में पड़े हैं। बेतवा नदी इतनी चढ़ी है कि तीन दिन से नाव ही नहीं लगी! खबर देने वाला बड़ी कठिनाई से यहां तक अभी आ पाया है!!

लक्ष्मीबाई—डाकुओं का पता लगा कहां है ?

मोतीबाई—सरकार, बरुआसागर से कुछ दूर पहाड़ों की खोह में कहीं हैं। इस घोर बरसात के कारण उनका कुछ नहीं हो पा रहा है।

(लक्ष्मीबाई ओंठ को जरा सा दाबती है, मुस्कराती है और वैसे ही टहलती हुई कुछ सोचती है।)

लक्ष्मीबाई—बरसात की घोरता और कठोरता तो सबके लिए ही समान है। डाकू इस ऋतु में भी मौज से विचरण कर सकते हैं! जनता को इच्छापूर्वक सता सकते हैं !! और हम कुछ नहीं कर सकते !!!

सुन्दर—सरकार, वे लोग बड़े कट्टर होते हैं। और [illegible] वही है जो अंग्रेज़ी राज में जेल तोड़ कर भाग निकला था !

लक्ष्मीबाई—(उपेक्षा के साथ) होगा। अंग्रेज़ी राज म भाग निकला होगा। मेरे राज्य में नहीं बच पावेगा। मुन्दर !

मुन्दर—सरकार।

लक्ष्मीबाई—जवाहरसिंह और लाला भाऊ तथा नाना भोपटकर से कहो कि राज्य का पक्का प्रबन्ध रक्खें। मैं प्रातः काल के स्नान ध्यान के बाद ही बरुवासागर जाऊंगी।

मुन्दर—जो आज्ञा सरकार। परन्तु सरकार ऐसी भयङ्कर वर्षा में !

मोतीबाई—तिस पर नदी बे हिसाब बाढ़ पर है !!

लक्ष्मीबाई—परन्तु उस बाढ़ पर घोड़े चढ़ सकते हैं। रघुनाथसिंह को सूचना दो। वे अपने साथ कुछ सवार ले लें।

मुन्दर—हम लोग सरकार ?

लक्ष्मीबाई—भयंकर वेतवा की झागदार धारा पर घोड़े को लेजा सकोगी ? है साहस ?

मुन्दर—सरकार की छाया जिस पर पड़ जाती है उसमें साहस आ जाता है फिर हम लोगों के सिर और पीठ पर तो हाथ ही है।

काशीबाई—मैं भी चलूंगी।

मोतीबाई—सरकार मुझको भी आज्ञा मिले।

मुन्दर—मैं क्या यहीं छोड़ दी जाऊंगी ?

लक्ष्मीबाई (अनुग्रह की मुस्कराहट के साथ) मैंने कब रोका ? बेतवा तुम्हारी घुड़सवारी की परीक्षा लेगी और सागरसिंह तुम्हारे हथियारों की परख करेगा।

वे सब—हम सब लोग उत्तीर्ण होंगी, सरकार।

लक्ष्मीबाई—कदाचित् नाव लग जाय। न भी लगे तो दृढ़ होकर चलना है इस निश्चय के साथ कि उस बिकट चढ़ी हुई नदी को पार करना है और सागरसिंह को उसके समूह समेत मरा हुआ या जीवित पकड़ना है।

वे सब—ऐसा ही होगा !

दूसरा दृश्य

[स्थान—बरवासागर से कुछ दूर के जंगल पहाड़। सागरसिंह अपने साथियों सहित एक छाया के नीचे पहाड़ों की एक दून में छिपा हुआ है। नेपथ्य में घोड़ों की टापों का शब्द होता है समय—दिन]

(लक्ष्मीबाई अपनी सहेलियों के साथ आती है। उसी समय नेपथ्य में बन्दूकें चलती है। डाकू घेरे जारहे हैं।)

लक्ष्मीबाई—जहां घोड़े बांध आई हो वहीं की आड़ ठीक है। डाकू बच निकलने के लिए उसी जगह हो कर आयंगे। चलो, मैं ठिा बतलाती हूँ।

(वे सब चुपचाप जाती हैं। डाकू छिपे लुके आते हैं और चले जाते हैं। उनमें सागरसिंह भी है। सागरसिंह गले में सोने की सांकल डाले है और उस के कपड़े कुछ ज्यादा चटकदार हैं। उनके जाने पर बन्दूकें चलती हैं। डाकू भागते हुए आते हैं। फिर घोड़ों की टापें का स्वर होता है। लक्ष्मीबाई कहती हैं— यही

है सागरसिंह ! जाने न पावे !! जीवित पकड़ना है !!! घोड़े बढ़ाओ !!!! बीच में करलो उसको !!!!! फिर टापों की आवाज़ आती है। सागरसिंह पकड़ लिया जाता है। उसको पकड़े हुए लक्ष्मीबाई और मुन्दर आती हैं।

मुन्दर—जानते हो यह किसकी बज्र फांस है ?

सागरसिंह—ओफ़ ! झांसी की महारानी !! रामरे !!! मेरी तो कमर टूट गई !!!! पसलियां चूर होगई !!!!! कसनो के मारे हड्डियां भुस हुई जारही हैं, भुस !!!!!!

लक्ष्मीबाई—इसको बरवासागर लेचलो। वहीं इसका न्याय करूँगी।

[वे सब जाते हैं। नेपथ्य में घोड़ों की टापों का शब्द होता है जैसे जारहे हों। शब्द दूर होता चला जाता है]

तीसरा दृश्य

[स्थान—बरवासागर के क़िले का भीतरी भाग। मञ्च खाली है। एक ओर नीचे कुछ सैनिक बैठे हैं वे पुरुष सैनिक के वेश में नहीं हैं। समय—दिन।]

एक सैनिक—खुदाबख्श घायल हो गए, सागरसिंह का गिरोह है प्रबल।

दूसरा—परन्तु अब अपनी रानी के पराक्रम से उसका बच निकलना सम्भव नहीं।

पहला - बरसात के दिन हैं, डांग घनी है, गिरोह भी भारी है, गिरफ्तार करना शायद आसान न हो।

तीसरा—तुम्हारा ढीलापन ही तुम्हारे मन में संदेह उत्पन्न करता है। सागरसिंह का बच जाना असम्भव है। मैं तो रानी के शौर्य.........

(नेपथ्य में कुछ पैरों की आहट होती है उसी ओर देखने लगता है। सैनिक वेश में रानी का सहेलियों सहित प्रवेश। सैनिक

उठ खड़े होते हैं। रानी ऊँचे आसन पर बैठती हैं। मुन्दर, सुन्दर, काशीबाई और मोतीबाई भी अपने अपने स्थान ग्रहण करती हैं। वे भी पुरुष वेश में हैं।)

लक्ष्मीबाई—सागरसिंह को पेश करो।

(सागरसिंह पहरे में लाया जाता है)

(लक्ष्मीबाई के आंख मिलाते ही सागरसिंह झुक कर प्रणाम करता है और उनके पैरों की ओर हाथ बढ़ाता है मानो पैर छूना चाहता हो। पहरेदार जकड़ लेते हैं।)

लक्ष्मीबाई—तुम्हारा नाम ?

सागरसिंह—कुंवर सागरसिंह, श्रीमन्त सरकार।

लक्ष्मीबाई—(मुस्कराकर) कुंवर सागरसिंह !!!

(उस मुस्कराहट से सागरसिंह कांप जाता है)

लक्ष्मीबाई—कुंवर होते हुए यह निकृष्ट आचरण कैसा ?

सागरसिंह—सरकार, हमारा वंश सदा लड़ाइयों में भाग लेता रहा महाराज ओर्छा की सेवा में लड़ा। महाराज छत्रसाल की सेवा में रह कर युद्ध किए। मेरे पुरखे सेनाओं के नायक रह कर इस देश की रखवाली पर अपना खून चढ़ाते रहे। जब अंग्रेज़ आए हम लोगों ने उनकी अधीनता अङ्गीकार नहीं की। हमको दबाया गया। हम बिगड़ खड़े हुए। और डाके डालने लगे। परन्तु सरकार मैं अपने लिए और अपने साथियों के लिए गङ्गा जी की शपथ लेकर कह सकता हूँ कि हम लोगों ने स्त्रियों और ग़रीबों को कभी नहीं सताया !

लक्ष्मीबाई—इन दिनों तुम लोगों ने जिन पर डाके डाले वे सब मेरी प्रजा हैं, और जैसे गरीबों की रक्षा का भार मेरे ऊपर है, उसी प्रकार धन सम्पत्ति वालों की रक्षा का भी। डाके के लिए दण्ड प्राणों का है। तैयार हो जाओ। तुम्हारे साथी भी न बचेंगे और न तुम्हारे और उनके घर। मिट्टी में मिलवा दूँगी।

सागरसिंह—(कनखियों इधर उधर देखकर और लक्ष्मीबाई की बड़ी आंखों में करालता का अनुभव करके) सरकार, मैं कुछ प्रार्थना कर सकता हूँ ?

लक्ष्मीबाई—कहो।

सागरसिंह—मेरे मारे जाने से बागी घटेंगे नहीं। सरकार के कुछ ठाकुर कम हो जावेंगे।

लक्ष्मीबाई—(मुस्करा कर) तुमको यदि छोड़ दूँ क्या करोगे।

सागरसिंह—श्रीमन्त सरकार से झूठ नहीं बोलूंगा। सरकार के राज्य में डाके नहीं डालूंगा और न अपने सङ्गियों और नातेदारों को ही डालने दूँगा। सरकार के राज्य के बाहर ज़रूर यही काम करना पड़ेगा हम लोग खड्ग जीवी हैं।

लक्ष्मीबाई—पुरुषार्थ और पाशविकता, शूरता और क्रूरता, स्वाभिमान और अहङ्कार, सैनिकता और गुण्डापन, प्रभाव और आतङ्क ये सब अलग अलग और परस्पर विरोधी हैं। अमानुषिकता कहीं भी करो, है बर्बरता ही। यदि मैं कहूँ कि डाका डालना बिलकुल छोड़ दो तो इसके बदले में क्या चाहोगे ?

सागरसिंह—(हर्षोन्मत्त सा होकर) तो सरकार, तो सरकार के चरणों की नौकरी चाहूँगा, जहां रहकर स्वराज की लड़ाई में अपने को होम दूंगा। अपने साथियों और नातेदारों समेत भर्ती हो जाऊंगा।

लक्ष्मीबाई—तुम्हारे साथी कितने हैं ?

सागरसिंह—जङ्गल में १५, १६ थे। गांवों में ६०, ६५ हैं और अदृश्य सहायक मेरे सब नातेदार।

लक्ष्मीबाई—तुम सब से बड़ी सौगन्ध किसकी मानते हो ?

सागरसिंह—गङ्गा जी की, सरकार के चरणों की, अपनी तलवार की। मैं इन तीनों की सौगन्ध खाता हूँ, अपने साथियों समेत सरकार की सेना में भर्ती हूंगा और स्वराज की लड़ाई में अपने को होम दूँगा।

लक्ष्मीबाई—मैं तुम्हारी सौगन्ध को स्वीकार करती हूँ। सिपाहियो, इनको छोड़ दो।

(सिपाही उसको छोड़ देते हैं)

लक्ष्मीबाई—अब कहां जाओगे ?

सागरसिंह—सीधा झांसी, सरकार।

लक्ष्मीबाई—नहीं, अपने साथियों को लेकर यहां पर आओ! मैं तब तक बरवासागर को नहीं छोड़ूंगी जब तक कि तुम अपने सब साथियों को लेकर मेरी शरण में नहीं आए।

सागरसिंह—जो आज्ञा, श्रीमन्त सरकार। मैं जाऊं ?

लक्ष्मीबाई—हां, जाओ। सच्चे कुंवर बनने का प्रयत्न करो। आगे जितने लोग अनोखी सूरवीरी के काम करेंगे उन सबको मैं कुंवर की पदवी दूंगी। उनका वर्ग राज्य के कागज़पत्रों में 'कुंवर मण्डली' के नाम से लिखा जावेगा।

सागरसिंह—परमात्मा मुझे कुंवर कहलाने योग्य बनावें।

(प्रणाम करके जाता है)

खुदाबख्श—(गद्गद् होकर और दूर से पैर छूकर) सरकार, कुँवर मण्डली का नाम तब सच्चा होगा जब कदमों की सेवा में हम सब अपने सीस चढ़ादें।

लक्ष्मीबाई—जाओ कुँवर खुदाबख्श आराम करो।

(मोतीबाई प्रसन्न है)

खुदाबख्श—माता का आशीर्वाद मिल गया अब आराम ही आराम है। कुंवर सागरसिंह ने दस पांच घाव इस देह में और कर दिए होते तो मैं आज और भी अधिक हर्षमग्न होता।

सागरसिंह—कुंवर साहब मुझको माफ़ कीजिएगा।

खुदाबख्श—माफ़ी देने वाला मैं कौन ? मालिक तो वे विराजमान हैं।

चौथा दृश्य

स्थान—झाँसी नगर की सड़क जो बाजार को गई है। मदारी बन्दर को लिए हुए डुगडुगी बजाता हुआ आता है। कुछ लड़के उसके पीछे पीछे। समय—दिन।

मदारी—ओहो नाच मत कर, नाच मत कर। नाचते नाचते उमर बीत गई। अब सिपाही बन जा। बन्दूक हाथ में ले। घोड़े पर चढ़। कैसे बन्दूक हाथ में लेगी? कैसे तलवार चलाएगी? कैसे लड़ाई लड़ेगी? वाह! वाह!! वाह! वाह!!

(लड़के भी वाह! वाह!! चिल्लाते हैं। एक चूरन वाला आता है।)

चूरनवाला—मेरा चूरन जो कोई खावे,
सो वह स्वस्थ तुरत हो जावे।
चूरन जिसने मेरा खाया,
उसने अरजुन का बल पाया·
मिट्टी बनती तीर तमञ्चा,
चमचम होता कच्चा कच्चा।

लड़के—थोड़ा सा हमें दो! थोड़ा सा हमें भी दो!

चूरनवाला—हां, इन्हें दो! सदाव्रत है न जो मुफ्त में बांटता फिरूँ!!

(डलिया में साग भाजी लिए हुए एक कूंजड़ी आती है।

कूंजड़ी—भँडुवों ने कैसी भीड़ लगा रक्खी है जैसे बाप की सड़क हो।

बन्दरवाला—बाप की नहीं है तो मां की तो है।

कूंजड़ी—आय हाय! यह आया बड़ा मदारी का बच्चा!! इसी के बन्दर ने फोड़े थे मेरे घर के खपड़े। चल हट, छोड़ रास्ता।

बन्दरवाला—यह तो बड़ी मुंहज़ोर दिखती है! कूंजड़ी ही तो ठहरी।

कूंजड़ी—तू है बड़ा बाम्हन का बेटा! बहुत बकबक करेगा तो दऊंगी पीठ पर दो लातें। और पकड़ कर ले जाऊंगी बाई साब के सामने।

चूरनवाला—अरी भलीमानस तो उस बिचारे ने कहा क्या है ? वैसे ही सिर को आ गई !

कूंजड़ी—आय हाय ! तू आया उस नटिए की पिच्चदारी करने ! आजांय तेरे सरीखे पांच तो हवा बिगाड़ दऊंगी, हवा !

बन्दरवाला—हे भगवान, यह झांसी है कि गले की फांसी ! औरतें क्या हैं पूरी आफ़त !! ज़रा छेड़ दो तो बस जैसे अंग्रेजों की मशीन चल गई—

कूंजड़ी—ऐं रे, तू क्या कोई अंग्रेज़ों का जासूस है ? तेरी जल जाय छाती, तेरी ! तेरे दांत तोड़ दूँ, तेरे !! तू हमारे राज में घुस कैसे आया, अभागे ?

बन्दरवाला—अरी परमेसरी, मेरी जान बख्श । मैंने तो कुछ भी नहीं कहा !

कूंजड़ी—कैसे नहीं कहा ? इतना तो बक गया ! अंग्रेज़ों की मशीन बतलाता है मुझको !! तेरे घर में नहीं है कोई जिसको अंग्रेज़ों की मशीन कहता ? मैं रानी साब की फ़ौज में भर्ती होकर निकाल दूँगी कचूमर अंग्रेज़ों का और तेरे बाप दादों का ।

(उसी समय तोप चलने की आवाज़ होती है । सब लोग चुप होकर सुनने लगते हैं ।)

नेपथ्य में—अपने अपने घरों में चले जाओ । रास्तों पर मत घूमो । ओर्छा के दीवान नत्थेखां ने झांसी पर हमला किया है ।

(सब इधर उधर धीरज के साथ जाते हैं)

कूंजड़ी—हूं ! सो क्या करेगा नत्थे खां फत्तेखां । बाई साब तो हैं हमारीं !

(जाती है)

पांचवाँ दृश्य

[**स्थान—झांसी के बाहर का बीहड़। समय—रात्रि। नगर के कोने पर आग लगी दिखलाई पड़ती है। नवाब अलीबहादुर और उनके पीछे पीछे पीरअली भागते हुए आते हैं।**]

अलीबहादुर—लूट लिया, मेरे महलों को जला दिया रानी के सिपाहियों ने!

पीरअली—अब आप भाग जाइए। उस तरफ़ गाड़ियां हैं। अन्धेरा मदद करेगा। मैं यहां सिपाहियों को बहका फुसलाकर रोक रक्खूंगा। तब तक आपको दतिया या भांडेर पहुंच जाने का वक्त मिल जायगा। जल्दी करिए।

अलीबहादुर—तुम मुझको कब और कहां मिलोगे?

पीर अली—जब अच्छे दिन आवेंगे। हुजूर जांय। मैं यहीं रहूँगा। किसी बहाने रानी की फ़ौज में भर्ती होऊंगा और पूरा बदला चुकाऊंगा। अगर मैंने झांसी का सफाया न करवाया तो मेरा नाम नहीं।

(**नेपथ्य में शोर होता है।** सरकार, देर न करें।

अलीबहादुर—अच्छा, मेरे पीरअली। मैं भी राजा की सन्तान हूं। और अंग्रेज अभी बिलकुल नहीं मिटे हैं। वे फिर यहां आवेंगे। और, तब—और तब, देखूंगा।

(जाता है)

(दूसरी ओर से सागरसिंह कुछ सैनिकों सहित आता है)

सागरसिंह—नत्थेखां के कुछ सिपाही इस ओर आए हैं, पैरों की आहट मिली थी। कहां गए? मालूम है?

पीरअली—नवाब अलीबहादुर की हवेली में छिप गए थे। मैंने आग लगा दी।

सागरसिंह—तुम कौन हो भाई?

पीरअली—नवाब अलीबहादुर की नौकरी में था, लेकिन जब मैंने देखा कि वे नत्थेखां के तरफदार हो गए हैं, खून खलबला उठा। मैं रानी साहब का वफादार जो ठहरा। न रहा गया; न सहा गया। बिगड़ बैठा। बदल पड़ा। नवाब साहब भाग गए वरना उनको भी कुछ मज़ा चखाता। मन में मसोस है, बड़ी मसोस।

सागर सिंह—हवेली में नवाब साहब कुछ छोड़ भी गए हैं या सारा अड्डा साफ़ है।

पीरअली—जरूर कुछ न कुछ होगा। खाक होने से जो कुछ बच गया हो वह अपना। चलो। आप कौन हैं?

सागर सिंह—कुंवर सागरसिंह—रानीसाहब की सेना का एक अफसर।

पीरअली—(प्रसन्न होकर) वाह! क्या कहना है!! आपका बहुत नाम सुना है। चलिए न, अगर हवेली में दुश्मन की फौज के कुछ लोग मिल जांय तो उनसे दो दो हाथ कर डालें और नवाब साहब का कुछ माल मिल जाय तो उससे अपना पेट पालें। मगर कुंवर साहब, मुझको भी रानी साहब की सेना में कोई अच्छी जगह दिलवा दीजिएगा। गरीब सिपाही हूँ। आपके पसीने की बूंदों की जगह अपना लोहू बहा दूँगा और जीते जी कभी अहसान को न भूलूंगा। मुझको खिदमतमें ले लिया जावे।

सागरसिंह—ज़रूर, ज़रूर। मैं जनरल साहब से और महारानी साहब से भी आपकी सिफ़ारिश करूंगा और सेना में कोई अच्छा पद दिलवा दूँगा। चलिए, अभी कुछ काम कर लें।

पीरअली—चलिए, मैं रास्ता दिखलाता चलूंगा।

वे सब जाते हैं)

छठवां दृश्य

[स्थान—झांसी का बाजार। इसको हलवाई पुरा भी कहते हैं इसके पूर्वी सिरे पर मुरली मनोहर के नाम का मन्दिर है। बाजार में भीड़ है। सन्ध्या के जरा पहले का समय है। लक्ष्मीबाई

तामझाम में बैठकर मुरली मनोहर के मन्दिर में जाने के लिए आ रही हैं। उनके पहले कुछ स्त्रियां सजधज के साथ उसी ओर चली जा रही है। वे एक हाथ में पूजन के थाल लिए हैं, जिनमें फूल रक्खे है, और दिये जल रहे हैं। रानी का तामझाम में बैठे हुए प्रवेश। साथ में सैनिक वेश में उनकी सशस्त्र स्त्री–पहरेदार हैं। उनके पीछे रामचन्द्र देशमुख सशस्त्र हैं। वह अधेड़ वय का हट्टा कट्टा एक दृढ़ पुरुष है। उनके आने पर भीड़ छट जाती है। जाड़े की ऋतु आ गई है!]

(बाजार का एक मुखिया आगे आता है और प्रणाम करता है।)

लक्ष्मीबाई—अच्छी तरह हो, मुखिया? काम कैसा चल रहा है।

मुखिया—श्रीमन्त सरकार के प्रताप से सब तरह की शान्ति है। राज्य के जितने शत्रु थे सबको सरकार ने पराजित करके ठण्डा कर दिया है। सदाशिवराव ने सिर उठाया, कुचल दिए गए। नत्थेखां ने झांसी पर झपाटा मारा, सपाटे के साथ मार कर भगा दिया गया।

लक्ष्मीबाई—वे कहते थे कि झांसी ओर्छा राज्य का अंग है! आप लोगों के होते हुए मै इस दावे को कैसे मान लेती?

मुखिया—सरकार, झांसी झांसी की ही है।

(एक विनती वाला आता है)

विनती वाला—सरकार मै दरिद्र ब्राह्मण हूँ। दूर से आया हूँ।

लक्ष्मीबाई—क्या बात है पण्डित जी?

विनती वाला—मेरी पत्नी मर गई है। मुझको ब्याह करना है। लड़की वाला बिना रुपया लिए ब्याह करने को राज़ी नहीं है। सरकार, चार सौ रुपए की अटक है।

लक्ष्मीबाई—(एक ओर ताक कर) रामचन्द्र देशमुख! कुंवर रामचन्द्र राव!!

(रामचन्द्र देशमुख, जो 'कुंवर मण्डली' का एक सदस्य है, आगे आता है।)

रामचन्द्र देशमुख—आज्ञा सरकार ?

लक्ष्मीबाई—इस ब्राह्मण को खज़ाने से पाचसौ रुपया दे देना।

रामचन्द्र देशमुख—जो आज्ञा।

(ब्राह्मण उन्मत्त सा होकर जय जयकार करता है)

लक्ष्मीबाई—देखो पण्डितजी, अपने ब्याह के समय मुझको न्योता देना न भूल जाना।

ब्राह्मण—(आश्चर्य के साथ) ऐं! सरकार !!

(बाज़ार के लोग हँस पड़ते हैं। उसी समय कुछ अधनंगे ग़रीब आते हैं।)

लक्ष्मीबाई—(उनकी ओर देख कर) क्यों क्या बात है ? क्या कहना चाहते हो ?

उनमें से कुछ—हमारे पास कपड़ा नहीं है। हम ठण्डों मरे जा-रहे हैं।

लक्ष्मीबाई—देशमुख, झांसी में जितने इस तरह के लोग हों सब को एक एक कम्बल देने का शीघ्र प्रबन्ध करो और सबको एक एक सलूका बनवा दो।

रामचन्द्र देशमुख—जो आज्ञा सरकार।

बाज़ार के सब—महारानी लक्ष्मीबाई की जय।

(लक्ष्मीबाई मन्दिर की ओर जाती हैं)

सातवां दृश्य

[स्थान—रानी का महल। बसन्त ऋतु। एक ओर से मुन्दर आती है, दूसरी ओर से सुन्दर आ रही है। समय—दिन।]

मुन्दर—महारानी साहब पूजन में हैं। अंग्रेज़ लोग बिना किसी विघ्न बाधा के बढ़ते चले आ रहे है ! (सुन्दर दूसरी ओर से आजाती है) सुन्दर, सुन्दर अंग्रेज़ बेतवा पार करके बबीना तक आ गए हैं ! झांसी से केवल १७, १८ मील दूर !!

सुन्दर—सामना किया जायगा। क्या हाल ही में कोई समाचार आया है ?

मुन्दर—दीवान और सब सरदार तथा नगर के पञ्च मुखिया आए हैं। अंग्रेजों के जनरल की चिट्ठी आई है। चिट्ठी क्या चिनौती है !

सुन्दर – महारानी साहब आ रही हैं। गीता का पाठ कर रही थी।

(लक्ष्मीबाई का प्रवेश)

लक्ष्मीबाई—क्या चिट्ठी आई है; मुन्दर ?

मुन्दर—यह है चिट्ठी सरकार। अंग्रेज जनरल ने भेजी है।

लक्ष्मीबाई—क्या चिनौती है उसमें ?

मुन्दर—मैं दीवान और सरदारों को न बुला लाऊं ? वे सब बारह दरी में इकट्ठे हैं।

लक्ष्मीबाई—बुला लाओ।

(मुन्दर जाती है)

लक्ष्मीबाई—अब तुम लोगों की शूरवीरी और हथियारों की परीक्षा का समय आया। यह अच्छा हुआ कि तुम सबको मैंने तोप चलाना भी सिखलवा दिया है। लड़ाई में, मोर्चों का संभालना, शत्रु के दाव पेंच को समझ कर अपनी योजना की छांट कतर करना, बढ़िया हथियार और सिपाहियों में नियम अनुशासन, ये पहले हैं ! और सब पीछे।

सुन्दर—हम सब नर नारी तैयार हैं। सरकार।

लक्ष्मीबाई—कुछ थोड़ा समय और मिल जाता तो मैं इस प्रदेश भर के नर नारियों को तैयार कर देती। और इतना गोला बारूद और अन्य सामान इकट्ठा कर लेती कि अंग्रेज़ों के मार भगाने में कोई सन्देह

नहीं रहता। फिर भी, जो कुछ है उसी के बलभरोसे बहुत कुछ किया जा सकेगा। हमको केवल कर्म करने का अधिकार है, उसके फल से कोई सरोकार नहीं।

(मुन्दर के साथ दीवान, सरदार, नगर के पञ्च और मुखिया आते हैं। अभिवादन के बाद उनको बिठला दिया जाता है। मुन्दर रानी के लिये एक चौकी लाती है। उस पर वे बैठ जाती हैं।)

लक्ष्मीबाई—अंग्रेज़ जनरल ने चिट्ठी में क्या लिखा है?

दीवान लिखा है कि आप अपने आठों सरदारों के साथ उसके पास निःशस्त्र जावें। मैं, लाला भाऊ बख्शी, दीवान लक्ष्मणराव, काका साहब मोरोपन्त, दीवान जवाहरसिंह, दीवान रघुनाथसिंह, कुँवर खुदाबख्श, और मोती साईं।

लक्ष्मीबाई—(उठी हुई उच्छ्वास को दबा कर) मोती साईं !!! मेरे सरदारों में मोती साईं कौन महाशय हैं।

(सुन्दर, मोतीबाई इत्यादि पार्श्व में खड़ी हैं सभी उपस्थितों के साथ वे भी हँस पड़ती हैं।)

लक्ष्मीबाई—नाना साहब, इस मोतीसाईं को कहा से पकड़ बुलाऊँ?

नाना भोपटकर-- (मुस्करा कर) सरकार की टकसाल में यदि जाली सिक्के ढलते होते तो किसी न किसी को साईं का चोगा पहिना दिया जाता

लाला भाऊ—सरकार, अंग्रेज़ों को क्या जवाब दिया जाय?

मोतीबाई— (पार्श्व में आकर) यह मोती साईं कौन सी बला है? इसका उत्तर क्या होगा?

लक्ष्मीबाई—मै बतलाऊंगी (एक क्षण मुस्कराकर और फिर गंभीर होकर) मैं अकेली उत्तर देने वाली कौन होती हूँ। झांसी के ये सब पञ्च और अगुए बैठे हैं। इनकी जैसी इच्छा हो। ये कह दें तो मैं अकेली अंग्रेज़ जनरल के सामने चली जाऊंगी, किसी सरदार के जाने की आवश्यकता न पड़ेगी।

अहीरों का मुखिया—हम लड़ेंगे। अपनी झांसी के लिए, अपनी रानी के लिए हम सब अहीर कट मरेंगे।

महाजनों का पञ्च—हमारे पास जितना रुपया और गहना है स्वराज्य की लड़ाई के लिए, रानी साहब के हाथ संकल्प है। महाजनी का यही प्रायश्चित्त सबसे बड़ा है।

तेलियों का अगुआ—हम दिखला देंगे कि झांसी का पानी कितना खरा और गहरा है। हम तेली लोग अंग्रेजों की वह पिराई करेंगे कि वे कभी भूलेंगे नहीं।

काछियों का पञ्च—उत्तर दीजिए कि बैरियों को मां की छटी के दूध की याद दिलाई जावेगी। हम काछी काछी ही झांसी में इतने हैं कि कुछ दिनों तो अकेले हमलोग ही सामना कर लेंगे।

कोरियों का अगुआ—हम कोरी लोग जब तक हैं झांसी में दुश्मन पैर नहीं रख सकता।

चमारों का पञ्च—हम चमारों के जीते जी झांसी का बाल बांका नहीं जा सकता।

बाकी सब इकट्ठे—लड़ेंगे। मर मिटेंगे स्वराज्य के लिए। यही उत्तर दीजिये।

लक्ष्मीबाई—यही उत्तर दीजिए, नाना साहब।

भोपटकर—अवश्य।

लक्ष्मीबाई—सबको सावधान कर दीजिए। रसद और लड़ाई का सब सामान बहुतायत में तुरन्त क़िले के भीतर इकट्ठा कर लीजिए। गोला बारूद काफ़ी है न?

जवाहरसिंह—बहुत काफी सरकार। बख्शी भाऊ ने आध सेर से लेकर पैंसठ सेर तक के गोले तैयार किए हैं जो निशाने पर लगकर फूटते भी हैं और फिर उनमें से गोलियां और कीलें सन्नाती हैं।

लक्ष्मीबाई—अंग्रेज़ों के साथ कितनी सेना है, कितना सामान है, पीछे के मार्ग से सम्पर्क बनाए रखने का क्या साधन है इत्यादि बातों की जांच के लिए अपना भी कोई जासूस जाना चाहिए।

जवाहरसिंह—हमारे यहां पीरअली नाम का एक चतुर कांइयां है। वह जासूसी के काम को अच्छी तरह कर सकेगा। मोतीबाई जी भी उसको जानती होंगी।

मोतीबाई—मुझको इनकार नहीं है। शायद काम को अच्छी तरह निभा ले आवे। अंग्रेज़ों के साथ भोपाल और हैदराबाद रियासतों के भी दस्ते हैं। मुझको पता लगा है।

लक्ष्मीबाई—अब सब लोग जाओ। दूत को सवेरे रवाना कर दो। उस पीरअली को अभी रात में ही सब समझा बुझा देना। वह सचेत हो कर काम करे।

(वे सब लोग जाते हैं। केवल स्त्रियाँ रह जाती हैं।)

मोतीबाई—सरकार, अपने यहां यह मोती साईं कौन है।

(मुस्कराती है)

लक्ष्मीबाई—तेरा नाम कैसे सुन्दर रूप में अंग्रेजों के पास पहुचा है! मुझको कोई सन्देह नहीं—मेरे जासूस विभाग के सरदार को ही साईं का पद दे दिया गया है।

मोतीबाई—(बनावटी रोष के साथ) सरकार के सामने मेरे मुँह से गाली नहीं निकलती, परन्तु यदि उस अंग्रेज़ जनरल को पा गई—उस मुँहझोंसे का नाम रोज़ है, जनरल रोज़—तो तोप, बन्दूक़ या तलवार से सच्चा नाम लिखे बिना न मानूँगी।

लक्ष्मीबाई—मैंने तो दरबार में बड़ी कठिनाई से अपनी हँसी को रोक पाया। मोती साईं! यह रहा मोती साईं!! कैसा बढ़िया नाम है!!! क्या रूप सरूप है मोती साईं जी का!!!!

(वे सब हँसती हैं)

मोतीबाई—(हँसी को रोककर बनावटी रुआँसे स्वर में) सरकार, मेरी चल नहीं सकती थी नहीं तो मैं चिठ्ठी के सिरनामे पर लिखवाती 'मेंम साहब रोज़ को मोती साईं का सलाम। चुपचाप हिन्दुस्थान को पीठ दिखलाओ, और अपनी विलायत में झख मारो।'

(सब हँस पड़ती हैं)

लक्ष्मीबाई—(गम्भीर स्वर में) लाला भाऊ इत्यादि दरबारी सोचते होंगे हम लोग क्यों हँस पड़े थे। हम लोगों की हँसी मौत का घूंघट है। और यह बात सब लोगों को शीघ्र मालूम भी हो जायगी। अब तुम लोग अपनी सेना की तैयारी में तुरन्त लग जाओ।

मुन्दर—सरकार, नवरात्र भी आ गई है। गौर का पूजन, हरदी कूँ कूँ—

लक्ष्मीबाई—हां, वह अवश्य होगा। उसमें सब स्त्रियां एकत्र होंगी। उनको उसी समय लड़ाई की पूरी क्रिया समझा दी जावेगी।

(जूही आती है)

जूही—सरकार, फाटकों का और रसद सामान का प्रबन्ध कर दिया गया है।

लक्ष्मीबाई—अच्छा हुआ। अब चलो, ईश्वर का ध्यान करो और सवेरे से काम में जुट जाओ।

मोतीबाई—सरकार हम लोगो का एक गीत सुन लें, फिर जैसी आज्ञा हो?

लक्ष्मीबाई—अभी? नहीं मोती, अभी नहीं। फिर कभी सुनूंगी।

(आगे आगे रानी जाती हैं, पीछे पीछे वे सब।)

आठवां दृश्य

[स्थान—जङ्गल पहाड़ और टौरियों के बीच में ऊबड़ खाबड़ मैदान। एक ओर नदी बह रही है। इस मैदान के एक कोने पर जनरल रोज़ की सेना का शिविर है। समय—दिन।]

(पीरअली और अंग्रेज़ी छावनी का एक हिन्दुस्थानी सिपाही आते हैं।)

हिन्दुस्थानी सिपाही—हमारा जनरल बड़ा कट्टर और बड़ा काबिल सेनापति है। बानपूर के राजा मरदनसिंह और शाहगढ़ के राजा बखत-बली को उसने बात की बात में हरा दिया।

पीरअली—झांसी में मुक़ाबिला कड़ा बैठेगा।

हिन्दुस्थानी सिपाही – जनरल के सामने ऐसी बात कहोगे तो मार खाओगे। वैसे भी वह बाग़ियों के साथ राई रत्ती भर भी रियायत नहीं करता। यहां से लौटकर घर जा पाओ तो पीर को मलीदा चढ़ाना।

पीरअली—जनरल साहब क्या दूतको—एलची को भी—मार देंगे।

हिन्दुस्थानी सिपाही—मारें या न मारे वे जानें उनका काम जानें मैं तुम्हारी इत्तिला किए देता हूँ। यहीं ठहरो।

(पीरअली रुक जाता है। सिपाही जाता है। पीरअली टहलने लगता है। वह अपने कांइएपन पर आश्वस्त है। थोड़ी देर में जनरल रोज़ अपने एडजुटेंट के साथ आता है। रोज़ अधेड़ अवस्था का स्वस्थ सैनिक है। उसकी आंखें तीक्ष्ण है. चेहरे पर दृढ़ता और निश्चय है। एडजुटैंट युवा अवस्था से कुछ ही आगे है। चुस्त है। पीरअली उन दोनों को प्रणाम करता है।)

रोज़—वैल ? तुम कौन हो ?

पीरअली—मैं हुज़ूर नवाब अलीबहादुर साहब का आदमी हूँ और अंग्रेज़ी सरकार का खैरख्वाह। पीरअली मेरा नाम है।

(रोज़ अपनी जेब में से एक नोट बुक निकालता है और उसको उलट पलट कर ध्यान पूर्वक देखता है।)

रोज़—हां, पीरअली, पीरअली। नवाब साहब अच्छी तरह है ?

पीरअली—उनकी हवेली जला दी गई। वे मुसीबत में इधर उधर मारे मारे फिर रहे हैं। मैं उनका नमक अदा करने के लिए झांसी में

रानी साहब की फ़ौज में भर्ती हो गया हूँ; काम सरकार का कर रहा हूँ। और इसीलिए खिदमत में हाज़िर हुआ हूँ। मैं झांसी की सब बातें बतलाऊंगा। सबसे पहली बात तो सरकार यह है कि रानी ने औरतों की एक फ़ौज बनाई है! उसकी अफ़सर भी औरतें ही हैं। कोई लफ़टण्ट, कोई कप्तान, कोई कर्नल—

रोज़—ओह! Jhansi may prove a tough job. अच्छा यह बतलाओ कि रानी ने अंग्रेज़ बच्चों और स्त्रियों का क़तल करवाया?

पीरअली- नहीं हुज़ूर, नहीं करवाया।

रोज़—वैल, हु! लेकिन झांसी के लोगों ने क़तल किया! हु। अच्छा, उस पल्टन में कितनी औरतें हैं?

पीरअली—लगभग एक हज़ार हुज़ूर।

रोज़—ओ हैल! (हँसकर) Rubbish! औरतें सिपाहगीरी करेंगी!! अच्छा हमारे साथ हमारे तम्बू में आओ। बाक़ी बातें वहीं होंगी लेकिन यहां किसी से भी कोई बातचीत मत करना, और चुपचाप झांसी लौट जाना। हमारा फ़ौजी कानून है। अच्छा।

पीरअली—हुज़ूर।

रोज़—और झांसी में जब हम लोग पहुंच जांय, तब हमको किसी तरह भीतर का सब हाल देते रहना। अच्छा।

पीरअली—हुज़ूर, इसका तो मैंने बीड़ा ही उठाया है।

रोज़—इनाम मिलेगा। किसी और सरदार को हमसे मिला सको तो मिलाना। अच्छा। झांसी में हमारी छावनी में बेखटके आने के लिए एक इशारा बतला दिया जायगा।

पीरअली—हुज़ूर।

(वे सब जाते हैं)

यवनिका

चौथा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—झांसी के किले का भीतरी भाग। गौर की सजी हुई मूर्ति के सामने से स्त्रियां आरती उतारती हुई चली जाती हैं उनमें झलकारी भी है। स्त्रियां आरती उतारती हुई गाती जा रही हैं। लक्ष्मीबाई एक ओर हाथ जोड़े खड़ी हैं। समय—सन्ध्या के उपरान्त।]

❀ गीत ❀

उन मुस्कानों की बलि जाऊँ।
सती-चिता की दीप-शिखा पर जो लहराती रहती हैं,
निबलों के भी कण कण में जो ज्योति जगाती रहती हैं,
बलिदानों की ध्वजा निरन्तर जो फहराती रहती हैं,
उन बलिदानों से बल पाऊँ,
उन वरदानों से वर पाऊँ,
उन मुस्कानों की बलि जाऊँ।

लक्ष्मीबाई—तुम्हारे माता पिता की, तुम्हारे पति की, तुम्हारे भाई की, तुम्हारे देश की, और उन सतियों की लाज तुम्हारे हाथ में है। जिन्होंने जौहर पर जौहर किए हैं। अब भगवान का नाम लेती हुई अपने अपने घर जाओ और स्वजनों के साथ जल्दी किले में अपने अपने काम पर आजाओ। हर, हर, महादेव !

(स्त्रियां 'हर हर महादेव!' कहती हुई जाती हैं)

(मुन्दर का सैनिकवर्दी में प्रवेश)

मुन्दर—राहतगढ़ से भागे हुए पांचसौ पठान आए हैं। भूखे प्यासे हैं, फटे हुए कपड़े पहिने हैं और निहत्थे हैं। नौकरी चाहते हैं। वे सब सिपाही हैं। देश-द्रोही नहीं जान पड़ते। अंग्रेज़ों से लड़ने की साध रखते हैं। उनके मुखिया का नाम गुलमुहम्मद है।

लक्ष्मबाई—दीवान जवाहरसिंह से पूछा, वे क्या कहते हैं?

मुन्दर—उन्होंने जांच पड़ताल करली है। वे सरकार की अनुमति चाहते हैं।

लक्ष्मीबाई—शरण में आए हुए का पालन करना हमारा धर्म है। और फिर सिपाही हैं, स्वराज्य की लड़ाई में भाग लेंगे। उनको नौकरी दे दी जाय और गुलमुहम्मद को उनका सरदार माना जाय।

मुन्दर—जो आज्ञा। अंग्रेजों की सेना यहां से बहुत थोड़ी दूर रह गई है।

लक्ष्मीबाई—हम लोग ऐसी परिस्थिति में हैं कि अभी किले से बाहर निकल कर नहीं लड़ सकते। कालपी में रावसाहब और तात्या अपनी सेना के साथ मौजूद हैं। झांसी की सहायता के लिए उनको तुरन्त समाचार दिया जाना चाहिए। मोतीबाई कहां है?

मुन्दर—यहीं बाहर, लाला भाऊ से प्रबन्ध की बातचीत कर रही है।

लक्ष्मीबाई—उसको मेरे पास भेजो।

(मुन्दर जाती है। लक्ष्मीबाई टहलने लगती है। कुछ क्षण बाद मोतीबाई आती है। वह भी वर्दी में है।)

मोतीबाई—सरकार, कालपी समाचार भेजने के लिए जूही को भेज दिया जाय।

लक्ष्मीबाई—बहुत कोमल और सुकुमार है। उसने अपने शरीर को काफ़ी नहीं कमा पाया है।

मोतीबाई—संसार भर की कोमलता और मन्जुलता हमारी रानी में भरी हुई है। इस पर भी वे फौलाद से भी बढ़ कर कठोर हैं। फिर हम लोग किस गिनती में हैं ?

लक्ष्मीबाई—(मुस्करा कर) अच्छा, जूही के साथ काशीबाई को और भेज दो। एक और एक ग्यारह का बल रखते हैं।

(मोतीबाई जाती है)

लक्ष्मीबाई—तोपें दिन रात चलेगीं। पर एक ही गोलन्दाज लगातार दिन रात काम नहीं कर सकता। एक पुरुष गोलन्दाज़ के साथ एक स्त्री गोलन्दाज़ का जुट रहना चाहिए। रसद खाना पीना और गोला बारूद देते रहने के लिए स्त्रियां काम करेंगी। दीवारों या बुर्जों के टूटने चटकने पर तुरन्त स्त्री और पुरुष कारीगर चूना गारा पत्थर इत्यादि लेकर पहुचें। इसकी निरन्तर तैयारी रहे।

मुन्दर—दीवान जवाहरसिंह और लालाभाऊ ने यह सब लिख पढ़ लिया है मैं आज्ञा को फिर दुहराए देती हूँ।

लक्ष्मीबाई—क़िले के ही भीतर बारूद बनाई जाने लगी है न ?

मुन्दर—हां सरकार ? आजसे इस काम का आरम्भ होगया है।

(मोतीबाई काशी और जूही को लाती है। वे दोनों वर्दी में हैं। आकर फ़ौजी प्रणाम करती हैं।)

लक्ष्मीबाई—तुम दोनों को कालपी जाना है। मोतीबाई से सुन लिया होगा ?

काशी और जूही—(प्रसन्नता के साथ) हां सरकार।

लक्ष्मीबाई—(जूही के सिर पर हाथ फेर कर) तेरे नाम की महक और देश की मुक्ति का मिलन हो।

(जूही सिर झुका लेती है)

लक्ष्मीबाई—(काशी के सिर पर हाथ फेर कर) काशी, तू स्वराज्य का तीर्थ बने।

काशी और जूही—हर हर महादेव ! (दोनों जाती हैं)

मोतीबाई—मै इन के भेजने का प्रबंध करदू । (जाती है)

लक्ष्मीबाई—जो पठान आए हैं, वे घुड़सवारी भी जानते हैं ? पता लगाया ?

सुन्दर—जानते हैं सरकार । पर उनके पास घोड़े नहीं हैं !

लक्ष्मीबाई—घोड़े उनको अपने यहां से दे दिए जाएंगे । बहुत हैं । (नेपथ्य में स्त्रीकंठ से 'हर हर महादेव' की पुकार सुनाई पड़ती है । लक्ष्मीबाई मुस्करा कर उस दिशा में देखती हैं) यह अपनी स्त्री सेना का स्वर है ।

सुन्दर—(मुस्करा कर) हां सरकार लक्ष्मी सेना का !

मोतीबाई— इनमें से अधिकांश स्त्रियां जिनका बहुत सा समय साज सिंगार और बातों के तूफान उठाने में जाता था किस आन बान के साथ हथियार लगाए चली आरही हैं ! इन सिंगार और झगड़े—सब—तलवार के म्यान में समा गए हैं !! अहा हा हा !!!

(राधारानी, सुन्दर झलकारी इत्यादि कुछ स्त्रियां फ़ौजी अफ़सरों की वर्दी में आती हैं और रानी को प्रणाम करती है । लक्ष्मीबाई प्रति नमस्कार करती हैं ।)

लक्ष्मीबाई - तुमको देख कर मुझको बड़ा हर्ष होता है । तुम्हारे काम को देख कर मैं कृत कृत्य हो जाऊंगी । बखिशनजू, तुमको लाला-भाऊ के साथ क़िले की पूर्वी बुर्ज के तोपखाने पर रहना है । अंग्रेज़ वहां से झांसी पर गोला बारी करेंगे । (हंसकर) तोप चलाते-चलाते तुम्हारे खरे गोरे गालों पर बारूद की कालोंच पुत पुत जावेगी ।

राधारानी—सरकार, वह मेरी रानी का दिया हुआ काजल होगा, और सिंदूर भी । (सब हँसती हैं)

लक्ष्मीबाई— मोतीबाई गुलाम गौसखाँ के जुट में रहेगी और क़िले की दक्षिणी बुर्ज के तोपखाने पर काम करेगी और झलकारी—

झलकारी—ऊँ—ऊँ—सरकार, मैं तो अपने उनावदरवाजे पै काम करहों। क़िले में काम कर हों तो उनाव दरवाजौ सूनों न होजैय ?

लक्ष्मीबाई—(हँसकर) अरी परमेसरी, तोसें कौन्हें कही कि तैं क़िले में हो कें तोप चलाइए ? तैं अपने पूरन के पास उनाव दरवाजे की बुर्ज पै रहिए और उतईं अपनी बड़ी आंखन में तोप के धुआं को काजर लगाउत रहिए। अबतो भई मगन ? (झलकारी खिल खिला कर हँसती है) मोरे मनमें आउत कि तोरे गालन पै दो थापरें लगा देउँ।

झलकारी—हौ ओ। सो महाराज, लड्डुवा सोऊ खुवाउने पर हैं। (हँसती है)

लक्ष्मीबाई—तैं बैरियन खों लोहे के लड्डुआ खुवाइए, मैं तोरौ मुंह घी सक्कर के लड्डुअन सें भर देउँ।

झलकारी—(गंभीर होकर) ऐसोई हुइए महाराज, ऐसोई हुइए

लक्ष्मीबाई—और सुन्दर, तेरा जुट दीवान दूल्हाजू के साथ ओर्छा फाटक पर रहेगा। सेंयर फाटक पर खुदाबख्श, खण्डेराव फाटक पर सागर सिंह, दतिया फाटक पर रामचन्द्र तेली, बड़ेगांव फाटक पर करन काछी और ठाकुर लोग, सागर खिड़की पर पीर अली। तू किले में आती जाती बनी रहना। वैसे मैं स्वयं क़िले के भीतर और बाहर दोनों जगह काम करूंगी। प्रत्येक फाटक पर दौड़ लगाऊंगी। नगर की गली गली में घूमूँगी और जनता को सचेत रक्खूंगी। अंग्रेजों के गोलों से नगर में आगें लगेंगी, उनके बुझाने का तुरन्त प्रबन्ध करूंगी। किसी को खाने पीने का कष्ट न हो पाय इसका प्रबन्ध करती रहूंगी। अब सब 'हर हर महादेव' कह कर शान्ति, धैर्य और संयम के साथ अपने अपने काम पर चिपट कर लग जाओ।

सब—हर हर महादेव !!!

(वे सब जाती हैं)

दूसरा दृश्य

[स्थान–एक दिशा में झांसी का किला। पूर्व की ओर कमासिन टौरिया, बीच में ऊबड़ खाबड़ मैदान। इसी दिशा में, दक्षिण की ओर हटकर, जनरल रोज़ का शिविर है ओट में है। दक्षिण की ओर असम मैदान, टौरियां, और किले के निकट जीवनशाह की टौरियों का सिलसिला है। पश्चिम की ओर कुछ दूरी पर जार पहाड़ी है। उत्तर की ओर दक्षिण उत्तर की लम्बाई में अन्जनी की टौरिया नाम की पहाड़ी है। दोनों ओर से गोलाबारी चल रही हैं। जनरल रोज ने झांसी को चारों ओर से घेर लिया है। चारों ओर के मोर्चों पर समाचार भेजने के लिए रोज़ ने तार लगा रक्खे हैं। उसका सदर–मुक़ाम कमासिन टौरिया की बग़ल की एक टेक के पीछे है जहां से दूरबीन लगाकर वह क़िले और शहर के भीतर भागों को देख सकता है। स्टुअर्ट नामक उसका ब्रिग्रेडियर चन्देरी को विजय करके अपने दस्ते समेत उसमे आ मिला है। लड़ाई ज़ोर के साथ जारी है। शहर में अंग्रेजी गोलों और हवाइयों के कारण आगें लग लग जाती हैं, परन्तु रानी के अच्छे प्रबन्ध से वे बुझा दी जाती हैं। क़िले की दीवारें और बुर्जें अंग्रेजी गोलों के कारण टूट जाती हैं, परन्तु झांसी की सेना के स्त्री–पुरुष कारीगर उनको जोड़ जोड़ लेते हैं। अंग्रेजी पल्टनें बन्दूक़ों पर संगीनें चढ़ाए क़िले के फाटको पर हमला करती है, परन्तु झांसी की गोलियों की बौछार से हताहतों की हानि सहकर उनको लौट जाना पड़ता है। एक टेक के पीछे से रोज़, उसका ब्रिगेडियर स्टुअर्ट और एक और अंग्रेज़ अफ़सर आते हैं। रोज के हाथ में दूरबीन है। समय–दिन।]

रोज़ – (दूरबीन से देखकर) ओह ! स्त्रियां तोप चला रही हैं ! हैं मर्दानी वर्दी में, मगर पहिचानी जा सकती हैं। कुछ रसद बांट रही हैं !

कुछ टूटी हुई दीवारों और बुर्जों के कंगूरों की मरम्मत में मदद दे रही हैं !! इतनी तरतीब से, इतनी तेज़ी से, हिन्दुस्थानियों को काम करते आज देखा !!! अचरज होता है। देखो स्टुअर्ट।

स्टुअर्ट—(दूरबीन ले कर, और देखता हुआ) जनरल, पेड़ों की छाया में कुछ स्त्री-पुरुष काम कर रहे हैं। हमारा एक गोला उनके बीच में पड़ा ! ·····धूल फिकी !!······फिर भी वे सब वहीं के वहीं !!!

(रोज़ भी दूरबीन लेकर देखता है)

रोज़—हां।

स्टुअर्ट—ये सब नेपोलियन हो गए क्या ?

रोज़—महरानी नेपोलियन नहीं, जोन ऑव आर्क है।

स्टुअर्ट—इसको ज़िन्दा पकड़ सकें तो कमाल होगा।

(नेपथ्य में तार की घन्टी बजती है)

रोज़—देखो स्टुअर्ट, किस मोर्चे से खबर आई है। मै तब तक दूरबीन लगाये हूँ।

(स्टुअर्ट जाता है। रोज भिन्न भिन्न कोणों से झांसी का निरीक्षण करता है। थोड़ी देर बाद स्टुअर्ट आता है।)

स्टुअर्ट—खबर आई है कि अपना पश्चिमी मोर्चा सबका सब तहस नहस होगया है। क़िलेका दक्षिणी तोपखाना भी बहुत ऊधम कर रहा है।

रोज़—अपने ब्रिगेड के दक्षिणी हिस्से को आदेश भेजो कि बहुत ज़ोर के साथ क़िले के दक्षिणी भाग पर गोलाबारी करें। पीरअली कई दिन से नहीं आया है। आज अगर आवे तो उससे कुछ काम की बातें पूछनी हैं।

स्टुअर्ट—हां जनरल, है तो वह भरोसे का आदमी। मैं जाता हूँ। दक्षिणी मोर्चे को खबर देता हूँ।

रोज़—और मैं पश्चिमी मोर्चे का हाल देखने जाता हूँ। यह मेरे साथ चलेंगे। (वे सब जाते हैं)

तीसरा दृश्य

[स्थान—झांसी के क़िले का एक भीतरी भाग। बुर्जों पर तोपें चढ़ी हुई हैं। दक्षिणीबुर्ज पर, आड़ लिए हुए गुलामग़ौस गोलन्दाज़ तोपों को संभाल रहा है। उसके साथ एक गोलन्दाज़ और है। समय–दिन

गुलामग़ौस—पंडित जी, रानी साहब की स्त्री–गोलन्दाज़ चपल बहुत हैं मुझको ठंडे आदमी चाहिये जो काम करने के समय गाते न हों।

दूसरा—कभी कभी आल्हा गाते गाते तो मैं भी काम करता हूं।

(दूसरी ओर से गोलाबारी होती है। वे दोनों थोड़ी देर चुप रहते हैं।

गुलामग़ौस—अंग्रेजों का यह तोपखाना तो बहुत परेशान कर रहा है। हू। पंडित जी, मिलकर एक बार वह गीत तो गालो फिर देखता हूँ इस तोपखाने को। वही 'जननी जनम दियो है तोखों बस आजहि के लानें'

(दोनों गाते जाते हैं और तोपों के मुहरों को संभालते जाते हैं। संभाल लेने पर वे दोनों तोपों पर पलीते छुलाते हैं। तोपों में धुंआ न छोड़ने वाली बारूद है। इसलिए अंग्रेजों के तोपखाने का विनाश दिखलाई पड़ जाता है। वे दोनों खुशी के मारे उछल पड़ते हैं।)

दोनों—वह मारा है!

(लक्ष्मीबाई आती है। वे दोनों उनको फ़ौजी प्रणाम करते हैं)

लक्ष्मीबाई—गुलामग़ौस, आज अंग्रेजो ने पश्चिम की ओर, जार पहाड़ी के पास, एक नया मोर्चा बनाया है। वह विपद बरसा रहा है। उसको मिटाना ही होगा।

गुलामग़ौस—सरकार इस तोपखाने का बन्दोबस्त कर दें, मैं पश्चिमी तोपखाने को देखता हूं।

लक्ष्मीबाई—मैं मोतीबाई को भेजती हूँ।

गुलामग़ौस—वे कमाल की गोलन्दाज़ हैं, मगर इस तोपखाने को न संभाल पावेंगी। किसी और को भेजें सरकार। अंग्रेज़ लोग यहीं से क़िले में घुसना चाहते हैं, क्योंकि यही उनके जीवनशाह वाले तोपखाने के अत्यन्त निकट बैठता है।

लक्ष्मीबाई—राधारानी बख्शिन को भेजदू ?

गुलामग़ौस—हां सरकार भेज दीजिये। वे बड़े खानदान की हैं।

लक्ष्मीबाई—लड़ाई और आत्मत्याग में भी ऊँचनीच ? भगवान, इस देश की रक्षा करो। अच्छा, राधारानी को भेजती हूं।

(लक्ष्मीबाई जाती हैं। गुलामग़ौस तोपों को भरता है। थोड़ी देर में राधारानी आजाती है। उसके साथ एक स्त्री गोलन्दाज़ और है। राधारानी तोपखाने को संभाल लेती है। गुलामग़ौस अपने साथी सहित चला जाता है। गोलाबारी फिर होने लगती है। राधारानी गोलन्दाज़ी करती है। उसका चेहरा बारूद की कालोंच से लगभग पुत जाता है। अंग्रेज़ी गोले का एक टुकड़ा राधारानी के कन्धे पर पड़ता है; वह भरभराकर गिरती है। लक्ष्मीबाई आती हैं। राधारानी को लोहूलुहान पाकर गोद में लेकर धूल में बैठ जाती हैं। मुन्दर आती है।)

लक्ष्मीबाई—ग़ौस।

(मुन्दर आज्ञा को समझ कर ग़ौस को लिवा लाती है।

गुलामग़ौस—यह क्या सरकार! न जानें कितने और सरदार क़ुरबान होंगे। हुज़ूर हमलोगों को समझाती हैं कि स्वराज्य की लड़ाई किसी के मरने जीने पर निर्भर नहीं है। और फिर बख्शिन जू तो अमर हो गईं। उठिये। देखिये उस जवांमर्द बख्शी को। वह अपने ठिए पर अटल है। आप ऐसा मोह करेंगी तो हमलोग गोरों को कैसे हरा सकेंगे ? आप यहां से हट जांय और दीवान खास में बैठकर आज्ञा भेजती जायें।

(लक्ष्मीबाई जाती हैं। दूसरी दिशा से भाऊ आता है।)

भाऊ—इनसे बढ़कर झांसी और झांसी की रानी हैं!

(बख्शिश के शव को उठा ले जाता। गुलामगौस तोपखाने को संभालता है और बाढ़ें दाग़ता है। अंग्रेजों की गोलाबारी ठंडी पड़ जाती है। अंग्रेजों का चीत्कार सुनाई पड़ता है।)

चौथा दृश्य

[स्थान—झांसी के बाहर कमासिन टौरिया के निकट जनरल रोज़ का शिविर। समय-रात्रि।]

(एक मुहरी से निकल कर पीरअली और दूल्हाजू आते हैं। नेपथ्य में रोकटोक की आवाज़ होती है।)

पीरअली—(कूकादेकर) प्याल ! प्याल !! प्याल !!!

(सन्त्री आता है)

सन्त्री—अच्छा तुम लोग हो। जनरल साहब का डेरा वह है।

(वे दोनों उस ओर बढ़ते हैं। उसी समय जनरल रोज़ और ब्रिगेडियर स्टुअर्ट आजाते हैं।)

रोज़—अच्छा, पीरअली! दूसरा कौन है?

पीरअली—दीवान दूल्हाजू। एक बिगड़े हुए रईस हैं। रानी साहब की एक सहेली ने जो उनकी स्त्री सेना में एक अफ़सर है इनकी बहुत बेइ-ज्ज़ती की है। इन्होंने भी अंग्रेज़ सरकार की मदद करनेका बीड़ा उठाया है।

(रोज़ एक क्षण के लिए स्टुअर्ट की ओर देखता है)

रोज़—दीवान किस काम पर तैनात हैं?

पीरअली—ओर्छा फाटक और उसका तोपखाना आपही के हाथ में है हुज़ूर।

रोज़—आप धरम ईमान से काम करेंगे दीवान साहब?

पीरअली—ये हुज़ूर गङ्गा जी की सौगंध खायंगे।

(दूल्हाजू सकपका जाता है)

रोज़—(दृढ़ता पूर्वक) बोलो, बोलो, सौगंध लो।

दूल्हाजू—(कांपते हुए गले मे) मै सौगंध खाता हूँ-आप के साथ बेईमानी नहीं करूंगा। आप जो कुछ कहेंगे, करूंगा।

पीरअली—हुज़ूर इनको इनाम मिलना चाहिए।

रोज़—दो गांव हमेशा के लिए जागीर में दिए जायंगे। तब जब झासी हमारे अधिकार में आजायगी।

दूल्हाजू—काम बतलाया जाय।

(रोज़ और स्टुअर्ट आपसमें बहुत धीरेधीरे कुछ सम्मति करते है।)

रोज़—जब ओर्छा फाटक के सामने वाले हमारे मोर्चे के पीछे लाल झण्डा देखो तब फाटक खोल दो। तुम्हारे तोपखाने के गोले हमारे किसी मोर्चे पर भी न पड़ें। हमारा भी कोई गोला तुम्हारे मोर्चे पर नहीं पड़ेगा। हमारे गोले ओर्छा फाटक की दाहिनी टेक वाले बुर्ज पर पड़ेंगे।

पीरअली—रानी साहब की वह सहेली उसी जगह से तोप चला रही है आज। सुन्दरबाई उसका नाम है।

दूल्हाजू—आपने हुकुम दिया है मैं वैसा ही करूंगा।

रोज़—हमारे साथ दग़ा फ़रेब या बेईमानी करोगे तो सबसे पहले तुमको ही फांसी पर टागा जावेगा। समझ गए?

दूल्हाजू—हुजूर।

रोज़—सैंयर फाटक पर कौन है पीर अली?

पीरअली—खुदाबख्श।

रोज़—कुल कितने गोलन्दाज़ हैं अब?

पीरअली—बेशुमार हैं। गुलामग़ौस और मोतीबाई मुसलमानों में खास हैं। हिन्दुओं की एक बड़ी अफ़सर राधारानी मारी गई! उसका पति लालाभाऊ नामी गोलन्दाज़ है। रघुनाथसिंह वगैरह और भी बहुत से हैं। राहतगढ़ से भागे हुए पठान क़िले में होकर लड़ रहे हैं, यह आपको मालूम ही है।

रोज़—हूँ—ऊं—यह मोतीबाई कौन है ?

पीरअली—एक नाचने गाने वाली औरत। रानी साहब के जासूसी मुहकमें की सरदार।

रोज़—डैन्सिंग गर्ल ए गनर ! व्हाट एल्स हैव आई टु हियर इन दिस डैम्ड एकर्सेड प्लेस !! ✽ मगर जासूसी मुहकमें का अफ़सर तो एक मोती सांई सुना गया था ?

पीरअली—नहीं हुज़ूर, वह अफ़सर यही नाचने वाली है उसका नाम मोतीबाई है। मोतीसाईं नाम का वहां कोई नहीं है।

(दोनों अंग्रेज़ हँस पड़ते हैं)

रोज़—स्टुअर्ट, हम लोग बेवकूफ़ बनगए। अच्छा, पीरअली, और कोई बात ?

पीरअली—हां हुज़ूर कालपी से राव साहब और तात्या टोपे झासी को की मदद के लिए फ़ौज लेकर आरहे हैं।

रोज़—(स्टुअर्ट, की ओर दृष्टिपात कर के) अच्छा, अच्छा। हमारा काफ़ी इन्तिज़ाम है। कोई बात नहीं। और कुछ ?

पीरअली— हुज़ूर क़िले में बारूद बहुत है। इस पर भी और बनाई जा रही है। क़िले में जो इमली के पेड़ है उनके नीचे सुखाई जाती है।

रोज़—अच्छा ! ओह !! हूँ।

पीरअली—और हुज़ूर क़िले के पश्चिमी हिस्से में ही एक कुआ है और कहीं पानी नहीं।

रोज़—ओ ! ओ !! ओ !!! अच्छा अब तुम लोग जाओ।

(वे लोग जाते हैं। उनके उपरान्त रोज़ और स्टुअर्ट भी अपने डेरे पर चले जाते हैं।)

✽ नाचने वाली गोलन्दाज़ ! इस सत्यानासी पलीत जगह में मुझको अब और क्या सुनना बाक़ी रह गया ?

पांचवां दृश्य

[स्थान—झांसी के क़िले का एक भीतरी भाग। समय—सन्ध्या। दोनों ओर से तोपें चलते चलते धीमी पड़ गई हैं। लक्ष्मीबाई, मुन्दर, मोतीबाई, जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह, रामचन्द्र देशमुख और थोड़े से और लोग आते हैं।]

लक्ष्मीबाई—तुम सब मेरे रण बाँकुरे हो। तुम सबको रण कंकण बांधूँगी।

जवाहरसिंह—(हँसकर) उसके गौरव के लिए, सरकार, हमारी कलाही, मारने के लिए खड्ग और मरने के लिए सिर फड़फड़ा रहे हे।

लक्ष्मीबाई—(मुस्करा कर) जियोगे, अमर रहोगे, सेनापति। ला मुन्दर।

(मुन्दर अपने झोले में से रण कंकण निकाल कर देती है। लक्ष्मीबाई सब की कलाहियों पर बाँध देती हैं। भाऊ बख्शी आता है। हाथ में दूरबीन लिए है।)

भाऊ—सरकार, कालपी की सेना लौटकर चली गई है। वह अंग्रेज़ों से हार गई।

लक्ष्मीबाई—मैंने जवाहरसिंह से सुन लिया है, और दूरबीन से अपनी आंखों देख लिया है। पर इससे क्या हम लोगों को घबरा जाना चाहिए? 'हारिए न हिम्मत बिसारिए न राम नाम' अपना बीज मन्त्र है। तात्या असाधारण सेनापति है और राव साहब पेशवा के हाथ में असंख्य सेना और सामान है। आओ बख्शी तुमको भी रण कंकण बांधूँ।

भाऊ—(मुस्कराकर) असल में आया तो मैं इसी के लिए था, सरकार। (कलाही बढ़ाता है)

लक्ष्मीबाई—(कंकण बांधते हुए) एक ही त्याग, एक ही मरण, एक ही जन्म से स्वराज्य सिद्ध नहीं होता। कर्तव्य पालन करते हुए मरना

जीवन का दूसरा नाम है। यह रण कंकण जीवन और मृत्यु की मैत्री का प्रतीक है, उत्साह और दूरदर्शिता का समन्वय, शक्ति और संयम का सामञ्जस्य, त्याग और कौशल की रसायन, शौर्य और विवेक का वाहन, तपस्या और शील का पाणिग्रहण।

भाऊ—(हंसकर—उसकी हंसी थके हुए योधा की हंसी है।) सरकार मैंने कफ़न सिर से बांध लिया है। रङ्ग उसका केसरिया इसलिए है कि सरकार का झण्डा इसी रङ्ग का है।

लक्ष्मीबाई—(मुस्कराकर) मैं जो यह सब कह गई सो तुम इस प्रकार समझे! (सस्नेह ज़रा सा झिड़कती हुई) मरने के लिए भी थोड़े से विवेक से काम लेना चाहिए। बख्शिश कितने धीरज वाली थी!

(भाऊ का चेहरा गिर जाता है। वह सिर लटका लेता है।)

लक्ष्मीबाई—(मीठे स्वर में) मैं तुम्हारे लिए, तुम सबके लिए अपने हाथ से कलेवा रांधूँगी। पेट भर के खाना। खाओगे न? और जी भर के लड़ना—बुद्धि के साथ।

सब—अवश्य, सरकार, अवश्य।

(मोतीबाई उचटकर एक ऊंचे स्थान पर जाती है और कुछ देखकर लौटती है।)

मोतीबाई—सरकार, ओर्छा फाटक की तोप ढीली पड़ गई है। बाहर की उस टेक पर एक लाल झण्डा उठा है। यहां से थोड़ी सी झांई पड़ रही है, उस ऊँचे स्थान से उसका गहरा रङ्ग साफ़ दिखता है।

(भाऊ रानी के हाथ में दूरबीन देता है। वे मोतीबाई द्वारा बतलाए हुए ऊंचे स्थान से देखती हैं। फिर नीचे आ जाती हैं।)

लक्ष्मीबाई—ओर्छा फाटक के बाहर वाली टेक पर वास्तव में लाल झण्डा खड़ा किया गया है। यह रङ्ग और झण्डा अंग्रेज़ों का नहीं है। यह किसी छल, किसी द्रोह, किसी घात का संकेत है।

मोतीबाई—(घबराकर) सरकार, मालूम होता है दूल्हा जू ने स्वामिघात किया है। वहां सुन्दर अकेली पड़ गई है। मुझको उसकी कुमुक पर जाने की आज्ञा दीजिए।

लक्ष्मीबाई—जाओ मोती। धीरज से काम लेना।

(मोतीबाई जाती है)

जवाहरसिंह—मैंने पीरअली की शिकायत सुनी थी जो सरकार को सुना दी थी, परन्तु जांच पड़ताल का अवसर ही नहीं मिला।

लक्ष्मीबाई—धोखा हो गया! अस्तु, अब जो कुछ सामने है उसको देखो। देशमुख तुम मोतीबाई के पीछे पीछे जाओ। वह अकेली गई है। (देशमुख जाता है) तुम मेरे साथ आओ, भाऊ।

(वे दोनों जाते हैं)

छठवां दृश्य

[स्थान—झांसी क़िले के परकोटे पर ओर्छा फाटक। ओर्छा फाटक की दाईं ओर एक टेक पर बुर्ज फाटक बन्द है। गोलाबारी हो रही है, परन्तु अंग्रेज़ी तोपख़ाने का मुंह ओर्छा फाटक पर नहीं है। और न ओरछा फाटक से अंग्रेज़ों पर गोलाबारी हो रही है। दूल्हाजू लोहे की लम्बी छड़ लेकर फाटक पर धीरे धीरे आता है। फाटक पर ताले पड़े हुए हैं। वह उनकी सांकलों को छड़ से तोड़ता है। इस प्रकार जब सब सांकलें टूट जाती हैं तब सुन्दर आती है। वह हाथ में नंगी तलवार लिए है। अभी दिन डूबने में काफ़ी देर है। सुन्दर को देखकर दूल्हाजू सहम जाता है।]

सुन्दर—(कड़ककर) नरक के कीड़े! देशद्रोही!! तू अंग्रेज़ों से कुछ नहीं पावेगा!!!

(तलवार का वार करती है। दूल्हाजू छड़ पर उस वार को झेल लेता है। तलवार बीच में से टूट जाती है। तलवार का जो

टुकड़ा सुन्दर की मुट्ठीमें रह जाता है, उसी से वह दूल्हाजू पर वार पर वार करती है। दूल्हाजू बरकाव करता है। दूल्हाजू उसकी छाती पर छड़ अड़ा देता है। फाटक के बाहर (नेपथ्य में) अंग्रेज हुर्रा घोष करते हैं। सुन्दर फिर वार करती है। दूल्हाजू के हाथ की छड़ सुन्दर के पेट में अड़जाती है। अंग्रेजी सेना फाटक को खोलकर धस आती है। सुन्दर के मुँह से 'हर हर महादेव' निकलता है। एक गोरा उस पर पिस्तौल चलाता है। वह गिर जाती है। दूल्हाजू छड़ को पृथिवी पर टेक कर खड़ा होजाता है। कुछ गोरे दूल्हाजू पर संगीन लगी बन्दूकें सीधी कर लेते हैं। उसी समय ब्रिगेडियर स्टुअर्ट, जो गोरे सिपाहियों की एक ओर है, रोकता है।)

स्टुअर्ट—अपना आदमी है!

(गोरे बन्दूकें ऊपर को उठा लेते है)

स्टुअर्ट—(नीचे पड़ी हुई सुन्दर की ओर इंगित करके) यह रानी है? रानी लक्ष्मीबाई?

दूल्हाजू - नहीं साहब, महज़ नौकरानी!

स्टुअर्ट--(उपेक्षा की दृष्टि से दूल्हाजू की ओर देखकर) लेकिन सिपाही है। इसको सिपाही का सत्कार दिया जायगा। (अपने साथियों से) यह अपनी मूठ में अब भी तलवार लिए हुए है। वर्दी में है। इसको पीछे लेजाकर कहीं गाड़ दो। जल्दी करो! इज्ज़त के साथ!!

(कुछ गोरे उसको उठा लेजाते है)

स्टुअर्ट—अब एकदम शहर पर धावा बोलो। हथियारबन्द औरतों को छोड़कर और किसी औरत पर वार मत करना। बाक़ी लोगों का विजन* करो। रानी क़िले से निकल कर हमला करे तो मकानों की आड़ें ओटें लेकर बढ़ना। आगे वह रहा रानी का महल। उसपर फ़ौरन कब्ज़ा करो। बढ़ो।

---

* आज भी बुन्देलखण्ड में 'क़तल आम' को विजन कहते हैं।

(गोरे सैनिक नगर में घुस पड़ते हैं और फैल जाते हैं। नेपथ्य में मोतीबाई कहती है—'सैंयर दरवाज़े पर कुंवर खुदाबख्श मारे गए !' नेपथ्य में रामचन्द्र देशमुख कहता है—'मैं उनको क़िले में लिए चलता हूँ। क़िले भीतर हो जाओ।' इसके बाद नेपथ्य में विजन का कोलाहल होता है। गोरी सेना नगर में फैलती जाती है। आगें लगाई जा रही हैं। स्टुअर्ट अपने दल सहित एक ओर जाता है दूसरी ओर से लक्ष्मीबाई सदल आती हैं। नाना भोपटकर साथ है। गोरी सेना से लक्ष्मीबाई के दल की लड़ाई होती है। गोरी सेना हटा दी जाती है।)

भोपटकर—(आगे बढ़कर) पहले इस बूढ़े ब्राह्मण का बध करिए तब आप गोली खाइए।

लक्ष्मीबाई—नाना साहब, यह क्या ?

भोपटकर—समझदार होकर भी आप देखती नहीं हैं, गोरे मकानों की आड़ से गोली चला रहे हैं ? आप पर एक गोली पड़ी कि समग्र झांसी रसातल को गई। अभी अपने हाथ में क़िला है। लड़ाई जारी रक्खी जासकती है। लौटिए, लौटिए या मेरा बध करिए।

लक्ष्मीबाई—(एक क्षण सोचकर) हूँ।

(पठानों का सरदार गुलमुहम्मद आगे आता है वह अधेड़ अवस्था का पुष्ट देह मनुष्य है)

गुलमुहम्मद—सरकार, बुड्ढा ठीक बोलता हे। अन्दर चलें। सरकार ज़िद नईं करे।

लक्ष्मीबाई—अच्छा। (तलवार ऊंची उठाकर) सब लोग क़िले के भीतर हो जाओ।

(वे सब चले जाते हैं। इसके उपरान्त अंग्रेज़ी सेना नगर के चौराहों और गलियों में घुस पड़ती है। घुसती हुई चली जाती है। नेपथ्य में हुर्रा घोष होता है। और, आग की लपटें दिखलाई पड़ती हैं। कोलाहल बढ़ता है)

सातवां दृश्य

[स्थान—झाँसी के क़िले का भीतरी भाग । सन्ध्या हो रही है । रानी और मुन्दर आती हैं । दोनों सैनिक वेश में ।]

लक्ष्मीबाई—(दूरबीन से आग की लपटों को देख कर) मुन्दर, महल आधा जल चुका है—कोई बात नहीं । पर यह पुस्तकालय ! हा, हमारा पुस्तकालय !! वेद, शास्त्र, पुराण भस्म किए जारहे हैं !!! काव्य और नाटक फूँके जारहे हैं !!!! हा कालिदास, कालिदास को राख किया जारहा है !!!!! मुन्दर, मुन्दर ।

(लक्ष्मीबाई मूर्छित होने को होती हैं । मुन्दर थाम लेती है । नेपथ्य में आग की लपटें और भी बढ़ती हैं और जनता के चीत्कार सुनाई पड़ते हैं ।)

लक्ष्मीबाई—(मुन्दर की थाम से खिसक कर, भरभरा कर बैठते हुए—मुन्दर बैठकर उनकी पीठ को सहारा देती है) मुन्दर, मुन्दर, मेरी प्यारी झांसी की यह कुगति ! यह दुर्गति !! मेरे जीतेजी !!! मेरी आँखों के सामने !!!!

(लक्ष्मीबाई का गला फट जाता है और बिलख बिलख कर रोती हैं । रामचन्द्र देशमुख आता है)

मुन्दर—(रोते हुए) कुँवर साहब, यह हमारी शान, यह हमलोगों की दुर्गा, रो रही हैं ! मै क्या करूँ ? अब क्या होगा ?

रामचन्द्र— (रुँधे गले से) बाई साहब ! सरकार !! संभलिए, सोचिए । कुँवर गुलाम ग़ौस खां दुश्मन की गोली से मारे गए ।

(लक्ष्मीबाई उछल कर खड़ी होजाती हैं । आँसुओं को पोंछती हैं और गला साफ़ करती है ।)

लक्ष्मीबाई—भाऊ को उनकी जगह भेजो और लाश को महल के पास ।

रामचन्द्र—(नीचा सिर करके) सेनापति खुदाबख्श भी मारे गए हैं। उनकी लाश उठा लाया हूँ।

लक्ष्मीबाई—वहीं महल के पास दोनों दफ़नाए जायंगे। जाओ।

(रामचन्द्र देशमुख जाता है। मोतीबाई आती है। वह उदास है)

मोतीबाई—कुँवर गुलाम ग़ौस खां भी मारे गए!

लक्ष्मीबाई—हां मोती। एक दिन सबको मरना है। परन्तु वीर की मौत बिरलों को ही मिलती है। दक्षिणी तोपखाना चुप पड़ गया है। जा मेरी मोती, उसको जगा तो दे।

मोतीबाई—अभी लीजिए सरकार।

(मोतीबाई जाती है। नेपथ्य में तोपों के चलने की आवाज़ होती है। फिर बन्दूक़ चलने की। मोतीबाई कहती है—'मरी मैं')

(सुन्दर दौड़कर जाती है और एक सैनिक की सहायता से घायल मोतीबाई को उठा लाती है। लक्ष्मीबाई उसको गोद में लिटा लेती है)

लक्ष्मीबाई—(सैनिक से) तुम सब सरदारों को लिवा लाओ।

(सैनिक जाता है)

सुन्दर—(काँपते गले से) यह भी चली सरकार क्या?

मोतीबाई—(टूटे हुए स्वर में) इस गोदी में सिर रक्खे हुए मरना कि··त··नों···के···भा···ग्य···में···

लक्ष्मीबाई—आत्मा अमर है, शरीर का चाहे जो कुछ हो।

मोतीबाई—रा···नी···उ···जा···ला···

(मोतीबाई का प्राणान्त होता है। लक्ष्मीबाई उसके शव को नीचे रखकर नीचा सिर करके टहलने लगती हैं।)

लक्ष्मीबाई—सुन्दर, इसके शरीर को भी महल के पास लिवाजा। यह भी वहीं दफ़नाई जावेगी।

(सुन्दर जाती है और एक सैनिक को लाकर उसकी सहायता से मोतीबाई के शव को उठवा ले जाती है। लक्ष्मीबाई टहलती रहती हैं। कुछ क्षण के उपरान्त सुन्दर आ जाती है)

लक्ष्मीबाई—एक के बाद दूसरा, सब चले जारहे हैं। हूँ! सुन्दर, यह कालिदास के नाटक में शकुन्तला का अभिनय किया करती थी! (नेपथ्य की ओर देख कर और जलती हुई लपटों पर आंख को गड़ाकर) ओह! अब नाटकशाला भी जल रही है!! इसी में ग्वालियर की नाटक-मण्डली ने हरिश्चन्द्र के सत्य की परीक्षा का खेल दिखलाया था। वह भी भस्म हो रही है!!! (मूर्छित होने को होती हैं, परन्तु अपने को संभाल लेती हैं उसी समय नाना भोपटकर, जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह, भाऊ रामचन्द्र और गुलमुहम्मद आजाते हैं।)

लक्ष्मीबाई—पुष्पों के भस्मीभूत होने के उपरान्त वाटिका को उद्यान नहीं कहा जासकता, तान के बिगड़ जाने पर राग का लोप होजाता है; सौरभ की समाप्ति पर समीर जैसे कोरा पवन, दया के तिरोहित होने पर पुरुषार्थ जैसे केवल एक कर्कश भाव और मृदुलता के अन्त पर नारी जैसे एक विभीषिका मात्र रह जाती है वैसे ही झांसी की जनता के विजन और वेदशास्त्र, कालिदास, बाण, भवभूति इत्यादि के राख में मिल जानेके पीछे अब झासी में बचा ही क्या है? बतलाओ क्या बचा है?

जवाहरसिंह—श्रीमन्त, झांसी का जब तक नाम है आपका दिया हुआ रण-कङ्कण उस पर बलिदानों और त्यागों की वर्षा करवाता रहेगा।

लक्ष्मीबाई—(निश्वास छोड़कर) आज तक आपलोगों ने अप्रतिम वीरता से झांसी की रक्षा की। प्राणों की होड़ लगा दी। परन्तु अब चिन्ह अच्छे नहीं देख पड़ते हैं। सुन्दर, मोतीबाई, राधारानी सब चली गईं। काशी और जूही भी कदाचित वीरगति पागई हों। सागरसिंह, खुदाबख्श इत्यादि सब स्वर्गवासी होगए। क़िले की चार सहस्र सेना में से

उतने सौ भी नहीं बचे हैं। अंग्रेजों ने किला घेर लिया है। वे एकाध दिन में भीतर घुस आवेंगे।

जवाहरसिंह और भाऊ—नहीं आ पावेंगे सरकार।

लक्ष्मीबाई—(**अनसुनी करके**) आपलोगों में से जो लड़ते-लड़ते बचेंगे उनको फांसी होगी। मै पकड़ी तो नहीं जासकती, परन्तु फिरङ्गी मेरे शव का स्पर्श करेंगे। मेरे पुरखों का अपमान होगा। अब शिवराम भाऊ की बहू के लिए केवल एक साधन बचा है। बारूद के कोठे में सैकड़ो मन बारूद है। मैं वहीं जाती हूं। पिस्तौल का एक धड़ाका होगा और अपने पुरखों में मिल जाऊंगी। आप लोग गुप्त मार्ग से बाहर हो जाय।

भाऊ—(**भर्राए हुए कंठ से**) मै भी उसी बारूद के सहारे सरकार की सेवा के लिए यात्रा करूंगा। मेरा अब कौन बचा है?

भोपटकर—(**जरा सा आगे आकर**) आप आत्मघात करने जा रही हैं! यही न? कृष्णकी पूरी गीता जिसको कण्ठाग्र याद है और जो गीता के अठारहवें अध्याय को अपने जीवन में बर्तती चली आई है, और जो प्रत्येक परिस्थिति में स्वराज्य–स्थापना का, यज्ञ की वेदी पर; प्रण कर चुकी है, वह आत्मघात करेगी!!! करिए कृष्ण का अपमान। करिए गीता का अनादर। आप रानी हैं! आपकी आज्ञा का पालन तो करना ही पड़ेगा, परन्तु आपके उपरान्त देश की जनता क्या करेगी—जिसकी रक्षा के लिए आपने बीड़ा उठाया है?

गुलमुहम्मद—सरकार, हमारा आधे से ज्यादा पठान मारा गया। हम लोग आपका सोराज वास्ते सब कट मरेगा।

भोपटकर—(**मुन्दर से धीरे से**) दामोदरराव को लिवा लाओ।

(**मुन्दर चली जाती है**)

भोपटकर—आप राजमाता भी हैं। आपका नन्हा सा दामोदरराव पुरखों का प्रतीक और झांसी राज्य की आशा है। दिल्ली, कानपूर, लखनऊ इत्यादि के पतन हो जाने पर भी जनता का पतन नहीं हुआ है। आप

किले से बाहर होइए, अंग्रेज़ों की सेना को चीरती हुई निकल जाइए और कालपी पहुंच कर पुनश्च हरि ओम कीजिए।

(मुन्दर दामोदरराव को लेकर आती है)

दामोदरराव—मां, मेरी मां। मेरी आई। (वह लक्ष्मीबाई से लिपट जाता है)

लक्ष्मीबाई—(एक हाथ दामोदरराव के सिर पर फेरती हुई आकाश की ओर देखते हुए) हां, कुरुक्षेत्र का मैदान है। कौरव पांडव की सेनाएँ एक दूसरे के सामने हैं। अर्जुन ने कहा, भगवान् मेरा साहस डिग गया है। मैं असमर्थ हूँ। भगवान कृष्ण ने आदेश दिया, खड़े हो जाओ, कमर कसो और जुट पड़ो। (मुस्कराकर) अर्जुन ने गांडीव धनुष को फिर हाथ में ले लिया है !! (उपस्थित सरदारों के सामने आंख फेर कर और एक हाथ की मुट्ठी को कड़ा करके हाथ पसार कर) न दैन्य, न चपलायनम। मैं अपने आदर्श पर अटल रहूँगी।

(लक्ष्मीबाई नाना भोपटकर के पैर छूती है)

भोपटकर—महारानी, यह क्या !

लक्ष्मीबाई—मुझको क्षमा करना, नाना साहब। आपके उद्बोधन ने बचा लिया। (सब से) भाइयो, मेरी इस क्षणिक दुर्बलता को भूल जाना। मैं लड़ूंगी। समाज और स्वराज्य के लिए जिऊंगी। आज सबके सामने प्रण करती हूँ कि यदि समस्त अंग्रेज़ों का मुझको अकेले ही सामना करना पड़े, तो करूंगी। करती रहूँगी।

सब—हम सब लड़ेंगे। परदेशियों के राज को हम कभी कबूल नहीं करेंगे।

जवाहरसिंह—सरकार, हम लोग अब,और बड़ी सेना इकठ्ठी करेंगे।

रघुनाथसिंह—और भी अधिक बढ़िया हथियार जुटावेंगे।

भाऊ—कड़क बिजली और घनगरज से भी विकट तोपें ढालूंगा।

गुलमुहम्मद—अम सोराज वास्ते और भी पठान जमा करेगा।

रामचन्द्र—अब और भी धन इकट्ठा करेंगे।

सुन्दर—हम लोग स्त्रियों की अब एक ब्रिगेड बनायेंगी।

लक्ष्मीबाई—थोड़ा सा खा पी लो। जो लोग शस्त्र ग्रहण नहीं कर सकते वे गुप्त मार्ग से निकल जांय। शेष सब मेरे साथ उत्तरी द्वार से भांडेरी फाटक होते हुए कालपी की ओर चलें। भाडेरी फाटक से निकल जाने का प्रबन्ध कौन करेगा?

भाऊ—(आवेग के साथ) मैं सरकार। मेरे मुहल्ले के कोरी बिकट लड़ने वाले हैं। वे अपनी तलवारों से सरकार का मार्ग साफ करेंगे।

लक्ष्मीबाई—मैं जानती हूँ। वह राधारानी और झलकारी का मुहल्ला है। मुन्दर, तू हमारे सब नौकरों को, पुरस्कार देकर, गुप्त मार्ग से विदा कर दे।

मुन्दर—जो आज्ञा!

लक्ष्मीबाई—और जवाहरसिंह तुम अपने इलाके में जाकर सैन्य संग्रह करो।

जवाहरसिंह—मैं सरकार को सुरक्षित स्थानमें पहुंचाकर ही लौटूंगा।

रघुनाथसिंह—और मैं तो सरकार की छाया को कभी भी नहीं छोड़ूंगा।

गुलमुहम्मद—अम भी।

लक्ष्मीबाई—देशमुख भी मेरे साथ जांयगे (मुन्दर की ओर) और यह तो मेरा अङ्ग ही है। (सब से) झांसी का सिन्दूर अमर हो। सब लोग इस प्यारी दुखी नगरी को नमस्कार करो। हम लोगों को जल्दी यहां से जाना है।

(सब नमस्कार करते हैं)

लक्ष्मीबाई—अब एक बार कहो, हर हर महादेव।

(सब हरहर महादेव कहते हुए जाते हैं)

आठवाँ दृश्य

[स्थान—झांसी की एक गली। गली के दोनों ओर मकान। समय—रात्रि—पौ फटने में थोड़ा सा विलम्ब है। थोड़ी दूरी पर आग लग रही है। पूरन आता है।]

पूरन—अरी, कहां रहगई ? क्यों मुझको हैरान कर रही है ?

(झलकारी का प्रवेश)

झलकारी—काएखो बिरथा हल्ला कर रए ? आतो गओ है घर, चलौ घर में।

पूरन—अरी, घर मै मत जा। सबेरा होते ही फिर विजन होगा। कतर डालेंगे अंग्रेज़।

झलकारी—तुम दुक जाओ। मै तो अपने घर में जात हों। जाओ।

पूरन—ऐसी हठिन है, ऐसी हठिन कि जिसकी हद नहीं। आ, चली आ, मै कहता हूँ, क्यों सेत में प्राण गंवाती है।

झलकारी—कैदई कि नई आहों। जाओ जितै तुम्हारे सींग समाऐं।
(झलकारी एक ओर चली जाती है)

पूरन – भगवान, नारी है या आंधी। देख, मान जा।

(एक पड़ौसी आता है)

पड़ौसी—क्या है पूरन ?

पूरन—भैया, अभी थोड़ी देर पहले की लड़ाई में रानी साहब का मार्ग सुगम करने के लिए लालाभाऊ बख्शी के साथ साथ बहुत कोरी मारे गए। भोर होते ही गोरे बाकी कोरियों का विजन करेंगे। उससे कहा कि चल किसी खोख में छिप जायें अभी से, क्यों कि पीली पौ फटने ही वाली है, परन्तु वह घर नहीं छोड़ रही है। गोरे इसके भाई बन्द हैं, जो छोड़ देंगे ?

पड़ोसी—आ जाय तो बुला देखो। नहीं तो, मैं भी तुम्हारे साथ कहीं छिपने को चलता हूँ। रानी तो निकल गई न ?

पूरन—निकल गई। भाण्डेरी फाटक से गईं। मैंने खुद देखा। पर गोरे उनका पीछा करेंगे। अब हम लोग लाचार हैं। क्या करें, कुछ नहीं कर सकते। भगवान उनकी रखवाली करें। अरी, आती है या नहीं ? (उत्तर के लिए प्रतीक्षा करता है पर झलकारी कोई उत्तर नहीं देती। नेपथ्य में शोर होता है। वे दोनों सहम जाते हैं।)

पड़ोसी—चलो पूरन भाग चलें। झलकारी का कुछ नहीं बिगड़ेगा। अंग्रेज़ जन्डेल ने स्त्रियों के न मारने का हुकुम निकाला है, बिजन लड़कों और आदमियों का होना है। चलो। पौ फट रही है। देखो।

(वे दोनों चले जाते हैं दूसरी दिशा से कुछ गोरे सिपाही आते हैं)

एक—यहां अभी कुछ लोग बातें कर रहे थे।

दूसरा—चलो, उस तरफ़ देखें।

(वे सब जाते हैं)

(एक ओर से झलकारी आती है। उसने रानी लक्ष्मीबाई जैसी वेशभूषा की है। दूसरी ओर से कुछ गोरे सिपाही प्रवेश करते हैं। पीली पौ फट रही है।)

गोरे सिपाही—कौन :

झलकारी—रानी लक्ष्मीबाई।

गोरे सिपाही—एं !

(वे उसको घेर लेते हैं)

झलकारी—नईं तो और कौन ? हम तुम्हारे जन्डैल के पास जाउन चाहता हैं।

एक सिपाही – रानी ! झांसी की रानी !!

झलकारी—हां हां नईं तो और को ? चल, लिवाचल अपने जंडल लों।

दूसरा—तुरन्त जनरल के पास ले चलना चाहिए।

एक—चलो, ले चलो।

(वे सब हुर्रा करते हुए झलकारी को ले जाते हैं।)

नवाँ दृश्य

[स्थान—जनरल रोज़ की छावनी। जनरल रोज़ और ब्रिगेडियर स्टुअर्ट खड़े हैं। पहरे में झलकारी लाई जाती है। सवेरा हो चुका है।]

रोज़—हाऊ हैन्डसम, टो डार्क एण्ड टैरीबिल! ❀

स्टुअर्ट—लैफ्टिनेन्ट बोकर को नाहक पीछा करने के लिए दौड़ाया।

(एक झांसी निवासी आता है)

दूल्हाजू—ओह! जनरल साहब यह झांसी की रानी नहीं है। यह झलकारी कोरिन है। रानी इस तरह सामने कभी नहीं आ सकती थीं।

झलकारी—(क्रुद्ध स्वर में) अरे पापी, झांसी को होके तैंने जो का करो? बेईमान, चुगला।

(वह झाँसी वाला नीचा सिर करके चला जाता है)

रोज़—यह औरत पागल हो गई है! झलकारी! झलकारी!! तुम झलकारी कोरिन हो!!! तुमको गोली मारी जायगी।

झलकारी—मार दै, मैं का मरवे खा डरात हों?

रोज़—तुमने अपने को रानी लक्ष्मीबाई क्यों ज़ाहिर किया?

झलकारी—जी में वे बच के निकर जायं और तुम कुतका चबाउत रैं जाओ!

स्टुअर्ट—ओ! शी इज़ रियली मैड। †

❀ कितनी सुन्दर है, यद्यपि श्यामल और भयानक!

† वह वास्तव में पागल है।

रोज़—(सिर हिलाकर, गंभीरता के साथ, धीरे धीरे) इफ़ वन परसैन्ट ऑव इंडियन वी मैन बिकम एज़ मैड एज़ दिस गर्ल इज़, वी विल हैव टु लीव ऑल दैट वी हैव इन दिस कंट्री । ❀

स्टुअर्ट—यह तो कुछ स्वांग सा बना लाई है, और पागल भी अवश्य है, जनरल ।

रोज़—नहीं स्टुअर्ट, यह स्त्री हम लोगों को अपने धोखे में उलझा कर रानी को बच निकलने का समय पाने के लिए प्रपंच रच लाई है । परन्तु बोकर पीछे पीछे गया है । आशा है कि वह इस छल से बच गया होगा ।

स्टुअर्ट—(सोचकर) इस स्त्री ने जुर्म तो बड़ा किया है, परन्तु स्त्री है और दिलेर है । इसका क्या होगा ?

रोज़—कुछ नहीं । फ़िलहाल क़ैद में रक्खा जावेगा । पीछे छोड़ दूंगा (झलकारी से) तुम को गोली नहीं मारी जावेगी । क़ैद में रक्खा जावेगा । जब झांसी में अमन क़ायम हो जायगा, छोड़ दिया जायगा । (पहरे वालों से) इसको इज्ज़त के साथ क़ैद में रक्खा जाय । मगर सावधानी के साथ । यह औरत ख़तरनाक है ।

(पहरे वाले झलकारी को ले जाते है ।)

झलकारी—(जाते जाते) ईसों तो मैं रानी के संगे किले में रहकें जूझ जाती तो अच्छी होती ।

(उसको सिपाही लेजाते हैं)

❀ यदि भारतीयों का एक प्रतिशत भी ऐसा पागल हो जाय जैसी यह स्त्री है तो हमको अपना जो कुछ भी इस देश में है, छोड़कर चला जाना पड़ेगा ।

पांचवां अंक

पहला दृश्य

[स्थान—कालपी की एक शानदार इमारत की खुली हुई जगह। रावसाहब, जो अब ढीला ढाला जवान है, बांदा का नवाब, इत्यादि सरदार बैठे हैं। सबने भंग पी है। नशे का सरूर चढ़ रहा है समय—रात्रि।]

एक सरदार—गरमी तो इतनी कसके पड़ रही है कि ओफ!

दूसरा—भङ्ग ने गरमी से बाजी लगाई है।

रावसाहब—तभी तो जीतेंगे। यह कोंच नहीं है, कालपी है। यहां अंग्रेज़ों का बंटाढार कर देंगे। इधर लखनऊ की ओर नाना साहब और नवाब साहब दुश्मनों का होश ठिकाने लगा ही रहे होंगे।

बांदा का नवाब—(यह उतरती अवस्था का, मझोला मोटा आदमी है; चढ़ते हुए सरूर में बहक कर) अबकी बार दुश्मन पर यहां हम लोग ऐसी दुलत्ती कसेंगे कि उसके फ़रिश्ते याद करें। अपने पास बहुत साज सामान है यहां रावसाहब! साज सामान!!

रावसाहब—साज़ की खूब याद दिलाई, यार मेरे। कुछ थोड़े से नाच गान की भी फिकिर की जाय, न! सोचते होंगे, मेरे मन की कही। है न! सच कहिएगा।

बांदा का नवाब—बिलकुल राव साहब। ज़रा सिपाहियों को भी आराम दीजिए थके मांदे हैं बिचारे।

रावसाहब—आराम ही आराम है। उनको काफ़ी भंग, शक्कर और बादाम भेज दी हैं।

एक सरदार—भगवान आपका भला करें। अब आवे जनरल गेज़ क़बर में उसके पुरखे न हिल पड़ें तो मूंछ मुड़ा दूंगा।

दूसरा सरदार—दाढ़ी समेत? या अकेली मूंछ?

रावसाहब- दाढ़ी आप के लिए रक्खे रहेंगे। ह! ह!! ह!!! ह, ह, ह, ह!!!!

बांदा का नवाब—तो फिर किसी नाचने वाली को बुलाया जाय न?

रावसाहब—तात्या होता तो वह जल्दी कुछ बन्दोबस्त कर देता।

एक सरदार—वह तो अपने बाप के पास जालौन चला गया है। बाप मर गया हो तो जल्दी लौट आवेगा।

बांदा का नवाब—वह जो झांसी की रानी साहब के पास जूही नाम की हसीन छोकरी है उसी को न बुलवा लिया जाय? सुना है वह बहुत अच्छा गाती नाचती थी।

रावसाहब—भिड़ के छत्ते में हाथ मत डालो, नवाब साहब।

बांदा का नवाब—तब फिर?

(पहरे वाला आता है)

सरकार—झांसी की रानी साहब आई हैं। दर्शन करना चाहती हैं!

(झाँसी की रानी का नाम सुनकर सब सिटपिटा जाते हैं।)

रावसाहब और अन्य कई सरदार—रानी साहब!!!

रावसाहब—(अनमने पन के साथ) अच्छा, उनको ले आओ।

(पहरेदार जाता है)

रावसाहब—सब लोग संभल कर अदब क़ायदे के साथ बैठ जाओ। विकट हैं। कैसे बुरे समय पर आ रही हैं! ज़बान पर काबू रखना।

(पहरेदार लक्ष्मीबाई को पहुँचा कर चला जाता है। वे स्त्री वेश में हैं, परन्तु सशस्त्र हैं। उनके आते ही सब खड़े हो जाते हैं

और उनको नमस्कार करते हैं। लक्ष्मीबाई प्रति नमस्कार करती हैं। उनको अच्छे स्थान पर आदर के साथ बिठलाया जाता है। उन लोगों के लड़खड़ाते से हाथ पावों को लक्ष करके वे समझ जाती हैं कि नशे में हैं।)

लक्ष्मीबाई—आप लोगों ने सोचा आगे युद्ध का सञ्चालन किस प्रकार किया जाय?

रावसाहब—(लड़खड़ाते हुए स्वर में) हां, वही सब तो सोचा विचारा जा रहा था। आपने बड़ी कृपा की जो ऐसे समय पर आईं।

लक्ष्मीबाई—मैंने बड़ी भूल की जो बिना बूझे बताए चली आई। फ़ौज में अनुशासन और व्यवस्था की कमी के कारण आप लोग कोंच की लड़ाई हार गए। नहीं तो रोज़ की क्या मजाल थी जो इतने आदमी और सामान के होते हुए विजय पा लेता?

रावसाहब—सब ठीक हो जायगा, बाई साहब, सब ठीक हो जायगा आदमियों को थोड़ा सा आराम भी तो चाहिए।

लक्ष्मीबाई—आराम! हूँ!! हमारे सैनिक शूरवीरी और पराक्रम में अंग्रेज़ों से बढ़े चढ़े हैं, परन्तु दूरदर्शी योजना की कमी के कारण उनका शौर्य विफल हो हो जाता है। जब तक आप अपनी सेना का अच्छा प्रबन्ध नहीं करेंगे विजय दूर रहेगी।

एक राजा—जय और पराजय भगवान के हाथ में है, रानी साहब।

लक्ष्मीबाई—भगवान ने यह कहां कहा है कि सेना का किसी एक को मुख्य अधिकारी न बनाओ और मनमानी करते रहो!

(वे एक दूसरे का मुँह ताकने लगते हैं)

रावसाहब—आपने हमारी सेना को कोंच की लड़ाई में बचा निकाला था। आपकी योजना को हम लोग मानेंगे।

कुछ सरदार—(बिलकुल लड़खड़ाए हुए स्वर में) हां हां ज़रूर।

लक्ष्मीबाई—(इस खुशामद से रुष्ट होकर) राव साहब आपके पुरखों का एक ऋण मेरे ऊपर है। (कमर से तलवार खोलकर और रावसाहब के सामने मूठ की तरफ़ से रखकर) यह तलवार आपके पूर्वजों की दी हुई है। भगवान की दया से मेरे पूर्वजों ने और मैंने इसका उचित उपयोग किया। अब वह आपके आदर से वंचित होगई है। लौटाती हूँ।

(सरदारों का नशा उतरसा जाता है)

रावसाहब—(फटे हुए स्वर में, खड़े होकर) आपके पुरखों ने और आपने स्वराज्य की स्थापना के लिए जो कुछ किया वह चिरस्मरणीय है, और आपने झांसी में अंग्रेज़ों का जैसा करारा मुकाबिला किया उसका वर्णन ही नहीं किया जा सकता है। हम लोग आपकी योजना को सिर माथे रक्खेंगे। आप अपना सहयोग देने की कृपा करती रहें और अपने प्रण का स्मरण रक्खें।

(रावसाहब विनम्र भाव से तलवार लक्ष्मीबाई को लौटाता है)

लक्ष्मीबाई—(तलवार को म्यान में डालती हुई) आप लोग किसी को अपना प्रधान सेनापति बना लें और राई रत्ती उसकी आज्ञा का पालन करें जैसा अंग्रेज़ करते हैं।

सब—आगे ऐसा ही होगा।

बांदा का नवाब—हम लोग राव साहब को अपना प्रधान सेनापति बनाते हैं।

सब लोग—हा, राव साहब प्रधान सेनापति।

रावसाहब—मैं स्वीकार करता हूँ।

लक्ष्मीबाई—अच्छा है। काम ठिकाने से तो चले। नियम संयम तो हो।

रावसाहब—आपको मैं लाल कुर्ती वाले ढाई सौ सवार देता हूं। वे पैदल भी लड़ सकते हैं। खूब सीखे सिखाए हैं। अब आप युद्ध की योजना बतलाइये। ठीक उसी के अनुसार काम किया जायगा।

लक्ष्मीबाई—पहली बात तो यह है कि कुछ दिनों के लिए भंग वंग का पीना छोड़ दीजिए और सिपाहियोंमें तो यह नशीली चीज़ बिलकुल ही बन्द कर दीजिए। वे जब नशा करके लड़ते हैं तब अन्धाधुन्ध हो जाते हैं और उनको अपने अफ़सरों की आज्ञा का बिलकुल स्मरण नहीं रहता। सतरें बिगड़ जाती हैं और क्रम से अंड बंड हो जाने से सारी योजना नष्ट हो जाती है।

रावसाहब—आगे ऐसा ही होगा। अब लड़ाई की योजना बतलाइए।

लक्ष्मीबाई—अभी नहीं। भोर होने पर बतलाऊँगी। तब तक अच्छी तरह सो लीजिए।

(लक्ष्मीबाई चली जाती हैं। वे एक दूसरे का मुँह नाकते रहते हैं)

दूसरा दृश्य

[स्थान—गोपालपुरा का एक बाग़। समय दिन। रायसाहब और कई राजा तथा नवाब आते हैं। तात्या साथ में है।]

नवाब—कालपी की लड़ाई हारने का कारण सिवाय बुरी किस्मत के और कुछ हो ही नहीं सकता।

एक सरदार—अब इस स्थान पर या इसके आसपास लड़ाई नहीं हो सकती यह निश्चित है।

रावसाहब—किसी तरह नागपूर की ओर पहुंच पावें तो शीघ्र एक बड़ी सेना तैयार हो जाय। फिर जमकर लड़ सकते हैं।

एक राजा—शायद वहां की कोई अंग्रेज़ी पल्टन हमसे आ मिले। राव साहब, हमारा राज फिर क़ायम हो जाय तो देखें अंग्रेज़ों को।

रावसाहब—नागपूर पहुंच जायं तो महाराष्ट्र से बड़ी सहायता मिलेगी। तभी सबके गए हुए राज्य क़ायम होंगे।

तात्या—पहुंचा तो मैं दूंगा वहां तक।

नवाब—पर बीच में बेहिसाब अंग्रेज़ी पल्टनों और तोपों का सामना करना पड़ेगा। अपनी गांठ में बड़ी तोपें बिलकुल नहीं हैं।

तात्या—हम लोगों को एक क़िला मिल जाय तो बहुत काम चले।

नवाब—ऐसा लगता है जैसे यहां पिंजड़े में फँस गए हों।

रावसाहब—कोंच, कालपी या झांसी वापिस मिल जाय तो सब दिक्कतें दूर हो जायं।

एक राजा—राजपूताने की ओर चलिए।

रावसाहब—मेरा मन दक्षिण की ओर के लिए कहता है।

नवाब—समझ में नहीं आता कि क्या करें।

तात्या—रानी साहब से राय ली जाय?

रावसाहब—वे बहुत अच्छी सैनिक हैं, और मैं उनकी क़दर करता हूं। परन्तु स्त्री ही हैं।

नवाब—इस पर भी उन्होंने दस महीने खूबी के साथ झांसी का राज्य किया। आंधी की तरह अंग्रेज़ों से लड़ीं! प्रजा उन पर कुरबान हो गई!!

रावसाहब—ठीक है, बिलकुल ठीक है! सलाह लेने में क्या हर्ज है? बुलालो, तात्या।

तात्या—मैं उनको बुला आया हूँ। रात को आपने आज्ञा दी थी न?

रावसाहब—(हँसकर) रात की आज्ञा किसको याद रह सकती है? उस समय तो गहरी छनी थी।

(पहरेदार आता है)

पहरेदार—रानी साहब आई हैं।

रावसाहब—उनको तुरन्त लिवा लाओ।

(पहरेदार जाता है और लक्ष्मीबाई को पहुँचा कर चला जाता है। परस्पर अभिवादन होता है।)

लक्ष्मीबाई—कहिए, क्या तै किया आप लोगों ने।

रावसाहब—सोचते हैं क्या किया जाय अब?

लक्ष्मीबाई—कोई क़िला हाथ में करिए।

रावसाहब—कौन सा? नरवर का?

लक्ष्मीबाई—नहीं।

नवाब—करेरा का?

लक्ष्मीबाई—न।

रावसाहब—तब फिर और कौन सा!
नवाब—और कोई क़िला है ही नहीं!
बाक़ी सब—फिर क़िले कहां से आवें? } एक साथ

लक्ष्मीबाई—ग्वालियर का।

रावसाहब—ग्वालियर का!

नवाब—ग्वालियर का!!

लक्ष्मीबाई—हां ग्वालियर का। वही सबसे निकट है।

रावसाहब—परन्तु,—

लक्ष्मीबाई—किन्तु परन्तु कुछ नहीं। ग्वालियर पर तुरन्त आक्रमण कर देना चाहिए। राजा लड़का है। दीवान और वहां के केवल दो तीन सरदार अंग्रेज़ों के पक्षपाती हैं। जनता और सेना साथ देगी। सेना साथ भी न देगी तो ढुलमुल अवश्य रहेगी। ग्वालियर में बनी बनाई, सजी सजाई बढ़िया तोपें, गोले, गोली, सैकड़ों मन बारूद, अन्य प्रकार की बहुत सामग्री तथा अटूट कोष है।

नवाब—रानी साहब ठीक कहती हैं।

एक राजा—हिम्मत कर जाना चाहिए।

लक्ष्मीबाई—वही स्थान सब से बड़े सुभीते का भी है। वहां जल्दी जल्दी घुमाई फिराई जाने वाली हलकी तोपें भी बहुत हैं। भारी तोपें एक जगह से दूसरी जगह कठिनाई के साथ हटा पाई जाती हैं। मैदान की

लड़ाई के लिए हलकी छोटी तोपें अत्यन्त आवश्यक हैं। अंग्रेज़ों का कालपी की लड़ाई के जीतने का एक कारण उनके हाथ में इन छोटी तोपों का होना भी था। वे उनको रणक्षेत्र में चाहे जहां ले जाते थे।

रावसाहब—बिलकुल ठीक है बाई साहब! धन्य है आपकी सूझ को!! ग्वालियर पर तुरन्त धावा बोल देना चाहिए!!!

लक्ष्मीबाई—इसी घड़ी नहीं। पहले तात्या को भेज दीजिए। जब ये वहां से सब ठीक ठाक करके लौटें तब तुरन्त......

रावसाहब—बहुत अच्छा। तात्या तुम इसी पल यहां से जाओ।

तात्या—(**प्रसन्न होकर**) अभी जाता हूँ। मुझको आशा है कि हम लोग ग्वालियर को पा जायंगे।

एक राजा—अब मुझको भी आशा है कि मेरा राज्य भी मुझको वापिस मिल जायगा।

लक्ष्मीबाई—अपने राज्य की चिन्ता नहीं, जनता के सुख की ओर ध्यान दीजिए।

रावसाहब—एक ही बात है बाई साहब, एक ही बात है।

(**तात्या जाता है**)

लक्ष्मीबाई—मैं अपने सरदारों और सिपाहियों का काम देखने जाती हूँ। उनके कपड़ों का भी कुछ प्रबन्ध करना है।

(**जाती हैं**)

रावसाहब—अपने को भी कुछ काम हैं। है न नवाब साहब?

नवाब—हां, बहुत ज़रूरी। (**उछलकर देखता है कि लक्ष्मीबाई दूर निकल गई या अभी पास ही है**) महारानी साहब चली गईं। तो राव साहब, अब हां! एक बार गहरी छन जाय। फिर क़सम है। ग्वालियर का क़िला हाथ में कर लेने के बाद ही दम लेंगे।

रावसाहब—यही तो मैं कहना चाहता था। अभी लड़ाई तो कोई लड़नी नहीं है जो न पी जाय।

एक राजा—चलिए उधर बगीचे में। वहां किसी तरह की भी विघ्न बाधा नहीं है।

(वे सब जाते हैं)

चौथा दृश्य

[स्थान—ग्वालियर के बाहर की ऊबड़ खाबड़ भूमि । दो किसान आते हैं वे कुल्हाड़ियां लिए है और बग़लों में थोड़ी सी लकड़ी ! समय-दिन ।]

एक—बचकर निकल चलो, कहीं पेशवा की फौज़ वाले अपनी यह थोड़ी सी लकड़ी न छीन लें। ज़रा दम लेलो और खिसको।

दूसरा—हां लकड़ी भी लूट सकते हैं यह लोग। उस दिन शहर लूट डाला होता इन्होने। झांसी वाली रानी अपने सवारों को लेकर आ गई और पेशवा ने भी कुछ रोकथाम की, नहीं तो वे लोग सारी बस्ती को जला डालते। दीवान दिनकर राव, बलवन्त राव और सरदार माहुरकर की कोठियां तो उन लोगों ने जला ही डालीं। तुमने नहीं सुना?

पहला—सब सुना और बाद को देखा भी। हमारे महाराज बिचारे आगरा चले गए। रनवास को नरवर जाना पड़ा। अब तो बाम्हनो की बन पड़ी है। इतना श्रीखण्ड खाया, इतना कि शक्कर और दही बड़े आदमियों तक को नहीं मिलता। हम लोगों को तो तमाखू तक नहीं मिल पाती। न जाने यह गड़बड़ कब मिटेगी।

दूसरा—अरे बहुत से तो बाम्हन बीमार पड़ गए हैं। और कोई तो मर तक गए हैं।

पहला—मरेंगे ही। इन्हीं की तो बन पड़ी है। हमारे राजा का सारा खज़ाना इन्हीं लोगों पर लुटाया जा रहा है, या गवैयों, भांड-भगतियों और रंडियों पर। इन लोगों का सुराज यही तो है! मौक़ा पाया और बन गए सरदार। पागोटे धर लिए सिर पर, गहने डाल लिए गले

में, और पहिन लिए चमकीले कपड़े और लगे पीटने जग भर में ढोल, हमने त्याग किए हैं ! हमारे पुरखों ने सिर कटवाए हैं !!! हमने ग़रीबों के लिए क्या कर रक्खा है ?

दूसरा—हम लोगों के लिए तो वही बेट बेगार, दिन भर मजदूरी, और रात को अध पेटे सो जाना ।

पहला—भाग्य है भाई अपना भाग्य । भगवान ने बाम्हन बनाया होता तो श्रीखण्ड और लड्डू खाने से ही उकास न मिलता ।

दूसरा—तो बीमार पड़ कर मर जाता रे ! अधपेटे रहते हैं तो किसी की चोरी चपाटी तो नहीं करते ! किसी का फोकट में तो नहीं खाते !!

पहला—ये राजा लोग अपने अपने राज बनाने में जुटे हुए हैं असल में—

दूसरा—झांसी वाली रानी को छोड़ कर । वे किसान मजूरों को बहुत चाहती हैं । उनकी रखवाली करती हैं । तभी झांसी के किसान, मजूर और छोटी बड़ी जात के सब लोग उनके लिए कट मरे । फिरंगियों के दांत खट्टे कर दिए उन सब ने ।

पहला—वे नौलखा बाग़ में ठहरी हुई हैं । बस उन्हीं के सिपाहियों का उत्पात नहीं सुना ।

(नेपथ्य में शोर होता है)

दोनों—चलो, कोई पल्टन वाले हैं । भागो ।

(वे दोनों जाते हैं)

पांचवां दृश्य

[स्थान—ग्वालियर के फूलबाग़ का महल । महल के भीतर के एक बड़े कमरे में बड़ी सजावट और जगमगाहट है । रावसाहब का तिलक होगया है । उसको अब पेशवा का पद मिल गया है । एक ऊँचे मन्च पर सिंहासन लगा हुआ है । मन्च के

ीचे, दोनों ओर, कुर्सियों पर सरदार बैठे हुए हैं। पेशवा का दरबार है। इस दरबार में लक्ष्मीबाई या उनका कोई सरदार नहीं है। समय--दिन।]

(नेपथ्य में)—श्रीमन्त पंत प्रधान श्री पेशवा बहादुर की जय ! सवारी आ रही है !! सावधान !!! सावधान !!!! सावधान !!!!

(रावसाहब पारिषदों के साथ आता है। दो तरफ चंवर वाले हैं। पीछे उसके सिर पर एक सेवक भड़कीली छत्री ताने हुए है। रावसाहब कानों में मोतियों के चौकड़े गले में मोती जवाहरों के कंठे डाले हुए है। कपड़े उसके बहुत तड़क भड़कदार हैं। सिर पर मुकुट है। उसके आते ही सरदार खड़े होकर झुक झुककर प्रणाम करते हैं। जैसे ही वह सिंहासन पर जाता है ब्राह्मण मंगल-ध्वनि करते हैं)

रावसाहब—(मंगल ध्वनि की समाप्ति पर) सुना है कि ब्राह्मणों को श्रीखण्ड और लड्डुओं के लिए शक्कर नहीं मिल रही है। चाहे जितने दाम क्यों न खर्च हों, कहीं से भी शक्कर इकट्ठी की जानी चाहिए। ब्राह्मणों के यज्ञ, पाठ और लड्डू श्रीखंड भोजन से ही स्वराज्य की नींव पक्की पड़ेगी। इसमें अनिश्चयता नहीं है और न रत्तीमात्र भी सन्देह।

कई सरदार—बहुत अच्छा, श्रीमन्त महाराज।

रावसाहब— भङ्ग बूटी और बादाम की भी कमी न होने पावे। शंकर भोलानाथ का वरदान उसी में होकर मिलेगा।

कई सरदार—बहुत अच्छा, श्रीमन्त महाराज।

रावसाहब— समाचार मिला है कि अंग्रेज़ कई दिशाओं से सिमट कर ग्वालियर पर आक्रमण करने वाले हैं। वे यज्ञों की आहुतियों से खाक कर दिए जायेंगे। (हँसते हुए) हमारे यहां आशीर्वाद देने वाले इतने ब्राह्मण इकट्ठे हो गए हैं कि एक ब्राह्मण यदि एक एक लड्डू भ

अंग्रेज़ों पर फेक दे तो उनके सिरों पर लड्डुओं का विन्ध्याचल पर्वत खड़ा हो जायगा और वे सब दब कर मर जायंगे।

(सब हँसते हैं)

रावसाहब—अपनी तपस्या इन दिनों यही होनी चाहिए कि कोई भी ब्राह्मण दान दक्षिणा और लड्डू श्रीखंड से वंचित न रहने पावे। दूर दूर के और भी ब्राह्मणों को भी बुलाया जावे।

कई सरदार—बुलाए गए हैं और बुलाए जा रहे हैं।

एक सरदार आगे बढ़कर—श्रीमन्त एक विनती है।

रावसाहब—हां हां कहो।

वही सरदार—मेरे मौसेरे भाई का साला मुरार की लड़ाई में बेतरह लड़ा, इतना कि न उसका पता है और न उसके घोड़े का। उसके वंश में कोई नहीं है। मुझको पुरस्कार मिलना चाहिए!

रावसाहब—कहीं भाग तो नहीं गया?

सरदार (विश्वास के साथ) नहीं श्रीमन्त सरकार।

रावसाहब—पुरस्कार मिलेगा।

दूसरा सरदार—मुरार की लड़ाई में मेरा भाई गोली खाकर मरा। मुझको जागीर मिलनी चाहिए।

रावसाहब—मिलेगी। अच्छा, अब थोड़ी देर ताना रीरी और छुम छुम हो जाय। इसके बाद फिर और कुछ।

सब—हां, सरकार।

(गायिकाएं आती हैं और नृत्यगान करती हैं)

गीत

सुमन तुम हिलते क्यों रहते हो

पंखुरी खोल खोल कर,
किसको अपना रंग दिखलाते?

पवन लहर के संग सिमट कर,
खिलते और खिलाते,
फूल तुम खिलते क्यों रहते हो
सुमन तुम हिलते क्यों रहते हो

(गाकर एक ओर खड़ी हो जाती हैं)

रावसाहब—तात्या इनको पुरस्कार देकर विदा करो। ग्वालियर के और भी जितने कलावन्त हैं उन सब को निहाल कर दो। वे भी याद करते रहेंगे कि किसी का राज हुआ था और है।

तात्या—जो आज्ञा, श्रीमन्त सरकार।

रावसाहब—और सिपाहियों को खज़ाने से और भी रुपया बाट दो, इतना कि वे अघा जायं।

तात्या—जो आज्ञा श्रीमन्त सरकार। सेना की तैयारी का आयोजन? अंग्रेज़ी सेना आने वाली है।

छठवां दृश्य

[स्थान—ग्वालियर क़िले के दक्षिण पूर्व की ओर ऊंची नीची भूमि पर बाबा गङ्गादास की कुटी। समय संध्या के पूर्व। बाबा गङ्गादास कुटी में आते हैं। और चले जाते हैं।]

(नेपथ्य में—घोड़ों की टापों का शब्द होता है। फिर लक्ष्मी बाई का स्वर—'मुन्दर' घोड़ों को इसी पेड़ से बांध दे। बाबा जी की कुटी वह रही।)

(लक्ष्मीबाई और मुन्दर आती है)

लक्ष्मीबाई—बाबाजी, हमलोग प्यासी हैं।

(नेपथ्य से—'अच्छा ठहरो')

(बाबा गङ्गादास तूम्बी में जल लाते हैं। बाबा एक वयोवृद्ध, परन्तु तेजस्वी पुरुष हैं। लक्ष्मीबाई और मुन्दर उनको प्रणाम

करती हैं। वे थोड़ा-सा सिर हिलाते हैं और उनको जल पिला कर बैठने का संकेत करते हैं। वे दोनों नीचे बैठ जाती हैं।)

लक्ष्मीबाई - मैं आपसे कुछ पूछने आई हूं। मेरा मन अशान्त है। आपके उत्तर से शान्ति मिलने की आशा है।

बाबा गङ्गादास—मैं राम भजन के सिवाय और कुछ नहीं जानता।

लक्ष्मीबाई—आप टाल नहीं सकेंगे। बतलाना होगा। आपने अकेले अपने मन को शान्त कर लिया तो क्या हुआ? हमलोगों को भी तो शान्ति दीजिए।

बाबा गङ्गादास—पूछो बेटी, यदि समझ में आ जायगा तो बतला दूंगा।

लक्ष्मीबाई—यहां थोड़े दिनों में भीषण युद्ध होने वाला है। आपकी कुटी का स्थान रक्षित नहीं है। किसी सुरक्षित स्थान में न चले जाइए?

बाबा गङ्गादास—सुरक्षित है। बात पूछो।

लक्ष्मीबाई—इस देश को स्वराज्य कैसे प्राप्त होगा?

बाबा गङ्गादास—इस प्रश्न का उत्तर तो राजालोग दे सकते हैं।

लक्ष्मीबाई—नहीं दे सकते, तभी आपसे पूछने आई हूँ।

बाबा गङ्गादास—जैसे प्राप्त होता आया है वैसे ही होगा।

लक्ष्मीबाई—कैसे बाबाजी?

बाबा गङ्गादास—सेवा, तपस्या और बलिदान से।

लक्ष्मीबाई—हमलोग स्वराज्य कैसे स्थापित कर पावेंगे?

बाबा गङ्गादास—गड्ढे कैसे भरे जाते हैं? नींव कैसे भरी जाती है? एक पत्थर गिरता है, फिर दूसरा, फिर तीसरा चौथा, इसी प्रकार और। तब उसके ऊपर भवन खड़ा होता है। नीव के पत्थर भवन को नहीं देख पाते, परन्तु भवन खड़ा होता है उन्हीं के बल भरोसे पर जो नीव में गड़े हुए हैं। वह गड्ढा या नीव एक पत्थर से तो भरी नहीं जाती। और, न एक दिन में।

लक्ष्मीबाई—हमलोगों के जीवन-काल में स्वराज्य स्थापित होजायगा, बाबाजी ?

बाबा गङ्गादास—यह मोह क्यों, बेटी ? पहले से आरम्भ किए हुए काम को ही तो बढ़ा रही हो न ? दूसरे लोग आयंगे। वे इसको बढ़ाते जायंगे। अभी तो कसर है। स्वराज्य स्थापना के आदर्शवादी अपने अपने छोटे राज्य बनाकर बैठ जाते हैं। जनता को त्रास देते हैं। जनता और उनके बीच का अन्तर नहीं मिटता। और जनता के ही भीतर परस्पर कितना भेद है—ऊँच-नीच, छूतछात। जब ये अन्तर और भेद मिट जायँ और राजालोग अपनी टीमटाम तथा विलासप्रियता को छोड़कर जनता के वास्तव में सेवक बन जायं तब स्वराज्य सम्भव होगा।

लक्ष्मीबाई—सम्पत्ति वालों की स्वार्थ-प्रियता और विलास-भावना को देखकर मन टूट टूट जाता है। फिर भी क्या हमलोग प्रयत्न करती रहें ?

बाबा गङ्गादास—अवश्य। आताताइयों का नाश करके पहले स्वराज्य की पटली स्वच्छ करो। फिर कुछ हो पायगा। तुम तो भगवान कृष्ण और गीता की भक्त हो ?

लक्ष्मीबाई—आपने कैसे जाना ?

बाबा गङ्गादास—(मुस्करा कर) लोग कहते हैं। झांसी की रानी को कौन नहीं जानता ? (गंभीर होकर) देखो बेटी, गीता में निराशा के लिए रञ्चमात्र भी स्थान नहीं है। निराश लोगों के लिए उसमें अमृत के मन्त्र हैं।

मुन्दर—महाराज, हमारी सरकार हम लोगों को कभी कभी गीता की बातें समझाया करती हैं।

लक्ष्मीबाई—मैं तो पाठ भर कर लेती हूँ। समझते तो (बाबा की ओर मुँह फेर कर) आप महात्मा लोग ही हैं।

बाबा गङ्गादास—यह तुम्हारा भ्रम है, बेटी। गृहस्थ से बढ़कर और कोई साधू नहीं। मुझ से कुछ और नहीं हो सका, इसलिए कुटी बनाकर यहां रहने लगा। पश्चिम की ओर देखकर—अब तुम जाओ। सन्ध्या ध्यान का समय आ गया है।

(वे दोनों नमस्कार करके जाती हैं। बाबा गङ्गादास जाते हैं)

सातवां दृश्य

[स्थान—नगर से बाहर का एक बाग। यहां लक्ष्मीबाई का प्रवास है। पीछे उनके लाल-कुर्ती सैनिकों का शिविर। तात्या टोपी आता है। वह चिन्तित है। समय—दिन।]

(तात्या टोपी दूसरी ओर से लक्ष्मीबाई को आता हुआ देख कर प्रणाम करता है। दूर से तोपों के चलने का शब्द होता है। तात्या हाथ जोड़ कर खड़ा हो जाता है।)

लक्ष्मीबाई—क्या बात है सरदार साहब? ये तोपें किस उत्सव की चल रही हैं।

तात्या—अब तो प्रार्थना करने तक का समय नहीं रहा, बाई साहब। अंग्रेज़ आ गए हैं।

लक्ष्मीबाई—घी शक्कर की तो कमी है नहीं। लड्डुओं से न पूर दो उनको? श्रीखंड भी खिलाना, भला।

तात्या—बाई साहब—

लक्ष्मीबाई—अरे, क्या भंग छानने का भी समय नहा रहा? एक तान सुनने के लिए भी समय नहीं है?

(सुन्दर और जूही सैनिक वेश में आती हैं)

मुन्दर और जूही—सेना तैयार है सरकार।

लक्ष्मीबाई—सरदार साहब, सिपाहियों को भंग बाट दी या नहीं!

तात्या—(पैरों पर गिरने को होते हुए) रक्षा करो, देवी।

(लक्ष्मीबाई बीच में ही थाम लेती हैं)

लक्ष्मीबाई---कितना समझाया ! कितनी बार सिर मारा !! परन्तु तुम लोगों ने न सुना !!! न सुना !!!! ओह !!!!! तुम लोगों ने सभी कुछ उलट पलट दिया। फल की आशा करो, कर्म से कोई सरोकार नहीं; बलिदान करो रत्ती भर, पुरस्कार मांगो पक्के सेर की तौल का; काम राई बराबर भी नहीं दिखावट पहाड़ के समान ! तपस्या का स्वांग, त्याग का पाखण्ड, ढोंग का बहुरूपियापन !! इसके सिवाय और क्या है तुम्हारी गांठ में ?

जूही—सरकार क्षमा कर दीजिए।

लक्ष्मीबाई—(मुस्करा कर) मेरा कदाचित यह अन्तिम युद्ध होगा। (गंभीर होकर) तात्या, तुम से मुझ को बहुत आशा थी। दृढ़ हो जाओ तो अब भी बहुत कुछ कर सकोगे।

तात्या—आपकी आज्ञा का पालन अवश्य किया जायगा। अक्षर अक्षर का अनुसरण।

लक्ष्मीबाई—तैयार हो जाओ। लड्डू, श्रीखंड और भंग को गड्ढे में फेंक दो। राग रंग को बहादो। (शान्त होकर) तात्या, तुम कुशल सेनापति हो। तुरन्त मोर्चे बांधो। मैं अभी आकर अपनी योजना बतलाती हूं। उसके अनुसार डटकर काम करो।

तात्या—इसी के लिए मैं सेवा में आया था।

लक्ष्मीबाई—(ज़रा धीरे स्वर में) कदाचित विजय प्राप्त न हो तो युद्ध की सामग्री और सेना को दक्षिण की ओर ले चलने का प्रबन्ध रखना। (मुस्कराकर) तुम इस क्रिया के आचार्य हो।

तात्या—आपकी योजना के एक एक अक्षर का पालन होगा।

लक्ष्मीबाई—मैं आती हूँ। तुम चलो।

(तात्या फौजी प्रणाम करके जाता है)

लक्ष्मीबाई—मुन्दर, इन लोगों ने बहुत सी अनमोल घड़ियां यों ही खो डालीं।

मुन्दर—सरकार समर्थ हैं। सरकार बिगड़ी को बना लेंगीं।

लक्ष्मीबाई—बाबा गङ्गादास की बात को याद रखना मुन्दर।

मुन्दर—सरकार।

जूही—सरकार, मैने झासी और कालपी में तोप नहीं चला पाई थी। यहां की लड़ाई में मन के अरमान निकालूंगी।

लक्ष्मीबाई—अवश्य, मेरी कर्नल। (ऊपर की ओर देखकर) भगवन्, मेरी उस इतनी बड़ी स्त्रीसेना में केवल ये दो गांठ में रह गई हैं!

जूही- सरकार, वे स्वराज्य की नीव का पत्थर बनकर अमर हो गई।

लक्ष्मीबाई—हां, ठीक कहती हो। (मुस्कराकर) अभी नीव भरी नहीं है। अभी तो आताताइयों वाला झाड़ी झंकाड़ ही बहुत सा बाकी है। अब चलूं। यदि उन मूर्खों का नशा उतर गया हो और यदि राव साहब पेशवाई राजसीपन से उतर कर योधा बनने योग्य हो गए हों तो अपनी योजना उनके गले उतार आऊँ।

(लक्ष्मीबाई जाती हैं। पीछे पीछे मुन्दर और जूही।)

आठवां दृश्य

[स्थान—ग्वालियर के बाहर कारण क्षेत्र। कुछ दूरी पर पीछे ग्वालियर का किला, सोनरेखा नाला और बाबा गंगादास की कुटी-झांई सी-दिखलाई पड़ती है। इधर उधर दूरी पर टौरियों की ऊंची नीची पाँतें। पूर्व उत्तर के कोने पर खुला हुआ मैदान। दोनों ओर से युद्ध हो रहा है। अभी सूर्योदय नहीं हुआ है। पौ फटने वाली ही है। सन् १८५८ की अठारहवीं जून है। एक कोने में छोटा सा तम्बू है। उसके सामने सैनिक वेश में मुन्दर आती है। वह कान लगाकर कुछ सुनती है। कुछ क्षण बाद लक्ष्मीबाई का स्वर सुनाई पड़ता है—] यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत। **(फिर गुनगुनाहट सुनाई पड़ती है)**........संभवामि युगे युगे ;

'मुन्दर, मेरा घोड़ा कल की लड़ाई में घायल हो गया है। बिना विलम्ब के दूसरा ले आ। मैंने नींद खुलने पर देखा, वह काम नहीं दे सकेगा।

मुन्दर—जो आज्ञा सरकार। कल की लड़ाई में इस घोड़े ने विजय दी थी, आज की मैं दूसरा देगा।

(नेपथ्य से लक्ष्मीबाई)—सरदारों को भेजदे। मैं तैयार हो रही हूँ।

मुन्दर—बहुत अच्छा सरकार।

(मुन्दर जाती है। जूही सैनिक वेश में आती है। उसने केशों को फूलों से सजाया है। अपना कुला साफ़ा हाथ में लिये है)

(नेपथ्य से लक्ष्मीबाई)—पहरे पर कौन है।

जूही—मैं हूँ सरकार, जूही।

(नेपथ्य से लक्ष्मीबाई)—कर्नल जूही। अच्छा मैं आ रही हूँ।

जूही—(प्रसन्न होकर गाते हुए)

उन मुस्कानों की बलि जाऊँ

सती चिता की दीप शिखिर पर जो लहराती रहती हैं,
निबलों के भी कण कण में जो ज्योति जगाती रहती हूँ,
बलिदानों की—

(सैनिक वेश में लक्ष्मीबाई का प्रवेश वे लाल कुर्ती के अफ़सर को वर्दी पहिने हुए हैं। गले में हीरे मोतियों के कंठा है और दोनों ओर तलवारें)

लक्ष्मीबाई—अरी क्या यह जाने का समय है ?(फूलों की ओर मुस्कराहट भरा संकेत करके) ओहो, कर्नल साहब को आज फूल सजाने की सूझी है ! (हँसकर) कहां मिल गए री तुझको इतने फूल !

जूही-(हसकर) आज, सरकार, फूलों की महक और देश की मुक्ति का मिलन जो होता है।

लक्ष्मीबाई—(जूही की पीठ पर हाथ फेर कर) देख, पागल मत हो जा। तेरे फूल और हँसने को देखकर मेरे मन में खुटका होता है। सिपाही में वीरता से भी अधिक शान्ति और धीरज होना चाहिए।

जूही—(मुस्कराते हुए) सरकार ने बाबा गङ्गादास वाली बात मुझको भी सुनाई थी ।

लक्ष्मीबाई—(गंभीर होकर) हां जूही, परन्तु उतावलेपन और और ताव में आकर नहीं, दृढ़ता और ठण्डक के साथ, आज काम करना है ।

जूही—(हँसकर) क्यों नहीं सरकार, क्यों नहीं ? (गंभीर होकर) एक हसरत मन को टीस दे रही है । सरकार को अपना अभिनय अच्छी तरह न दिखला पाया । , और न पेट भर के गाना सुना पाया ।

लक्ष्मीबाई—किसी दिन देखूंगी और सुनूँगी, मेरी जूही । तूने कुछ खा पी लिया ।

जूही—हां, सरकार । पानी की कुप्पी भी तैयार कर ली है ।

लक्ष्मीबाई—शर्बत तैयार किया गया है । थोड़ा सा पी ले और अपने दस्ते को तथा तोपों को संभाल । चमका तो दे आज अपने नाम को ।

जूही—(हँसकर) अवश्य सरकार । सरकार की मुस्कराहट ने मुझको हँसी दी और हौसला दिया । आज आशीर्वाद दीजिए कि आपकी जूही देश के काम और अपने नाम की सच्ची हक़दार हो ।

(रानी मुस्कराने का प्रयत्न करती हैं । उनका गला भर आया है । सिर हिलाकर ही आशीर्वाद दे पाती हैं ।)

(जूही कुला-साफे को सिर पर रखती है । उसके नीचे से कुछ फूल दिखलाई पड़ते हैं । जूही हँसते हुए और गाते हुए जाती है—'उन मुस्कानों की बलि जाऊँ ।' लक्ष्मीबाई निश्वास छोड़कर उसकी ओर देखती रहती है ।)

लक्ष्मीबाई—यह हँसी मौत का घूंघट है ।

(नेपथ्य में टापों का शब्द होता है । मुन्दर आती है)

मुन्दर—सरकार, घोड़ा ले आई हूँ । बहुत पुष्ठ और पानीदार मालूम होता है । ग्वालियर नरेश के निजी अस्तबल का है ।

लक्ष्मीबाई—देखती हूँ ।

(दूसरी ओर से रघुनाथसिंह, गुलमुहम्मद, और रामचन्द्र देशमुख आते हैं । सब लाल कुर्ती के अफ़सरों की वर्दी में है । लक्ष्मीबाई को फौजी प्रणाम करते हैं । लक्ष्मीबाई प्रति नमस्कार करती हैं)

वे सब—हम लोग तैयार हैं ।

लक्ष्मीबाई—खा पी लिया ? तुम्हारे सिपाहियों ने भी

वे सब—हां, सरकार ।

लक्ष्मीबाई मैंने तुम लोगों को आज की लड़ाई का सब रात में ही नकशा समझा दिया था । रामचन्द्र, आज दामोदरराव को तुम अपनी पीठ पर कसना । मैं बिना बोझ रहूँगी । यदि मैं मारी जाऊँ तो इसको किसी तरह दक्षिण सुरक्षित पहुचा देना । (मुस्कराकर) तुम सब एक बात और अच्छी तरह ध्यान में रखना । मारी जाने पर ये विधर्मी मेरी देह को छूने न पावें ।

वे सब—ओफ़ ! सरकार !!

लक्ष्मीबाई—(मुस्कराते हुए) थोड़ा थोड़ा मेरे हाथ का बनाया हुआ शर्बत पीकर जाओ । चाहती थी अपने सब सिपाहियों को पिलाती परन्तु अब समय नहीं है ।

(वे सब दृढ़ होकर फ़ौजी प्रणाम करके जाते हैं)

लक्ष्मीबाई - मैं अब उस घोड़े को परख लूं ।

(लक्ष्मीबाई जाती हैं)

(नेपथ्य में लक्ष्मीबाई)—मुन्दर, यह घुड़सार का चाहने वाला घोड़ा है । अड़ियल निकलेगा, पर अब कुछ और प्रबन्ध नहीं हो सकता । देखूंगी ।

(लक्ष्मीबाई आती हैं)

मुन्दर—मैं इसको हट्टा कट्टा देखकर ले आई ।

लक्ष्मीबाई—कोई बात नहीं। देखूंगी। अब शर्बत ले आ मुन्दर।

(मुन्दर जाती है और शर्बत तथा कटोरा लेकर आती है। लक्ष्मीबाई एक कटोरा पी लेती हैं। मुन्दर दूसरा कटोरा भरती है। जैसे ही लक्ष्मीबाई उस कटोरे को ओठों के निकट ले जाती है। दूरी पर बिगुल का शब्द होता है।)

लक्ष्मीबाई—(कान लगाकर) यह अंग्रेज़ों की बिगुल है, मुन्दर।

(उसी समय तोप चलने का शब्द होता है और गोले के सन्नाने का)

लक्ष्मीबाई—यह अंग्रेज़ों की तोप का गोला है।

(कटोरा फेंक देती है)

लक्ष्मीबाई—मुन्दर, हर हर महादेव। चल, आज बराबर मेरे साथ रहना।

(उसी समय सूर्योदय होता है जिससे उनका कंठा दमक उठता है)

मुन्दर—हर हर महादेव! सरकार के साथ छाया की तरह रहूँगी।

(लक्ष्मीबाई म्यान से तलवार खींच लेती है। मुन्दर भी। तलवारें सूर्य की किरणों से चमक उठती हैं। वे दोनों जाती है। दोनो ओर से तोपें और बन्दूकें चलती हैं। नेपथ्य में लड़ाई का कोलाहल होता है। घोड़ों की टापें सुनाई पड़ती हैं और दौड़ने भागने के शब्द। सिपाही आते हैं और चले जाते हैं। इनके बाद राव साहब और उसका एक साथी आते हैं)

रावसाहब—तात्या को खबर दो कि हमारा मोर्चा बिगड़ गया। रियासती सिपाही अंग्रेज़ों से जा मिले हैं।

(वह जाता है। उसके बाद घबराहट में रावसाहब। इसके उपरान्त कुछ अंग्रेज सिपाही आते हैं। उनके पीछे पीछे कुछ हिन्दुस्तानी सिपाही। दोनों दल लड़ते हुए चले जाते हैं। ऐसा

कई बार होता है। कभी वे भाग पड़ते हैं और कभी ये। नेपथ्य में—'सरकार, जूही तलवार से लड़ते लड़ते मारी गई।' नेपथ्य से—'ओफ! मुन्दर, सावधान होकर लड़ना।' अंग्रेजों का 'हुर्रा' घोष सुनाई पड़ता है कुछ हिन्दुस्तानी सैनिक भागते हुए आते हैं, उनके पीछे कुछ अंग्रेज संगीनें चढ़ाए हुए। इनके पीछे लक्ष्मीबाई के लाल कुर्ती सैनिक। वे सब लड़ते लड़ते आते जाते रहते हैं। सन्ध्या का समय हो रहा है)

(नेपथ्य में)—रावसाहब का मोर्चा बिलकुल उखड़ गया है। तात्या कहां है? तात्या कहां है?

(नेपथ्य में)—वह अंग्रेज़ों के व्यूह को बेध कर निकल गया है।

लाल कुर्ती का एक सैनिक—(दूसरे से) वह देखो सामने महारानी साहब को कुछ गोरे सवारों ने घेर लिया है।

(नेपथ्य में पिस्तौल चलने का शब्द होता है)

मुन्दर के कण्ठ से निकलता है—बाई साहब, मैं मरी।'

लाल कुर्ती वाला सैनिक—ओफ़ चलो! बचाओ उन्हें। मुन्दर मारी गई!!

(वे जाते हैं। उनके पीछे कुछ गोरे संगीन बरदार आते हैं।)

एक—हां हां वही तो है! देखो, वही तो है मोतियों के कंठे वाला सरदार। इसको पकड़ना या मारना है।

दूसरा - चलो, पर उस सरदार ने अपने दो गोरों को मार दिया है। होशियारी के साथ चलो।

(नेपथ्य—लक्ष्मीबाई का स्वर)—रघुनाथसिंह, उसको संभालो! गोरे उसका शरीर न छूने पावें!!

(गोरे सैनिक जाते हैं। उनके पीछे कुछ हिन्दुस्तानी सैनिक गोरे सैनिकों से घिरे हुए लड़ते हुए आते हैं।)

(नेपथ्य में)—बाई साहब के पेट में संगीन की हूल लग गई है! ओफ़!!

(नेपथ्य में पिस्तौल चलने का शब्द होता है। रानी लक्ष्मीबाई का शब्द हूँ—मैं स्वराज्य की नींव का पत्थर होने जा रही हूँ।)

एक गोरा सैनिक—ओह ! उधर चलो।

(वे लड़ते लड़ते जाते हैं। कुछ घायल गोरे कराहते हुए आते हैं। नेपथ्य में पिस्तौल का शब्द।)

(नेपथ्य में रघुनाथसिंह का स्वर—संभालो देशमुख, रानी साहब घोड़े पर से गिर रही है।)

(घायल गोरे चले जाते है। गुलमुहम्मद घबराया हुआ आता है)

गुलमुहम्मद—(पार्श्व के पास से)—पाक परवरदिगार ! रहम !! रहम !!! हमारी रानी पर रहम !!!!

(वह रोता है)

(रघुनाथसिंह पीठ पर मुन्दर का शव बांधे हुआ आता है)

रघुनाथसिंह—कुंवर गुलमुहम्मद यह क्या ? याद रखिए अपने मालिक ने अखीर में क्या कहा था—मेरी देह को अंग्रेज़ न छूने पावें। (नेपथ्य की ओर) देशमुख, वह है बाबा गङ्गादास की कुटी। वहीं ले चलो। मैं आया।

(वे दोनों जाते हैं)

नवाँ दृश्य

[स्थान—बाबा गङ्गादास की कुटी। रामचन्द्र देशमुख दामोदरराव को पीठ पर बांधे हुए, रघुनाथसिंह मुन्दर के शव को अपनी पीठ पर कसे हुए, और वे दोनों अपने हाथों पर घायल रानी को लिए हुए, कुटी पर आते हैं। बाबा गङ्गादास कुटी के बाहर आजाते हैं। सूर्यास्त होने में बहुत थोड़ा समय बाक़ी है।

रघुनाथसिंह और रामचन्द्रराव लक्ष्मीबाई को नीचे लिटा देते हैं। रघुनाथसिंह एक ओर मुन्दर के शव को रख देता है। देशमुख दामोदरराव को एक ओर बिठला देता है। वह सिसक सिसक कर रो रहा है।]

बाबा गङ्गादास—सीता और सावित्री के देश की लड़कियां हैं ये !

(लक्ष्मीबाई पानी के लिए मुँह खोलती हैं। बाबा गङ्गादास गङ्गाजल लाकर मुँह में डालते हैं)

लक्ष्मीबाई—(धीमें टूटे हुए स्वर में) हर हर महादेव !

बाबा गङ्गादास –(पश्चिम की ओर देखकर) अभी कुछ प्रकाश है। परन्तु अधिक विलम्ब नहीं है। थोड़ी दूर घास की एक गञ्जी लगी हुई है। उसी पर चिता बनाओ। (मुन्दर की ओर देखकर) यह रानी के साथ कुटी पर आया करती थी। इसका तो प्राणान्त हो चुका है। फिर भी इसको गङ्गाजल मिलना चाहिए।

(गङ्गाजल ओठों पर डालते है)

लक्ष्मीबाई—(कुछ चेत में आकर टूटे हुए स्वर में) ओम्… वा…सु…दे…वा…य…न…मः (और भी धीमे स्वर में)…द…ह…ति…नै…य…म्…पा…व…क.।

(वे ज़रा सा हिलती है। उनका प्राणान्त होता है)

रामचन्द्र – (कांपते हुए कंठ से) हाय, झांसी का सूर्य अस्त हो गया !

(दामोदर रोता है। रघुनाथसिंह बिलखता है)

बाबा गङ्गादास—प्रकाश अनन्त है। वह कण कण को भासमान कर रहा है। झांसी की रानी के सिधार जाने को अस्त होना मत कहो। वह अस्त नहीं हुई, अमर हो गई है। कायरपन को छोड़ो। इनके शवों का तुरन्त दाह करो। अंग्रेज़ इनकी खोज में आरहे होंगे।

रामचन्द्र—घास की गञ्जी से दाह नहीं हो सकेगा, महाराज । हा ! झांसी की रानी के दाह के लिए आज लकड़ी भी सुलभ नहीं । गञ्जी की घास तो इनके शवों को झुलसा भर देगी । सवेरे शत्रु इनके अधजले शरीरों को देखेंगे, हँसेंगे और शायद कहीं फेक देंगे ।

बाबा गङ्गादास—(अपनी कुटिया की ओर देखकर) इसको उधेड़ डालो । आरम्भ करो । शीघ्र ।

(बाबा अपनी तूम्बी, चटाई, और गीता की पुस्तक बाहर निकाल लाते हैं । वे लोग बाबा की कुटी उधेड़ कर लकड़ी इकट्ठी करके नेपथ्य में ले जाते हैं । लकड़ी इकट्ठी कर लेने के बाद वे दोनों एक एक करके दोनों शवों को उठा ले जाते हैं । दामोदरराव उनके साथ जाता है । नेपथ्य में चिता तैयार करके अग्नि संस्कार करते हैं । फिर लौट आते हैं । तब तक बाबा गङ्गादास ध्यान मग्न रहते हैं)

रघुनाथसिंह—महारानी साहब का कण्ठा मृत सिपाहियों के घरवालों को बांट देना या उसका चाहे जो कुछ करना । दामोदरराव को सावधानी के साथ लेकर तुरन्त दक्षिण की ओर जाना और उनकी आज्ञा का पालन करना । यह उनका चिन्ह है ।

देशमुख— तुम यहां क्या करोगे ?

रघुनाथसिंह— मैं ? मैं बन्दूकें भरके कहीं जा बैठता हूँ । जब तक शव बिलकुल भस्म न हो जायंगे मैं शत्रुओं को बन्दूक़ की मार से भगाता रहूँगा—और यहीं समाप्त हो जाऊँगा ।

(रामचन्द्र देशमुख दामोदरराव को लेकर जाता है)

रघुनाथसिंह—(गुलमुहम्मद से) आप क्या करेंगे ? आप भी जाइए ।

गुलमुहम्मद—अम कहां जायगा ? यह अमारा मुलक है । (चिता की ओर संकेत करके) यह अमारा मालिक है । अम फक़ीर होजायगा

और इनके हड्डी पर चबूतरा बांधकर रखवाली करेगा। उस पर फूल चढ़ाता रहेगा।

रघुनाथसिंह—हूँ। अच्छा।

बाबा गङ्गादास—ओम् शान्ति, शान्ति, शान्ति!

(तीनों आकाश की ओर आंखें करते हैं)

(नेपथ्य में शोर होता है—'झांसी की रानी कहां है!' किसी के कण्ठ से निकलता है—'वही सबसे श्रेष्ठ और सबसे अधिक वीर थी।)

('अमर रहे झांसी की रानी' के साथ यवनिका धीरे धीरे गिरती है)

❀ इति ❀